

درېم چاپ

له نویو زیادتونو سره

زُبْدَةُ الْمَسْئَلِ پښتو

- دويم فصل: داخستلو او خرڅولو د مسائلو پيژندنه
- اول فصل: د اسلامي اقتصاد د اساساتو لنډه پيژندنه
- درېم فصل: د شرکت پيژندنه
- پنځم فصل: د اجاری پيژندنه
- شپږم فصل: د سود پيژندنه
- خلورم فصل: د مضاربت پيژندنه
- اووم فصل: د اسلامي اقتصاد په ارتباط څلورپيشت احاديث

من تالیفات

الْفَاضِلُ الشَّيْخُ الْجَلِيلُ لِعَالِمِ التَّيْبِلِ لِعَالَمِهِ
الدَّكْتُورُ أَبُو مُحَمَّدٍ كَالِ الرَّجْمَنِ الْارِيؤُوتِيُّ الْحَقَّانِي
المُهَاجِرُ الْمَدِينِيُّ كَامَتٌ فَيُضَدُّ الْجَارِي

ناشر

مکتبہ مکتبہ

کامی کچه بکه ضلع منگور ۰۳۳۲۱۸۷۵۶۵۰



دور قاری

محبیب الرحمن مدنی

پيڻي خو هسي يو رواج دي د ثواب پکي څه نشته
زما په جنازه کي دې تقسيم شي ځکه بونه

﴿ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ﴾

رحماني کتابتون

د ځوانانو د ذهنونو روزنتون !



يادونه : په ټليگرام کي رحماني کتابتون په سرچ 

سره هم پيدا کولای شئ که ئې په انگلسي سرچ

کړئ يا هم پښتو ملگرو !



زبدة المسائل

(دریم چاپ)

له نویوزیادتونوسره

اول فصل: داسلامی اقتصاد داساساتولنه ه پیژندنه

دوهم فصل: داخستلواوخرخول دمائلو پیژندنه

دریم فصل: دشرکت پیژندنه

خلورم فصل: دمضاربت پیژندنه

پنجم فصل: داجاری پیژندنه

شپیرم فصل: دسود پیژندنه

اووم فصل: داسلامی اقتصادپه ارتباط خلوبنست (۴۰) احادیث

مؤلف

ابومحمد مولوی گل الرحمن حقانی المهاجر مدنی

ناشر

مکتبه مدنیة کاهی کچه پکه هنگو

۰۳۳۲۱۸۷۵۶۵۰



دکتاب نوم : زبدۃ المسائل
مؤلف نوم : ابو محمد مولوي گل الرحمن حقانی المهاجر
مدنی مدظلہ عالی
کمپوزنگ چاری : ابو محبوب الحاج مولوی فضل الرحمن فضلی

زیراہتمام : ابو عابد الحاج قاری مجیب الرحمن مدنی
تعداد : (۱۰۰۰)
تعداد صفحات : (۱۵۹)
دریم چاپ : له نویوزیادتونوسره

دچاپ کال :- ۱۸ | شوال | ۱۴۳۵ھ | ق/الموافق ۱۵/۸/۲۰۱۴ء

ناشر:

مکتبه مدانیة کاهی کچہ پکہ هنگو، مکتبه فاروقیہ، محلہ جنگی پشاور،

(خوشخبري)

محترم و مدرسینو او متعلمینو!
په دغه زبدۃ المسائل رساله
کی د فقهی کتابونو کتاب البیوع
او خصوصاً د آخري هدايو مغلوق
مواضع حل شويدي ستاسی ترینه
په آسانی سره استفاده کوليشي.
فضل الرحمن فضلی عفی عنه
الباری

﴿بسم الله الرحمن الرحيم﴾

- ﴿فهرست﴾ (۱)
- ﴿تقریظات﴾ (ط)
- ﴿سریزه﴾ (۱)
- ﴿اول فصل: داسلامي اقتصاد داساساتولنده پيژندنه﴾ (۲)
- ﴿اول بحث: داسلامي اقتصاد اهميت﴾ (۲)
- ﴿دوهم بحث: دبيعی پيژندنه﴾ (۳)
- الف: - دبيعی لغوي معنی: (۳)
- ب: - دبيعی اصطلاحی معنی: (۴)
- ج: - دبيعی اصطلاحات: (۴)
- ﴿دریم بحث: دبيعی اقسام﴾ (۵)
- الف: - دبدلینو په اعتبارسره دبيعی څلور اقسام دي: (۵)
- ب: دبدل واحدیعی درویی په اعتبارسره هم دبيعی څلور اقسام دي: (۶)
- ج: - دحکم په اعتبارسره دبيعی څلور اقسام دي: (۷)
- ﴿څلورم بحث: دبيعی شرائط﴾ (۸)
- الف: - دانعقاد دبيعی شرائط: (۸)
- ب: - دصحت دبيعی شرائط: (۹)
- ﴿پنځم بحث: دبيعی حکم﴾ (۱۰)
- ﴿شپږم بحث: دبيعی محل﴾ (۱۰)
- ﴿اووم بحث: دبيعی رکن﴾ (۱۰)
- ﴿دوهم فصل: داخستلواوخرخول دمسانلو پيژندنه﴾ (۱۰)
- ﴿اول بحث: داخستلواوخرخولو شرطونه﴾ (۱۰)
- الف: - داخستونکي اوخرخونکي داقوالو تحقيق: (۱۰)
- ب: - دمبيعی اوقیمت تاکل: (۱۱)
- ج: - دمجلس خيار اندازه: (۱۲)

فهرس المحتويات	ب	زبدة المسائل
(۱۳).....	د: - ديمى تعاطى حكم:
(۱۳).....	ه: - ديمى تعين كولو حكم:
(۱۴).....	و: - ديمى قيمت وركولو حكم:
(۱۴).....	ز: - دنقدو، نسيه اودقسطو په صورت كى ديمى حكم:
(۱۵).....	﴿دوهم بحث: دغلى داني داخستلو او خرخول شرعى طريقى﴾
(۱۵).....	الف: - ديمانان او وزن كولو ترتيب شرعى حكم:
(۱۶).....	ب: - دغلى داني تخمنى بيمى حكم:
(۱۸).....	﴿درېم بحث: درخت (كپرى) خرخولو او اخستلو دوي طريقى﴾
(۱۸).....	﴿خلورم بحث: دونو بوټو خرخولو او اخستلو شرعى طريقى﴾
(۱۸).....	الف: - دباغو او ميوو دخرخولو او اخستلو اووه صورتونه:
(۲۲).....	ب: - دزهرجنو بوټو دخرخولو او اخستلو حكم:
(۲۲).....	﴿پنځم بحث: دزمكو خرخولو او اخستلو شرعى طريقى﴾
(۲۲).....	الف: - دزمكى ديمى يومهم صورت:
(۲۳).....	ب: - دشاره زمكى دآبادي شرعى حكم:
(۲۳).....	ج: - دفضا دخرخولو او اخستلو شرعى حكم:
(۲۴).....	د: - دبيعانه وركولو حكم:
(۲۵).....	ه: - دفرضى شريك سره ديمى حكم:
(۲۵).....	﴿شپږم بحث: دخرخولو او اخستلو ممنوع صورتونه﴾
(۲۵).....	الف: - دلسو ممنوعو صورتونو توضيح:
(۲۹).....	ب: - غله شوى شى اخستلو حكم:
(۲۹).....	ج: - دافيمو هيروينو او حرامو دبيعه حكم:
(۳۰).....	د: - بيهه عينه حكم:
(۳۰).....	ه: - دقيمت په معامله كى شرعى لارښونى:
(۳۱).....	و: - داختكار شرعى حكم:
(۳۲).....	﴿اوم بحث: دحيوناتو خرخولو او اخستلو حكم﴾
(۳۲).....	الف: - درينمو چينجنى او دخزندو خرخولو او اخستلو حكم:
(۳۳).....	ب: - دپزو ميگو خرخولو او اخستلو شرعى طريقى:

- ج:- هغه شيان جي بغير دياڌولي نه به مبيعي کي داخل وي:..... (۳۳)
- د:- دحوض دماهيانورانيول خرڇولو جو حق:..... (۳۴)
- ه:- دحمل مبيعي جو حق:..... (۳۶)
- ز:- دخرمنو خرڇولو او اخستلو جو حق:..... (۳۶)
- ﴿ اتم بحث: دخرڇولو او اخستلو لپاره مهم هدايات ﴾ (۳۷)
- الف:- دمال مقوم توضيح:..... (۳۷)
- ب:- دمبيعي د موجوديت مهمه مسئله:..... (۳۸)
- ج:- دڪميشن كاربار ڪولو شرعي طريقه:..... (۳۹)
- د:- دنقدويه نسبت په فرض باندي په زياتو روپوسره مبيعي جو حق:..... (۴۱)
- ه:- غبن فاحش د صورت توضيح:..... (۴۲)
- ﴿ نهم بحث: دخيار شرط، خيار رؤيت، او خيار عيب حڪمونه ﴾ (۴۲)
- الف:- دخيار شرط مهم صورتونه:..... (۴۲)
- ب:- عقد ڪونڪو په خيار شرط کي د صلاحيت توضيح:..... (۴۳)
- ج:- دخيار رؤيت توضيح:..... (۴۴)
- د:- مبيعي لره و ڪيل او ياد قاصد ليدلو جو حق:..... (۴۵)
- ه:- درانده مبيعي جو حق:..... (۴۵)
- و:- دخيار عيب توضيح:..... (۴۶)
- ز:- دعيب نه د صلح شرعي طريقه:..... (۴۷)
- ح:- مالڪ د اجازت نه بغير ديوشي مبيعي جو حق:..... (۴۸)
- ط:- مبيعي کي د تصرف نه وروسته په پخواني عيب باندي دخبر ڪيدلو جو حق:..... (۴۹)
- ي:- مبيعه کي دننه د زياتي ددوه قسمونه توضيح:..... (۴۹)
- ڪ:- مبيعي کي دعيب معلوميدلو طريقه:..... (۵۱)
- ﴿ لسم بحث: په مسائلو متفرقو باندي تبصيره ﴾ (۵۲)
- الف:- دمسجد شريف زياتي سامان خرڇولو جو حق:..... (۵۲)
- ب:- حق تلفي ۽ صورت کي رشوت و رکول جو حق:..... (۵۳)
- ج:- د قبضي نه وړاندي د شيانو خرڇولو جو حق:..... (۵۳)
- د:- د فرض خرڇولو ناروا دي:..... (۵۴)

- هـ:- اقاله (رنگول ديمى) حكم:..... (۵۴)
- و:- اقاله د صورتونو توضيح:..... (۵۵)
- ز:- تول او پيمانه كى كمى كولوسزا:..... (۵۶)
- ح:- د كفارسره معامله:..... (۵۷)
- ط:- د پگړى شرعى حكم:..... (۵۷)
- ي:- ديمى سلم توضيح:..... (۵۷)
- ك:- د زكوة په اداكولو كښى به د موجوده بنا قيمت معتبروى نه دا خستالو قيمت: (۵۸)
- ل:- په تجارتي كرايه او ذاتى استعمال والا موټرو كښى د زكوة حكم:..... (۵۸)
- م:- زر ضمانت، د كرايه كورونو، او دوكانونو كښى د زكوة حكم:..... (۵۹)
- ن:- د غرانزونو اولرگو كښى د عشر حكم:..... (۶۰)
- س:- د اجارى مزارعت عارىت او د فصل خرخولو په صورت كښى د عشر حكم:..... (۶۱)
- ﴿ دريم فصل: د شركت پيژندنه ﴾..... (۶۲)
- ﴿ اول بحث: د شركت مشروعه توضيح ﴾..... (۶۲)
- ﴿ دوهم بحث: د شركت املاك احكام ﴾..... (۶۳)
- ﴿ دريم بحث: د شركت مفاوضه احكام ﴾..... (۶۳)
- الف:- شركت مفاوضه توضيح:..... (۶۳)
- ب:- شركت مفاوضه كى شريكانو لپاره هديات:..... (۶۴)
- ج:- د شركت مفاوضه شرايط:..... (۶۵)
- د:- شريك اختيارات:..... (۶۵)
- ﴿ خلورم بحث: د شركت عنان احكام ﴾..... (۶۵)
- الف:- د شركت عنان توضيح:..... (۶۵)
- ب:- شركت عنان كى شريكانو لپاره هديات:..... (۶۶)
- ج:- د شركت عنان د باطل كيدلو صورتونه:..... (۶۷)
- د:- د شريك مال د زكات اداكولو طريقه:..... (۶۸)
- ﴿ پنجم بحث: د شركت صناعاتو احكام ﴾..... (۶۹)
- الف:- د شركت صناعاتو توضيح:..... (۶۹)
- ب:- شركت صناعاتو د شريكانو مسؤليت:..... (۶۹)

- ﴿شهرم بحث: دشرکت وجوه احکام﴾ (٧٠)
- الف: - دشرکت وجوه توضیح: (٧٠)
- ب: - دشرکت فاسده صورتونه: (٧٠)
- ج: - دشرکت یوڅو خصوصي صورتونه: (٧١)
- د: - دشرکت یوناروا شرط توضیح: (٧٢)
- ه: - دشرکت دبی برکتی سبب: (٧٢)
- ﴿خلورم فصل: دمضاربت پیژندنه﴾ (٧٣)
- ﴿اول بحث: دمضاربت توضیح﴾ (٧٣)
- ﴿دوهم بحث: دمضاربت دصحت شرطونه﴾ (٧٤)
- الف: - دمضاربت ددریو شرطونه بیان: (٧٤)
- ب: - دمضاربت شرعی حیثیت: (٧٥)
- ج: - دمضاربت اختیارات: (٧٦)
- ﴿دریم بحث: دمضاربت حکم﴾ (٧٧)
- الف: - دمضاربت دهلاک شوي مال حکم: (٧٧)
- ب: - دمضاربت په مال کی دتصرف کولو حکم: (٧٧)
- ج: - مضارب بل چاته په مضاربت سره دمال ورکولو حکم: (٧٩)
- د: - قرض باندي دمضاربت کولو حکم: (٨٠)
- ه: - مضارب دمصرف او خرچی کولو حکم: (٨١)
- ﴿خلورم بحث: دمضارب اوصاحب المال د اختلاف حل طریقي﴾ (٨٢)
- الف: - جانبینود اختلاف دیومهم صورت حل: (٨٢)
- ب: - دمضارب معزول کیدلویو ضروري صورت حل: (٨٢)
- ﴿پنځم بحث: مضاربت د ختم کیدلو توضیح﴾ (٨٣)
- الف: - مضاربت دباطل کیدلو ترتیب: (٨٣)
- ب: - مضاربت دفسخ کیدلو ترتیب: (٨٤)
- ج: - د صاحب المال د مال حفاظت لپاره یوحيله: (٨٤)
- د: - دمضارب لپاره دتنخوا مقرورول حکم: (٨٥)
- ﴿پنځم فصل: داجاری پیژندنه﴾ (٨٥)

- (٨٥)..... ﴿اول بحث: دمشروعه اجارى توضيح﴾
- (٨٦)..... ﴿دوهم بحث: دمشروعه اجارى شرطونه﴾
- الف:- داجارى دصحت شرعى طريقى:..... (٨٦)
- ب:- داجارى مهمو شرطونو تشريح:..... (٨٧)
- ج:- داجارى مشروطه حكم:..... (٨٧)
- د:- مستاجر بل مستاجرته ديو شى په اجارى وركولو حكم:..... (٨٧)
- (٨٨)..... ﴿درېم بحث: دمكان اودوكان داجارى شرعى احكام﴾
- الف:- دمكان اودوكان اجارى كولو شرعى طريقه:..... (٨٨)
- ب:- دمستاجر صلاحت او اختيارات:..... (٨٩)
- ج:- دمكان او كورد كرايه يو خومهم صورتونه:..... (٨٩)
- د:- دمنقولى شى اجارى كولو حكم:..... (٩٠)
- ه:- دكان ياسراي داجارى شرعى طريقه:..... (٩١)
- و:- دحمام داجارى شرعى حكم:..... (٩١)
- (٩٢)..... ﴿خلورم بحث: دزمكو داجارى شرعى احكام﴾
- الف:- دزمكى داجارى دكروندى توضيح:..... (٩٢)
- ب:- زمكه دحاصلاتو دهلاك كيدلو حكم:..... (٩٢)
- ج:- دزمكى داجارى ديو اختلا فى صورت بيان:..... (٩٣)
- د:- دزمكى داجارى اوقفيز الطحان متعلق توضيح:..... (٩٣)
- ه:- دمنافعو په منافعو باندې داجارى كولو حكم:..... (٩٤)
- و:- اجاره فاسده كى دمزدورى يو خاص حكم:..... (٩٥)
- ز:- اجاره فاسده ديو عجيب صورت بيان:..... (٩٥)
- ح:- دزمكى داجارى عشر ادا كول حكم:..... (٩٥)
- (٩٥)..... ﴿پنځم بحث: دسپرتيا يابارورپولولپاره دسوارى داجارى شرعى احكام﴾
- الف:- دسپرتيا يابارورپولولپاره دسوارى كرايه اخيستلو شرائط:..... (٩٥)
- ب:- دسپرولو اوبارورپولولپاره دموترو داجارى كولو توضيح:..... (٩٦)
- ج:- داجاره كړى موټر دهلاك كيدلو دتاوان زموارى تشريح:..... (٩٧)
- د:- دمزدورى اوملازمت دتاوانونو دضامن دوه مهم صورتونه:..... (٩٧)

- هـ- مردوردمزدوري دادابني توضيح: (٩٩)
- و:- دمزدوري پرآره ددولت مسؤلت: (١٠٠)
- ز:- د ترلي دمزدوري پرآره اسلامي هديات: (١٠٠)
- ح:- دمزدوررانو فرائض اوزمواري: (١٠١)
- ط:- داجرت مثلي يومهم صورت: (١٠٢)
- ي:- ناروا ملازمت اومزدوري كولو گناه: (١٠٣)
- ك:- دكافر سره دمزدوري كول حكم: (١٠٣)
- ﴿ شهبم بحث: داجاري دفسخي كولو احكام ﴾ (١٠٤)
- الف:- موجر اومستاجر خيارات: (١٠٤)
- ب:- داجاري دفسخه كولو صورتونه: (١٠٥)
- ﴿ اوم بحث: دپني كارونوباندي اجرت اخستلو احكام ﴾ (١٠٥)
- الف:- دموضوع په اړه علمي خپرنه: (١٠٥)
- ب:- حج بدل باندي اجرت اخستلو حكم: (١٠٦)
- ج:- په تحكيم باندي داجرت وركولو اخستلو حكم: (١٠٦)
- د:- فتوي باندي داجرت اخستلو حكم: (١٠٧)
- هـ:- ايصال ثواب باندي داجرت اخستلو حكم: (١٠٧)
- و:- درخصتي او چتيانو تنخواه وركول او اخستل حكم: (١٠٧)
- ﴿ اتم بحث: دصنعت او كسبگري ددوه اصولو توضيح ﴾ (١٠٨)
- ﴿ نهم بحث: دمسانلو متفرقو بيان ﴾ (١٠٩)
- الف:- دداكترو او وكيل دفيس حكم: (١٠٩)
- ب:- دجرمانود روپو شرعي حيثت: (١٠٩)
- ج:- دورك شوي شي باندي دانعام وركولو حكم: (١١٠)
- د:- دكرائي به سامان اومكان كي دزكوة وركولو حكم: (١١١)
- هـ:- تنخواه كم كوة حسابولو حكم: (١١١)
- و:- دلال ته داجرت وركول حكم: (١١١)
- ز:- دمزدور داجرت په اداء كي خاصه توجه: (١١٢)
- ﴿ شهبم فصل: دسود پيژندنه ﴾ (١١٢)

- ﴿ اول بحث: دسود توضیح ﴾ (۱۱۲)
- ﴿ دوم بحث: دجاہلیت سود تشریح ﴾ (۱۱۳)
- ﴿ دریم بحث: د رہوا الفضل تشریح ﴾ (۱۱۴)
- ﴿ خلورم بحث: دتجارتی سود تشریح ﴾ (۱۱۴)
- ﴿ پنجم بحث: دزمکی دسود تشریح ﴾ (۱۱۶)
- الف:- زمکی دگرہنی سود حکم: (۱۱۶)
- ب:- دگروئی سود کولو حکم: (۱۱۶)
- ﴿ شپہرم بحث: دبانکی سود تشریح ﴾ (۱۱۸)
- الف:- بانکی سود معاملہ: (۱۱۸)
- ب:- بینک کی درویو جمع کولو حکم: (۱۱۸)
- ج:- دیو واقعی ضرورت پہ بنا بینک کی درویو اینسودلو حکم: (۱۱۹)
- د:- نوٹونہ (روپیو) دسود حکم: (۱۱۹)
- ہ:- دبینکی سود روپیو دلگولو خایونہ: (۱۱۹)
- و:- ضرورت مند لہرہ دسود اخستل حکم: (۱۲۰)
- ز:- دارالحرب کی دسود کولو حکم: (۱۲۱)
- ﴿ اووم بحث: دسود دعلتونو تشریح ﴾ (۱۲۱)
- الف:- دسود یوی جامعی قاعدی توضیح: (۱۲۱)
- ب:- دسود پہ معاملہ کی دصفت اعتبار نشتہ: (۱۲۲)
- ج:- دسود پہ معاملہ کی دعدد متقاربو حکم: (۱۲۲)
- د:- خر مگانو دمعاملی دیو صورت بیان: (۱۲۲)
- ہ:- دقمار اولاتری شرعی حکم: (۱۲۲)
- و:- دچت فنہا چولو حکم: (۱۲۳)
- ز:- دسود خواہونکی سرہ دشرکت حکم: (۱۲۴)
- ﴿ اووم فصل: داسلامی اقتصاد پہ ارتباط خلوبنیت (۴۰) احادیث ﴾ (۱۲۵)




زما گرانه وروره او گرانې خوري! 🌸

منم چې ته د کتاب مینوال / مینواله یې!.

ایا په خپل چاپیریال کې مو ملگري، کورنۍ، گاونډیان هم مطالعه کوي؟
 که مو ځواب هو وي خو ډیر ښه خپل مسؤلیت مو په په سمه توگه ادا کړی
 او سل ځله دې در باندي آفرین وي، خو که دغه کیسه برعکس وي او ستا
 ملگري، کورنۍ، گاونډیان او داسي نور، په مطالعه نوې روږدې نو زما په
 نظر ته خود خوا او مجرم یې!.

ځکه چې تا د کتاب لوستلو خوند څکلی، نو تا باید نور خلک هم د کتاب
 له دې نا آشنا خوند سره بلا کړي وای، نوراشه اوس هم نده نا وخته راشه
 اوس یو ځای کتاب لوستلو ته خلک وهڅوو!.
 تر څو آینده نسل مو تعلیم یافته او د نړۍ سیال وي!.

د سرلوړې اباد او سوکاله افغانستان په هپله!.

په درنښت | د رحمانی کتابتون اداره 

د رحمانی کتابتون سره د یو ځای کیدو لپاره له انټرنېټ سره وصل شی،
 او تاسو باید د ټلیگرام اکونټ ولری بیا په دغه لاندي [Join] بټنه
 باندي کلیک وکړئ، تر څو زموږ د کتابتون له کورنۍ سره یو ځای شی!.

JOIN

(تفریظ)

فضيلة الشيخ جامع المعقول والمنقول حامل الشريعة والطريقة شيخ
الحدیث بدارالعلوم منهاج العلوم نریاب محمد معلم دامت برکاته.

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على سيد الانبياء والمرسلين
وعلى اله واصحابه الطاهرين.

وبعد دا واقعیت ده چی مؤمنان دژوند په ټولو برخو کښی دالله له لوری
په ډیرو احکامو څخه مکلف دی خو متاسفانه چی ځینی خلق دمعاملاتو
اوسفر له احکام څخه لاتراوسه ناخبر پاتی دی او ځینی نور تکاسل کوی
نو زموږ ورور زبده الصلحاء قدوة المؤلفین العارف بالله واحکامه
مولانا گل الرحمن حقانی صاحب ډیورتینو موضوعاتوپه اړوندیوه مفصل
اومحققه رساله لیکلی چی مسمی ده په (زبده المسائل) سره، هر خاص
اوعام مسلمان څخه خواهش ده چی له دغی څخه استفاده اوکری
اوالله دی مؤلف لپاره دعقبی ذمیره وگرځوی.

ان الله لا يضيع اجر المحسنين

انا العبد الضعيف محمد معلم جان

خادم العلوم النبوية بجامعة منهاج العلوم نریاب هنگوی پاکستان

(تقريظ)

جامع المعقول والمنقول حاوي الاصول والفروع الشيخ حاجي محمد
شيخ الحديث بجامعة العلوم الاسلاميه زرگري.

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على سيد الانبياء والمرسلين
وآله وصحبه اجمعين

امابعد مولوى گل الرحمن حقاني دامت بركاتهم العاليه چه دڀيرو
كتابونو مؤلف ده هميشه دتاليف وظيفه ترسره كوى همدغه سلسله
كبنى يو كتاب دبيع اوشراء متعلق (زبده المسائل) تاليف اوچهاپ ته
وراندى كرده.

مافقير هم دهغه مطالعه وكړه ډيرپه زړه پورى اومفيد ده الله تعالى
دنورو كتابونوپه شان مقبوليت وركړى صدقه جاريه دورته وكړخوى.
آمين آمين لاارضى بواحدة اضم اليها الف آمينا.

اخوكم فى الله حاجي محمد عفى عنه (١٩، شعبان، ١٤٢٧ هـ ق)

(شعر)

چه ئی ولیکه کتاب دک دائر

خدایه ورباندو کپی ته نظر

خومره بنکلی مسائل پکی موجوددی

خوشبوئی ورنه حی لکه عنبر

هرخوک ئی که دزره په سترگو کوری

بیابه گرخی به دنیاکی بی خطر

چه په نامه دزبده المسائل سره مشهوردی

ده خلانده دتیارودی لکه سحر

هرچاچی ترمفیدگته وکره

منورپه شغلوی لکه لمر

مولوی صاحب گل الرحمن پدی تصنیف کی

ماطاهر درویش لیدلی دی گوهر

﴿ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴾

﴿ سريزه ﴾

الحمد لله الذي شرع الاسلام وسهل شرائعه وميز بين الحلال والحرام و الصلوة والسلام على سيد الانام الذي بين ما شرع الله لعباده في جميع شؤون الحياة والانصرام، وعلى آله هداة الانام، واصحابه مصايح الظلام، وعلى من درس كتاب الله وسنن رسوله عليه الصلاة والسلام واستنبط منهما الاحكام، ودونها في الكتب وسهلها للخواص والعوام.

پس وائی عاجز بنده گل الرحمن حقانی اریوبی غفرله الباری چی انسان د روح اومادی شخه جور شویده اودواره غوبنتنی اوتقضاوی لری، نود ده لپاره هغه مذهب دین اوقانون غوره اوبهتره وی کوم چی ددمادی اومعنوی غوبنتنی اوضروریات پوره کولای شی اوهغی ته خواب ورکړ لیشی، اسلام داسی یودین اوقانون دی چی دانسان مادی اومعنوی غوبنتنی اوضروریات ئی په نظر کی نیولی، اودهغی سره سم ئی هدیات ورکړی، ترخوانسان په یو اړخ کی کمئی اومشکل حس نکړی، بلکی دهر اړخ لپاره مکمل هدایات لری، مؤمن همه هغه وخت تکمیل ته رسیدلی شی چه په عباداتواو معاملاتو دواړوکی دالله تعالی اودرسول کریم ﷺ لاره او طریقه غوره اواختیار کړی، او په مکمل اوپوره ډول سره هغه پری ځان اوتولنه بانندی عملی کړی، او هغی ده عملی کولو لپاره خپل ټول توان په کارواچوی، نوپه دی معاملاتو کی یوهم اقتصا دی نظام دی چه اسلام ئی پوره لارښودنه کړیده، چه بل نظام ئی نظیرنشی وړاندی کولی، دهمدی خبری په نظر کی نیولی سره اسلامي فقهاؤ په خپلی لورې نظری سره دانسان ژوند دجزئیاتودومره احاطه کړیده چی نوره پوهان ئی متحیر کړیدی، لهداموژهم دخپلومخلصوورنپرو پر لاپسی غوبنتنی اونوی عصر حلاتودیته متوجی کړو، چی دمسنودو کتابونو په

حوالوسره دتجارتی مسائلویوه مجموعه ترتیب کړو، ترڅو چی پدی سره یو
خوادتجارووپریشانی ختم کړي شی اوبل خوانی دحلالی روزي په گتولوسره
دونیایي اواخروي سوکالی خوشحالی اونیک بختی په برخه شی پس دغه
مجموعه مو ﴿زبده المسائل﴾ سره مسمی کړه چه په سریزه او اووه فصلونو
باندي مشتمله ده البته په حواله کی مو صرف په ترجمه او خلاصه
اکتفاء کړیده لوجی دویري دا وژدوالی نه الله تعالی دی راته ددنیا او آخرت
نجات وسیله وگرځوي اوڅوک چی پکی سعی کوي هغی لپاره دکمیابی
وسيله کړي آمین بجاه سیدالمرسلین.

﴿اول فصل: داسلامي اقتصاد داساساتولنده پيژندنه﴾

﴿اول بحث: داسلامي اقتصاد اهميت﴾

محترموانسان که څه هم پدی نړی کی دالله جل جلاله دبنده کی لپاره پیدا
شویدی اودغه ددی انسان اصل مقصد دي، البته الله تعالی ده ته دا حساس
شعور اوخواهشاتو زبردست قوتونه هم ورکړی دی، اودول ډول اړتیاوي او
غوښتنې ئي هم دده له بدنه سره تړلی لکه خوراک څښاک نکاح اوداسی
نور ضروریات، اسلام ددواړولارو په مابین کی عدل اوبرابرتیا قائمه ، کړه
اوددی لپاره ئي ددین اومذهب عبادت او بندگی په معناکی فراخی راوستله،
انسانیت ته ئي دفطرت سره برابر او دژوند انقلابي تصور عطا کړه ، اسلام
واښی چی انسانی بدن دالله تعالی امانت دي، پدی کی دانسان خیانت نه
کوی دشریعت په حدودکی دي اوسي، یومسلمان که په بازارکی وي، که په
کارخانه کی وي ، که په دفترکی وي ، که په عدالت کی وي، اوکه پرسرک
په گرمی کی دخپل ضعیف موراوپلار او کمزورو بچیانودمړولولپاره خولي
تویوي په هرحال دي دحلالي روزي دحصول کوشش به کوي، اودالله تعالی
په رازق کیدو دي باورلري، نو هغه انسان دعبادت په حالت کی دي اود

دين په يوه کارکی مشغول دي. مشهور عالم علامه ماوردي رحمه الله ليکي چي په بنسټيزه توگه د کسب اوروزي گټلودري ذريعي دي، اول: زراعت، دوهم: تجارت، دريم: صنعت؛

پس پدي ذريعو کي کومه وسيله دروزي گټولپاره زياته غوره ده؟ علماو کراموپه خپل فکر سره ددي دټاکلو کوشش هم کړيدي، دامام شافعي رحمه الله تعالی په فکر تجارت ترټول زيات غوره دي پخپله دماوردي رحمه الله تعالی رايه ده چي دزاعت فضيلت زيات دي. (۱) اوامام بخاري رحمه الله تعالی داسي حديثونه يوځاي کړيدي چي په اسلام کي دتجارت، زراعت، او صنعت کسب ارزښت اودرسول الله صلی الله عليه وسلم په نظر کي دهغو شرف اوفضليت بيانوي. (بخاري کتاب البيوع باب کسب الرجل وعمله بيده). نوروزي په غوښتوکی دحلال او حرام پرحدودو قائم اوسيدل ارزښت لري، علامه ابن حجر رحمه الله تعالی هم دی اړخ ته اشاره کړی ده چي فرمائي، قد يختلف باختلاف الاحوال والاشخاص. (۲) يعنی دحالتواوخلقو دتوپير سره په احکامو کي توپير کيدلای شي، يعنی په مختلفو حالاتواوځايو کي دروزي گټلودذريعوپه ارزښت اوفضيلت کي توپير واقع کيږي. پدي ارتباط په دی کتاب کي به انشاء الله تعالی اهم ضروري مسائل نوېشته کړو. پس دلته دخوامورو پيژندل ضروري دی اول: دبیعه تعريف، دويم: دبیعه اقسام، دريم: دبیعه شرطونه، څلورم: دبیعه حکم، پنځم: دبیعه محل، شپږم: دبیعه رکن.

﴿ دوهم بحث: دبیعی پیژندنه ﴾

{ الف: - دبیعی لغوي معنی }

پس زده کړه داخبره: - چي لفظ دبیعی دقبیلې داضدادونه دی يعنی په اخستلو

^۱ عيني على البخاری ج ۶ ص ۱۸۶.

^۲ فتح الباری، ج ۴ ص ۳۰۴.

او خرڅولو دواړو کی استعمالیږی لکه خرنگه چه دشراء لفظ په دواړو کی استعمالیږی، په مشکلات خواهرزاده کی لیکلي دي- چی په حقیقت کی دلفت په اعتبار سره دادواړه لفظونه گویا دخرڅونکی او اخستونکی دواړو وپاره په طریقه اشتراک سره استعمالیږی، لیکن په عرف کی لفظ دبیعی دابائع سره مخصوص دي، لکه چی لفظ د شراء اشتراء او ابتیاع دمشتري سره مخصوص دي.

{ب:- دبیعی اصطلاحی معنی}

پس زده کړه دا خبره چی لفظ دشراء "اشتراء"، او ابتیاع دامشتري سره مخصوص دی، چی پدی کی دعلماء کرامو اختلاف ده ددوي څخه ددی مختلف تعریفونه منقول دی علامه طحاوی رحمه الله تعالی فرمائی چی بهتر تعریف هغه ده چی صاحب دکنز وغیره کړیدی، کوم چه دشیخ الاسلام رحمه الله تعالی نه منقول دی، او هغه دادی "هو مبادلة المال بالمال بالتراضی یعنی پخپل مینځ کی په رضامندی سره یو مال په بل مال سره بدلول دبیعی حقیقت دی، او درغبت مفهوم پخپله په مال کی داخل دی.

{ج:- دبیعی اصطلاحات}

پس زده کړه دا خبره چی لفظ دَعَقَدَ: معاملی ته وائی، او عَاقَدَ: معامله کوونکی معاملی ته وائی، او مَجَلَسَ عَقْدَ: هغه ته وائی چه کوم خای کی چه دَعَقَدَ معاملی کیري، او بَيَعَ: اخستلو او خرڅولو ته وائی، او عَقَدَ بَيَعَ: داخستلو او خرڅولو معاملی ته وائی، او بَائِعَ: خرڅونکی ته وائی، او مُشْتَرِيَ: اخستونکی ته وائی، پس بَائِعَ او مُشْتَرِيَ کی دلزامی ده چه دواړو به پوهه سمه جدار وي، او کم از کم دوکسان به وي، او مَبِيعَ: هغه شی ته وائی چه کوم خرڅیږي، پس مبیعه کی دلزامی ده چه هغه مال به وي، او په ملکیت کی به وي، او په قبضی کی به وي، او موجود به وي، او معلوم به وي، او په حواله

کولوبانندی به قادروی، اوئمن: هغه شی ته وائی چه دسامان اوسودا بدله کی چه اخستونکی کومی روی اویاکوم شی خرخونکی ته ورکوی دمعاملی په وخت کی، که دمارکیت نرخ سره مطابق وي او که مطابق نوي، پس ئمن کی دلازمی ده چه هغی مقدار به معلوم وي او وصف به ئی معلوم وي کچیری نسیه وي نووخت به ئی معلوم وي او شرعاً به مال وي، او غبن فاحش: هغه قیمت ته وائی چه دکوم یوتاجر سره درست نوي، بعض علماء فرمائی چه په سامان کی پنخه فیصده زیات، او حیواناتو کی لس فیصده زیات، اوزمکه کی شل فیصده زیات اخستل غبن فاحش دي، نوپدی صورت کی مشتری ته د واپس کولو اختیار شته، او مال: هغه مباح شی ته وائی چه هغه نه فائده اخستل جائزوي، ایجاب: هغه اولنی پیشکش ته وائی، او قبول: دا اولنی پیشکش نه وروسته ددوهم رضامندی ته وائی، پس ایجاب او قبول کی دلازمی ده چه دواړوبه په یو مجلس کی وي، اودواړه به ماضی صیغی وي، او قبول به دایجاب موافق وي، او قیمت: دکوم شی رائج نرخ، یابازاری ریت ته وائی، او حکم البیع: دینه وائی چه کله بیعه درست وي نوبائع ته پسی او روی حلالی وي اومشتری ته سامان حلال وي.

﴿ دریم بحث: ذبیعی اقسام ﴾

پس زده کړه دا خبره چې بیعه په دوه قسمه ده یوه دبدل په اعتبار سره اوبله دحکم په اعتبار سره. پس دبدل په اعتبار سره بیعه په دوه قسمه دی، یوه بیعه دبدلینو په اعتبار سره اوبله بیعه دبدل واحد په اعتبار سره دي.

{ الف: - دبدلینو په اعتبار سره دبیعی خلور اقسام دی }

﴿ ۱ ﴾ بیعه دعین بالعين ده چې دینه بیعه مقائضه هم وائی مثلاً یو سپری جامه "کپړه" ورکړی اوبل په بدله کی غله دانه ورکړی؛ گویا دادبیع هغه صورت دی کوم ته چه په عام عرف کی: تبادلہ دمال: وائی .

﴿۲﴾ بیعه ددین بالدین ده چې دپته بیعه صرف هم وائی داد نقد تبادلې په نقدسره کولیشی مثلاً یوسری دیوی افغانی نوټ ورکړی او بل سړی ورته په بدله کې دیوکلدار ورکړی گویا روپۍ ماتول یا دروپیۍ ماتې پیسې اخستل او ورکول دادبیعی صرف یوقسم دی.

﴿۳﴾ بیعه ددین بالعین ده چې دپته بیعه سلم هم وائی په کومه کې چه خرخونکی دخریدار نه دخه شی قیمت پیشگی یعنی مخکې واخلی، اوداښه مقرر کولیشی چه خریدارته به اشی په دومره مده یعنی مثلاً میاشت یا زیات اوکم کې براره وي.

﴿۴﴾ بیعه دعین بالعین ده دپته بیعه مطلق هم وائی پدی کې دیوشی بیعه دنقدو په عوض کولیشی مثلاً خرخونکی یومن غنم ورکړل او اخستونکی ددی دقیمت په طور پنځوس روپۍ ورکړی په عام طورسره دا قسم بیعه رائج دی او پدی دبیعی اطلاق کیدای شی.

{ب:- دبدل واحد یعنی دروپیۍ په اعتبارسره هم دبیعی خلور اقسام دي}

﴿۱﴾ بیعه مرابحه:- یعنی چه خرخونکی مبیعی لری دخپل اخستی قیمتې نه په نفعه باندي یو شی خرخه کړی.

﴿۲﴾ بیعه تولیه:- یعنی چه خرخونکی مبیعی لره نفع نه بغیر په هغه قیمت خرخوه کړی چه په کوم ئی اخستی وي.

﴿۳﴾ بیعه وضعیه:- یعنی چې خرخونکی مبیعی لره دهغه قیمت نه هم په کم قیمت خرخه کړی چه په کوم ئی اخستی وي.

﴿۴﴾ بیعه مساومه:- یعنی خرخونکی او خریدار پخپل مینځ کې په رضامندی سره دخه شی خرید فروش چه زړه یې غواړی په هغه قیمت ئی بیعه اوکړی پدیکی دخرخونکی دقیمت خریدیه هیڅ لحاظ نوي.

{ج: دحکم په اعتبار سره دبیعی خلور اقسام دي}

﴿۱﴾ بیعه نافذه او صحیحه: یعنی چی په طرفینو کی مال وی، او عاقدین د بیعه عاقلان هم وی، دغه دواړه کسان بیع یا اصاله او کړی او بی وکاله او کړی او بی ولایه او کړی په کومه بیعه کی چه داد دری واره شیان او موندی شی هغه بیعه به بالکل نافذه او صحیحه وی؛ پس د اصاله مطلب داچه دمیعی مالک وی، او وکاله مطلب داچه د مالک طرفه دبیع اجازه ورته شوی وی، او ولایه مطلب داچه دمیعی یاددی قیمت داصلی مالک والی وی.

﴿۲﴾ بیعه فاسده: - یعنی کومه بیعه چی د نفس معاملی په اعتبار سره خو صحیح وی مگر دغه خاص وجه په بنا بانندی صحیح نوي، یعنی مفیده دملک نوی بلکه دقبضی په سبب سره بیا مفیده ده ملک وی، بیا په بیعه فاسده کی اسباب دفساد مختلف دي، لکه مثلاً په میعی یا په روپی کی دداسی جهالت کیدل چه په کی جنجال او جنک جوړیږي، او یا دمیعی تسلیم کیدلو څخه عاجز کیدل، او یا د وکه پکی کول، او یا په خلاف دمقتضی د عقد شرط پکی لگول، او یا د مالیت نه کیدل، او یا تقوم (قیمتی) نه کیدل او داسی نوره.

﴿۳﴾ بیعه باطله: - یعنی کومه چه نه په اعتبار داصل سره صحیح وی او نه په اعتبار دوصف سره صحیح وی دا قسم بیعه بالکل مفید دملک نوی لکه دشرابو، خنزیر او دآزاد وغیره بیعه چی باطله ده.

﴿۴﴾ بیعه موقوفه: - یعنی کومه بیعه کی چی یوسری دچا څه شی لره دده د اجازت یا ولایت نه بغیر خرڅ کړی، ددی بیعی حکم دادي چه ترڅو پوري چی داصلی مالک رضامندی او اجازت حاصل نشی ترهغی وخته پوري دا بیعه صحیح کیدلی نشی لکه دغه لاندینی اقسام: اول: دکوچنی ممنوع بیعه چی دبیعی اجازه ورته نوي شوي. دوهم: دکوچنی غیر رشید بیعه کوم چی دتصرف نه په ښه شان واقف نوي. دریم: دمرهون بیعه، څلورم: دمستاجر بیعه.

پنځم: دمړتد بيهه. شپږم: بيهه بالرغم په کوم شي چه دهغه رويي ليکلي شويدي. اوم: هغه بيهه په کوم کي چه خيارمجلس وي. اتم: دقبضي نه پس دخر خونکي بيع لره داخستونکي نه علاوه دبل په لاس خرخول. نهم: دمالک مفسوب شي لره خرخول. لسم: دهغه روييه عوض خرخول دکوم په عوض کښي چه فلاني خرخ کړيدي هرکله چه اخستونکي ته دغه معلومه نوي. يولسم: دهغه زمکي بيع کومه چه دبل سره په برخه کي وي. دولسم: دهغه بيبي په کومه کي چه ددري ورځونه زيات خياروي. ديرلسم: دامخلوط مال نه ديوشريک خپله حصه خرخول. خورلسم: دهغي شي خرخول دکوم په تسليم کي چه ضرروي. پنځلسم: دمريض سړي دخپل مال نه څه معين شي لره په بعض وارثانوخرخول. شپږلسم: دوارث داسي ترکه (پاتي شوي شي) خرخول کومه چه مستفرقه بالدين وي يعني چه مکمله تر قرض لاندي وي. اولسم: دمعتوه يعني کم عقل بيهه. اتلسم: مدهوش "بي هوشه" بيهه.

﴿ څلورم بحث: دبيعي شرائط ﴾

پس زده کړه داخبره چي دانعقاد، صحت، نفاذ، اولزوم په لحاظ سره دبيعي دپاره ډير شرطونه دي کوم چي صاحب دبحر په تفصيل سره بيان کړيدي موژني دلته په اختصار سره هغه ليکو.

{ الف: - دانعقاد دبيعي شرائط }

{ پس پوهه شه! چي دبيعي ترلو لپاره څلور قسمه شرطونه دي }

اول شرط داچي په عاقدينو کښي ئي کيدل ضروري وي، نوبيعه کونکي لپاره دوه شرطونه دي - اول: عاقل کيدل يعني دليونې اوغيرعاقل بچي بيهه به صحيح نوي. دوهم: متعدد کيدل يعني ددواړو طرفه د وکیل بيهه به صحيح نوي البته د پلار اودده وصي اوقاضي په صورت کي به يي بيهه ترل صحيح وي.

دوهم شرط داچي د نفس عقد دپاره د لازمي دی چه دايجاب او قبول موافق به وي، یعنی خرڅونکی چه دمیعی ايجاب دکوم شی په عوض کی کړیډي، اخستونکی به دغه لره په همدغی عوض کی قبوله کړي، کچیري د دی خلاف نی او کړنو دتفرق دصفقه په وجه سره به بیعه منعقده "تړلي" نوی. دریم شرط داچي دمکان دعقد دپاره شرط دادی چه مجلس به متحدوی که مجلس مختلف وو نوبیعه به منعقده "تړلي" نوی.

خلورم شرط: - دم عقود علیه دپاره شپږ شرطونه دی (۱) موجود کیدل (۲) مال کیدل (۳) قیمتی کیدل (۴) پخپله مملوک کیدل (۵) دخرڅونکی مالک کیدل (فیما بیعه لنفسه) (۶) مقدورالتسليم کیدل.

پنځم شرط: - دبیعی نفاذ لپاره دوه شرطونه دی (۱) دمالک ملک یا ولایت کیدل (۲) په مبيع کی دخرڅونکی نه علاوه دبل چا حق نه کیدل.

{ب: - دصحت دبیعی شرائط}

پس زده کړه دا خبره چي شرطونه دصحت دبیعی په دوه قسمه دی، یو شرطونه عامه، اوبل شرطونه خاصه، پس شروط عامه دغه لاندني دی (۱) موقت نه کیدل. (۲) دمیعی معلوم کیدل. (۳) درویی (روپیو) معلوم کیدل. (۴) دمفسد عقد شرائطونه خالی کیدل. (۵) دبیع نه دڅه فائدی حاصلیدل.

او شروط خاصه دادی (۱) داخستونکی منقول اودین په بیعه کی دقبضی کیدل. (۲) په مبادله قولیه کی دبدل مسمی کیدل. (۳) په اموال ربویه کی دبدلینوپه مینځ دمماثلث کیدل. (۴) دشبیه ربوا نه خالی کیدل. (۵) په بیع سلم کی دشروطو دسلم موندلی کیدل. (۶) په بیع صرف کی منځکی دجدا کیدونه دقبضی کیدل. (۷) دبیع په خیاره سره اشتراک په وضعه کی درویی اول معلوم کیدل. اودانعقادونفاذ نه پس شرط دلزوم دادی چه دخیار شرط، خیارعیب وغیره شرطونه حیاتو حنخه به خال وی.

﴿ پنجم بحث: دبیعی حکم ﴾

پس زده کړه داخبره چي دبیعی حکم دادی چه داخستونکي دپاره په میبعي کی اودخرخونکی دپاره په روی کی دملک ثابتیدل دی، اوداعبارت دی دقدرت نه په تصرفاتو بانندی په محل کی شرعاً، الا لمانع (یعنی مگرچه مانع موجودوی)

﴿ شپږم بحث: دبیعی محل ﴾

پس زده کړه داخبره چي دبیعی محل به مال متقوم وی.

﴿ اووم بحث: دبیعی رکن ﴾

پس زده کړه داخبره چي رکن دبیعی مبادله دشی مرغوب دی په شی مرغوب سره. کوم چه کله په ذریعه دقول (وینا) سره وی اوکله په ذریعی دفعل سره وی، پس که ذریعه دقول وه نودیته دفقهاو په عرف کی ایجاب اوقبول وائی اوکه په ذریعه دفعل سره وی نودینه په تعاطی سره تعبیر کولی شي اوپدی طریقہ سره چه کوم بیعه وشي دیته مراوضیه وائی (یعنی دجانینو درضامنندی بیع). والله تعالی اعلم بالصواب.

﴿ دوهم فصل: داخستلواوخرخول دمساثلو پیژندنه ﴾

﴿ اول بحث: داخستلواوخرخولو شرطونه ﴾

﴿ الف: - داخستونکی اوخرخونکی داقلو تحقیق ﴾

مسئله: - دمعاملی کونکو دجانب نه دایجاب اوقبول دمتحقق کیدونه پس به بیعه ترلی کیږی، یعنی رومی کلام ته ایجاب اوروستونی کلام ته قبول وائی، کله چی وی دغه دواړه (ایجاب اوقبول) په لفظ دماضی یادحال سره، اویا یو دماضی اوبل دحال وی، لهذا هغه مضارع چی په سین اوسوف سره راغلي وی پدی سره بیع نه صحیح کیږی البته هغه صیغه دامر چه په حال داله وه لکه مثلاًخرخونکی اوویل (خُذْ بكذا) یعنی واخله او اخستونکی ورته اوویل

(أَخَذْتَهُ) یعنی اخیسی می ده نوپدی سره هم بیعه صحیح کپری مگر په
طریقه د اقتضاء سره. (۱)

{ب:- دمیی اوقیمت تاکل}

مسئله:- دلازمی دي چي په بیعه کی به سامان اوقیمت دواړه په ښه توګه
تاکل کیدلي شي. (کمافی صحیح المسلم کتاب البیوع باب تحریم بیع
صبرة التمر المجهولة القدر بتمر). کچیری سامان پور(قرض) وي باید دسمان
جنس، اودهغه صفتونه، درانیولو وخت، خای اوموده داتول به په پوره ډول
تاکل کیږي. (۲) اوهمداډول ددي اجازه هم شرعاً نه ده ورکړل شوي
دخرځلاوسامان دي ناټکلی اوشکمن پریښودل شي. (۳) اوهمدا ډول که
دمختلفو سکواوکرنسی یوملک کی یورنگه رواج وي په قیمت کی
دسکوقسم تاکل هم لازمی دي. (۴) اوهمداډول دخریداو فروش معامله
ترهغه پوري مکمله نه بلل کیږي ترڅوچی خریدار مال ونه ګوري، دپته
دقهي اصطلاح کی خياررؤیت ورته وائي تردي حده چی که یوڅوک دیوه
شي عیب پټ کړی، خریدار په خبرنه کړی وروسته خریدار په هغه عیب خبر
شي، خریدار دشریعت له رویه دهغه شي بیرته ورکولو اونه ورکولو اختیار
لري، دپته دقهي په اصطلاح کی خيارعیب وائي، اوهمدرنگه دمعاملي ګټه
اوتوان په ښه توګه ځانته دمعلومولولپاره ددریوورڅوپوری خصوصی مهلت
ورکړل شويدي، دمهلت سوداګراو خریدار دواړوته شرعاً حاصل دي، دپته
دقهي په اصطلاح کی خيار شرط ویل کیږي. (کمافی بحرالرائق کتاب البیوع).

۱ ملخصاً فتاوی عالمگیری، ج ۳ ص ۴۰.

۲ هدایه جلد ۲ کتاب البیوع باب المسلم).

۳ هدایه ۳ ص ۱۱).

۴ الفتاوی الهندیه، ج ۳ ص ۱۲۲).

{ج: - دمجلس خیار اندازه}

مسئله: - دایجاب او قبول متحقق کیدلونه پس بیعه لازمه شی او په معاملی کونکو کی چاته هم دخیار عیب او خیار روئیت (لیدل) نه علاوه دبیعی ماتولولو اختیار نوی، ځکه چه په تملیکاتو کی په اختلاف دمجلس سره اختیار دقبولو ختمیږی. پس دمجلس اختلاف په هر هغه عمل سره ثابتیږی کوم چه په اعراض بانندی دال وی، لکه اودریدل، خوړل ځکل، خبری کول، مونیخ شروع کول وغیره: - البته یوقه ماری نیمه خوړل یا دهغی لوخی نه غږپ نیم اوبه ځکل کوم چه دایجاب په وخت دده په لاس کی وه، یا فرض مونیخ پوره کول کوم چی نی شروع کړی وه، پدی سره مجلس نه بدلیژی اختیار یی باقی ده که هغه شی ترینه اخلي او که نه یی اخلي دده اختیار شته. (۱)

امام مالک رحمه الله تعالی هم ددی قائل دی، البته دامام شافعی وامام احمد رحمهما الله تعالی په نزد هریوته دبقاء دمجلسه پوری اختیار شته ځکه چی په حدیث شریف کی دی (المتبائعان بالخیار مالم یترقا. (رواه ائمه سته و ابو داود رحمهم الله تعالی وغیرهم) یعنی چه خر خونکی او اخستونکی مختاردی تر څو چه دوی جدا شوی نوی، لدینه جواب دادی چه پدیکی تفریق دابدانویات تفریق دمجلس مرادندی بلکه تفریق داقوالو مراددی یعنی دایجاب نه پس دبل داوئیل چه زه نی نه اخلم یادقبولونه وړاندی دموجب داوئیل چه زه نی نه اخلم، وجه یی داده چه حدیث شریف کی ورته متبائعان وئیلی شوی نه متعاقدان (۲)

مسئله: - اخستونکی لره روادی چه خر خونکی لره په قیمت کی څه اضافه او کړی، یعنی څه روپی زیاتی ورکړی، او خر خونکی لره هم داروا دی چه اخستونکی ته دسودا څخه څه

^۱ هدایه، ج ۳ ص ۲۵ (مع الزیاده).

^۲ هدایه، ج ۳ ص ۲۵ (مع الزیاده).

قدری زیاته شی ورکړی، یا ورته په قیمت کی څه کمی وکړی. (۱)

{د: - دبیعی تعاطی حکم}

مسئله: - په فعل دتعاطی سره بیعه ترلی کیژی میعه عمده وی که خرابه وی، دا بیعه صحیح ده، ځکه چی دمعاملې کونکونه د یو اود بل رضامندی پدی بیعی سره موجوده ده، دتعاطی مطلب دادی چه دلفظی ایجاب اوقبول نه بغیر خرڅونکی اخستونکی لره میعه ورکړی، او اخستونکی خرڅونکی ته روی ورکړی. (۲)

{ه: - دمیعی تعین کولو حکم}

مسئله: - که میعه اوروی غیر مشاروو (یعنی اشاره ورته نوی شوی) نودمیعی مقدار او وصف معلومول ضروری دی، او همدارنگه درویو وصف معلومول هم ضروری دی، که داسی نوی نو بیعه به صحیح نوی، ځکه چه بیعی کی تسلیم اوتسلم ضروری دی، اود مقدار او وصف نه معلومیدل باعث دنزاع (جنگ) دی، البته که میعی اورویو طرفته اشاره شوی وه نو بیانی معلومول ضروری ندی، ځکه چی پدی صورت کی دنزاع ویره نیشته، پس که خرڅونکی اخستونکی ته داسی اروائی چه دغنمودا پیری می ددومره رویو په عرض کی در باندي خرڅ کړله، کوم شی چه ستاپه لاس کی موجود دی، او اخستونکی ئی قبوله کړی چه سمده ده نودا بیع درسته ده، لیکن اموال ربو یه ددینه مستثنی دی، پس که دراهم، دنانیر، غنم اوربشی په خپل جنس سره خرڅولی شی اومقدار ئی معلوم نوی نودابه جائز نوی، همدارنگه دامام صاحب په نزدیقه بیعه سلم کی دا رأس المال مقدار معلومیدل هم شرط دی. (۳)

^۱ مختصر القدوری، ص ۹۸.

^۲ عالمگیری، ج ۳ ص ۹.

^۳ فتاوی الشامیه ج ۴ ص ۲۴.

{ و: - دبیعی قیمت ورکولو حکم }

مسئله: - که یوچاسامان په دراهمو اودنالیرو بانندی خرڅ کړو نو اول به یو
قیمت ورکولیشی، چه په روپو کی دخرڅونکی حق معین شی، ځکه چی په
دبیعی کی داخرڅونکی حق محض په عقد (ایجاب اوقبول) سره متعین شو
یدی، لیکن په روپو کی دخرڅونکی حق بغیر دقبضی څخه نه متعین کیږی.
ځکه چی په ائمانو(روپو) کی تعین نوی، تردی چی که په یومعینه اشرفی
بانندی څه شی واخیستلی شی، نود هغی په ځای بله اشرفی هم ورکولی شی،
پس حاصل داچی هرکله چه خرڅونکی وربانندی قبضه اوکړی نوددواړو حق
ثابت شی، اومساوات به یی متحقق شی، او کچیری سامان ئی دسامان په
عوض کی خرڅ کړو، یاروپو یی دروپوپه عوض کی خرڅ کړی نو ددواړو
تبدلی به شرعاً په یو ځای کولی شی ځکه چه دسامان په صورت کی دواړه
معین دی اودروپو په صورت کی دواړه غیر معین وی، نویولره وړی
ورکول لازماً په بل بانندی دترجیح بلا مرجح ده چی داروا ندي. (۱)

{ ز: - دنقدو، نسیه اودقسطو په صورت کی دبیعی حکم }

مسئله: - بیعه په نقدو روپو او په نسیه دواړوسره صحیح ده، لیکن د نسیه
کیدو په صورت کی دمدی (نیت) معلومول ضروری دی، چه ورسته دجنگی
نوبت رنه شی. (۲) پس که مثلا یوتن یو موټر، سوارې اویایوبل شی مثلا په
یولاک نقد روپو بانندی ورکوی، اوپه یونیم لاک ئی دقرضی اوقسطو په
صورت کی ورکوی، نو عامو فقهاء کراموددی په جواز تصریح کړیدی
اوپدی کی سودا هم نشته ځکه چه داخل دوجی څخه زیادت په روپو بلا
شبه دروست دی، البته دنقدو او قرض فیصله به مبهمه نوی،

^۱ هدایه، ج ۴ ص ۳۴.

^۲ مختصر القدری ص (۸۸).

ځکه چه دجهالت رویی دوجی نه بیعه فاسده نه شی. (۱)

مسئله: - که چا په عقد دبیعی کی رویی مطلق او وئیل یعنی دروپییر صرف مقدار بی بیان کړو، مثلاً چی مادلسور وپوپه عوض سره دغه شی واخستو، او وصف ئی بیان نه کړه چه درهم، یا کلداری او یا الفعالی دی، نو په کوم بیار کی چه بیعه شوی ده، د هغه ځای چه کوم رویی زیاتی رائجی وی دغلی روییو په اعتبار سره به بیعه منعقده وی، پس غلبه درواج او عرف لره به په منزله دبیان مقرر کولی شی، او که هغه ځای کی مختلف نقود رائج وو، او په مالیت کی سره مختلف وو، یعنی نرخ ئی کم زیات وه، او ددوی بیان ئی ونکړو نوبیعه به فاسده وی، ځکه چه داجهالت باعث دنزاع دی. (۲)

﴿ دوهم بحث: دغلی دانی داخستلو او خرڅول شرعی طریقی ﴾

{الف: - دپیمانہ او وزن کولو ترتیب شرعی حکم}

مسئله: - که غلی دانی لره ئی ددی دمخالف جنس په عوض کی خرڅی کړی، مثلاً غنم بی په وربشو باندي خرڅ کړل، نو دادی اندازه لکول به په داسی لوخی سره پیمانہ کول چی مقدار ئی معلوم وی او یا بی په داسی تیگه (کته) تلل چی وزن ئی معلوم نوی نو په دواړو صورتو کی بیعه صحیح ده، ځکه چه دنبی صلی الله علیه وسلم ارشاد کرامی دی چه کله دواړه جنسونه مختلف وی نوڅنگه بی چه غواړی خرڅوی. (رواه الجماعة الاالبخاری).

مگر دصحت دپاره بی څولاندي شرطونه دی، (۱) مبیعه به ممیز او مشار وی داندازی په صورت کی. (۲) لوخی به نه غتیری اونه به کچ کیری، یعنی دلر کی او یا د اوسپنی لوخی به وی، که دزنیل یا خرجی وغیره پشان لوینی وه نو بیعه به جائز نوی. البته داوبو په مشکونو کی درواج او عرف په وجه سره

^۱ هدایه کتاب المراجعة ج ۳ ص ۷۶.

^۲ الفقه الحنفی وادلته، ج ۲ ص ۱۹.

بیعه جائز دی. (۳) په تیگه (گڼه) کی به د ماتیدو احتمال لوی. (۴) د بیع مسلم راس المال به نوی، ځکه چه ددی مقدار معلومیدل ضروری دی. لیکن که غلی دانه لره دخپل جنس په عوض سره خرڅوی مثلاً غنمو دغنمو په عوض سره خرڅوی نو په اټکل سره خرڅول به ئی جائز نوی، ځکه چه پدی صورت کی دربوا (سود) احتمال دی. (۱)

مسئله: - دغنموبیعه په وگوکی، اودلوبیاو بیعه ددوی په پلوکی، دغه شان وریژو او کونخلوبیعه ددوی په پوتکی کی داحنافوپه نزد جائز ده. امام شافعی رحمه الله تعالی فرمائی چه دتازه لوبیاو بیعه ددوی په پلوکی جائزه ده، دغه شان ددوی په نزد دغوازانو، بادامو، اوپستيو بیعه ددوی دپا سنی پټ سره جائز نه ده، البته په بادامو وغیره دپاسه چه کوم نرم نری پټ وی هغه په اتفاق سره دبیعی دجواز مانع ندی یعنی بیعه یی روا ده. پس اودغنموبیعه ددوی په وگوکی جائزه او که نه ده؟ دامام شافعی نه ددی په باره کی دوه روایتونه راغلي دی یو روایت داچی دابیعه جائزه ده اکثر و شوافعو دروایت غوره کړیدی؛ دویم روایت داچی دابیعه جائزه نه ده دشوافعوپه نزد منصوص روایت اوظاهر مذهب هم دادي. زموږ احنافوپه نزد مذکور ه ټول صورتونه جائز رواه دی. (۲)

{ب: - دغلی دانی تخمینی بیعی حکم}

مسئله: - که چا دغلی دانی یو پیری خرڅ کړه او یی وئل چی هر قفیز (اوگی) دیو درهم په عوض دی اودا پیری مقداری بیان نه کړو، مثلاً چی سل صاعه (منه) دی او که پنځوس دی، نو دامام اعظم صاحب په نزد به صرف په یو قفیز کی بیعه جائز وی، او په باقی کی به تربیانه پوری موقوفه وی، ځکه چی

^۱ هدایه، ج ۳ ص ۲۷.

^۲ هدایه، ج ۳ ص ۳۳.

دغلی اوړویی دوهمه مقدار په یوقفیز کی معلوم دی، او باقی نورو کی مجهول دی. هان که دتولی ډیری مقدارنی بیان کړو، نو دتولی ډیری بیعه به بیا جائز وي. دصاحبینو په نژدېه دواړو صورتونو کی بیعه جائزده، ائمه ثلاثة هم ددی قائل دی، ځکه چه په باقی مقدار کی چی کوم جهالت دی ددغی لیری کول ددوی په وس طاقت کی دی، پس په ظاهر کی دهدايه نه دصاحبینو دقول ترجیح معلومیږی، او په دی فتوی هم دی. (۱)

مسئله: - خر خونکی په وخت د عقد دبیعه کی دتول ډیری مقدار بیان کړو، چه داسل قفیزه (اوگی) دی اودسلو درهمو په مقابله سره دی، هو بیا هغه د دي مقدار بیان شوي نه کم شوو، نو اخستونکی ته اختیار دی که غواړی مو جوده حصه دی ددی په حساب سره واخلي، او که غواړی بیعه دی فسخ کړی، او که دبیان شوی مقدار نه دشئ زیات وه نودغه زیات شوي شئ دخر خونکی دی، ځکه چه بیعه په یو خاص مقدار یعنی سلوقفیز بانندی تړلی شوی وه، نو زائد مقدار په عقد دبیعه کی داخل نه شو، نودغه به دخر خونکی وی؛ او که مبیعه رخت (کپړه) یازمکه وه، نودکمی په صورت کی به اخستونکی ته اختیار وی که غواړی په پوره قیمت دی واخلي، او که غواړی بیعه دی فسخ کړی، اودزیاتی په صورت کی به زائد مقدار د اخستونکی وی؛ وجه دفرق داده چه په اشیاء مزروعه کی گز وصف وی اودوصف په مقابله کی روپی نوی، په خلاف دمقدار نه یعنی دپیمانی اووزن نه چه دغه وصف نوی، فافتراقاً (یعنی الفرق بین الاصل والوصف اما بتعيب بالتبعيض والتشقیص فالزیادة و النقصان فيه وصف وما لا يتعيب بهما فهما فيه اصل وقيل الوصف مالوجوده تاثیر فی تقویم غیره ولعدمه تاثیر فی نقصان غیره والاصل مالا یكون بهذا المثابه. (۲)

۱ هدایه، ج ۳ ص ۲۷.

۲ الشامیه، ج ۴ ص ۳۳ مع الزیادة.

﴿ دریم بحث: درخت (کپری) خر څولو او اخستولو دوي طریقی ﴾

مسئله: - که خر خونکی دمقدار دمزرع سره ددی ذکرهم او کړو، چی هر گزبه دیو درهم په عوض سره وی، نو بیا دا رخت (کپره) کمه شوو، نو اوس اخستونکی ته اختیار دی که واغواړی کمه دی واخلی دهغه خصی داندازی قیمت په مطابق چی عقد ورباندی شوی، او که غواړی بیعه دی فسخ کړی، او که دا رخت زیات شو نو که غواړی دغه فی گز رخت دی یو درهم په مقابلی سره مکمل واخلی، او که غواړی بیعه دی فسخ کړی، څکه چه گز اگر چه وصف دی خودلته دهر گز قیمت معلوم کولو په وجه سره اصل شو. (۱)

مسئله: - که خر خونکی او ویل چه ماد رخت (کپری) دا بنه ل ستا باندی خرڅ کړو، پدیکی لس تانونه دی، او دهرتان قیمت لس درهمه دی، بیا وروسته په دغه بنه ل کی یوتان کم شو، نو د موجوده تانونو په اندازه به بیعه صحیح وی چی څومره تانونه باقی وی، البته اخستونکی ته به دا خستو اونه اخستو دواړو اختیار حاصل وی، او که دلسو تانونه څخه زیات شو نو زیات شوي تانونه په وجه به بیعه فاسده وی، څکه چه بیعه مجهول دی. (۲)

﴿ څلورم بحث: دونو بوټو خرڅولو او اخستولو شرعی طریقی ﴾

{ الف: - دباغواو میوو دخرڅولو او اخستولو اووه صورتونه }

مسئله: - دباغواو میوو رانیول خرڅول: دا دي مسئلی یو څو صورتونه دي:
اول صورت: داچی دمیوی ترکیدو منځکی باغونه خرڅ کړی دا جائزندی پدی هکله صریح او صحیح روایتونه شته، لکه په حدیث شریف کی دینه (بیع معادمه) یابیع سنین ویلی شوی. (۳)

^۱ هدایه، ج ۳ ص ۲۸.

^۲ مختصر القدری، ص — (۹۰).

^۳ سنن ترمذی، ج ۱ ص ۲۴۵ باب ماجاء فی المخابرة والمعادمة.

درهم صورت: داچی میوه ئی وکره مگرهغه داستعمال ورنه ده، که پدی شرط رانیولی شی چی خریداربه ئی سمدستی شکوی داصورت په اتفاق سره صحیح دی، ابن قدامه رحمه الله تعالی فرمائی، القسم الثاني: ان یبعتها بشرط القطع فی الحال فیصح بالاجماع لان المنع انما کان خوفاً من تلف الثمرة وحدث العاهة علیهما قبل اخذها. (۱) بیا هم که درانیولو او خرخولوتو معاملی وروسته خریدار داخواش وکرچی ترتیاریدو پوری دی میوه پردرختو پری بنودل شی، اودباغ خاوند داخبره ورسره ومنله، پدی کی باک نشته علاءالدین سمرقندی رحمه الله تعالی فرمائی - فان کان ذلك باذن البائع جاز وطاب له. (۲) همدارنگه میوه بی ترتیاریدو مخکی رانیوله، اودرانیولو او خرخولودمعاملی کولوپه وخت کی داونه ټاکل شوچی میوه به اوس شکوی، اوکه ترتیاریدو پوری به ئی پرپریدی، یعنی پدی هکله چپتیاراغلی وی، نودامام ابوحنیفه رحمه الله تعالی په نزدپدی صورت کی هم معامله صحیح کیژی دنورو امامانوپه نزد نه صحیح کیژی، علامه ابن قدامه رحمه الله تعالی لیکلی القسم الثالث: ان یبعتها مطلقاً ولم یشرط قطعاً ولا تبقیه فالبیع باطل وبه قال مالک والشافعی رحمهما الله تعالی واجازه ابوحنیفه رحمه الله تعالی. (۳) احنافوکه خه هم داجائزه بللی دی مگرددوی په نزد هم دا واجب دی چی ددادول معاملی وروسته دی خریدار میوه شکوئی دی داحق نلری چی پر درختو میوه وساتی، وعلی المشتري قطعها فی الحال اذا باع مطلقاً او بشرط القطع. (۴) خلورم صورت: داچی پدی شرط معامله وشي چی مالک به میوه پردرختو پرپریدی ترخوچی میوه بخیزی، ددرو امامانو په نزد بیع فاسده ده، اودامام

۱ المغنی ابن قدامه، ج ۳ ص ۷۲.

۲ تحفة الفقهاء ص ۶۵.

۳ المغنی، ج ۴ ص ۷۲.

۴ عالمگیری، ج ۳ ص ۱۰۹.

دوهم فصل: ديمي مسائل ۲۰ څلورم بحث: دونو بوتو دبعه طريقي

اعظم ابوحنيفه رحمه الله تعالى په زدهم صحيح نه ده ، اما اذاباع بشرط الترك فهو فاسد. (۱) ولي چي درانيول خرڅو لو په معامله كي خريداريو داسي شرط ولگاوه چي په هغه كي دده گټه ده ، او داسي شرط څخه رسول الله صلى الله عليه وسلم منع كړي ده.

پنځم صورت: چي يوڅه ميوه ئي وکړه ، او يوڅه ئي لا تراوسه نه ده كړي بلکي په مستقبل كي ئي امکان شته ، دغه موجوده او آئنده كيدونكي دواړه ډول ميوه خرڅ كړي ، دامام مالک رحمه الله تعالى په نزد جائز دي ، ددرو امامانو امام ابوحنيفه ، امام شافعي او امام احمد رحمهم الله تعالى په نزد جائز ندي ، واذاباع الثمرة الظاهرة وما يظهر بعد ذلك لم يصح البيع عند أبي حنيفة والشافعي واحمد رحمهم الله تعالى وقال مالک يجوز. (۲)

شپږم صورت: داچي كه يوڅه ميوه داستعمال لايق شوه ، او پاته ميوه لا تر اوسه داستعمل لائق شوي نه ده ، بياهم دامام شافعي رحمه الله تعالى او امام احمد رحمه الله تعالى په خلاف امام مالک رحمه الله تعالى ددي اجازه ورکړي ده ، پدي شرط چي په باغ كي به ټوله درختي ديوي ميوي وي ، دا حنافو په نزد عمومي اصول په برابر دراوتل شوي ميوو سره دهغه ميوو خرڅول صحيح نه دي چي تراوسه لاراوتلي نه دي ، دحنفي فقهاوو په نزد دغه ظاهر روايت دي البته ځني متاخرينو فقهاء پدي هکله نرمي غوره کړي ده ، لکه چي ابن نجيم رحمه الله تعالى نقل وي چي امام فضلي رحمه الله فرمائي چي په خلکو كي دانگورو په رانيولو او خرڅولو كي دغه ډول رواج شويدي ، اوس ددي څخه په راگرځولو كي خلکو ته تکليف شته ، ځکه استحساناً زه دا جائز گرځوم ، امام محمد رحمه الله تعالى په بوتې لگيدل شوي

^۱ تخفة الفقهاء، ص ۵۵.

^۲ رحمة الامة ص ۱۷۷.

کلابودرانيولو اوخرخولوا اجازه ور کړي ده، حالانکه دکلابو کلان په يوه پلانه غورپيژي، والله تعالى اعلم بالصواب.

اوم صورت: داچي ميوه نئ وکړه اودانساني استعمال ورهم شوه چي دفته اوحدیث په اصطلاح کي،،بدوصلاح،، ورته ويل کيژي، ددروو امامانو امام مالک امام شافعي اوامام احمد رحمهم الله تعالى په نزدپدی صورت کي هر ډول رانيول اوخرخول صحيح دی، که بي شرطه رانيول اوخرخول وي، يا سمدستي دشکولو شرط وي، ياترتياریدو پوري دميوي ساتلو شرط وي، خريدار ته به په بي شرطه معامله کي، ياترتياریدو پوري په درختي ساتلو په شرط کي داحق لري چي ميوه ترتياریدوپوري په درخته پريږدي، وجمله ذلک انه اذا بدا الصلاح في الثمرة جازيها مطلقاً وبشرط القطع وبذلک قال مالک والشافعي وقال ابوحنيفة واصحابه لايجوز بشرط التبقية.^(۱) دامام ابوحنيفه رحمه الله تعالى اوقاضي ابويوسف رحمه الله تعالى په نزدکه پردرخته تريوي مدي پوري دميوي دپرينسودلوشروط ولگول شي بيع نه صحيح کيږي، امام محمد رحمه الله تعالى ددي تفصيل بيان کړيدی چي که ميوه تياره شوي وه په داسي شرط لگولوکي باک نشته، اوداشروط اعتبارهم لري، اوکه دميوي ترتياریدومخکي داسي معامله وشي بيع نه صحيح کيژي، دعموم بلوی(چي عموماً ټول خلق په اخته وي)له کبله علامه طحاوي رحمه الله تعالى هم دااختيارکړي ده، ابن نجيم اوحصکفي وغيرهما رحمهما الله تعالى په بيان فتواهم پردي ده.

مسئله:- که مالک لپاره دباغ يوه درخته وټاکل شي چي ددي ميوه به پخپله مالک اخلي، لکه په ځينو سيمو کي دپته،،جنس،، وائي بياخوددي صورت په جوازکي هيڅ شکه نشته، ولي چي فقهاوو کراموپه خرخولو کي ديوي

^۱ (المغني ابن قدامه، ج ۴ ص ۷۵)

ټاکل شوي درختي استثناء صحيح بللي ده، مگر که ددرختي پرځاي نې
دمیوي مقدار مستتی کړ چی دومره دومره میوه به مالک ته ورکړي، لکه
څنگه چی نن سبا په عامه توګه رواج دي، داصورت داخنافو اوشوافع
اواحنابلویه نزد جائزندی، اودمالکیانو په نزد جائزده، لایجوز ان یبیع ثمره
یستی منها ارطالا معلومة خلافاً لمالک رحمه الله تعالى. (۱)

{ب:- دزهرجنو بوتو دخرخولو او اخستولو حکم}

مسئله:- دزهرجنو بوتو چی په دوايانوکی استعمالیږي ددي په باره کی
دصاحب داقناع بیان دی چې که فائده تری نشی اخستلي، نو خریدوفروش
به ئی روا نوي، او که دعلاج په کار کی راخی نویا به روا وي. (۲)

﴿پنجم بحث: دزمکو خرخولو او اخستولو شرعی طریقې﴾

{الف:- زمکی دبیعی یومهم صورت}

مسئله:- که یو سری مثلاً نیم جریب زمکه په یوکس خرڅه کړه، په دغه
طریقه چه زه به بیا ددغه زمکه په عوض کی یا نیم جریب نوره زمکه در
کرم یعنی تبادلې به سره وکړو، اویابه ئی قیمت درکرم، نویادغه کس دده
په اجازه دغه قطعه زمکه کی سرائی یادباغ آبادی جوړه کړه، نودده مسئله
حکم دادی: چه دغه بیعه فاسده ده، ولی چی جهالت په ثمنو کی ده دغه
سبب جنک او اختلاف ده، نوهره بیعه چه مفضی الی النزاع وي هغه بیعه
فاسده وی، البته باع حق دفسخه کولودبیع نلري، لکه علامه شامی رحمه
الله تعالی فرمائی فیما اشتره فاسداً لزمه قیمتها وامتنع الفسخ. (۳) او که
کچیری ددوی دواړو په قیمت کی اختلاف وه، چه وړانده ددغه زمکی ئی

۱ هدايه، ج ۳ ص ۱۱ وفتح القدیر، ج ۵ ص ۳۹۵.

۲ الاقناع، ج ۲ ص ۶۰.

۳ الشامی ج ۴ ص ۱۴۶.

قیمت کم ره اوس دزمکی قیمت زیات شویدی، نویدی صورت کی چه دبیعی په ورخ کوم قیمت د زمکو وؤ هغه قیمت به معتبروی، ولی چی زیات شوی قیمت لره اعتبارنشته هغه پنخوانی قیمت یی به اخلی. علامه شامی رحمه الله تعالی فرمائی قال علیه قیمتها یوم وقع البیع ویوم وقع القبض ... وعلیه الفتوی. (۱)

{ب:- دشاره زمکی دآبادی شرعی حکم}

مسئله:- شاره زمکه چه دفعهی په اصطلاح کی،، موات،، ورته وایی، دغسی زمکه چی هرڅوک آباډه کړی جائزده. (ابوداود) دامام ابوحنیفه رحمه الله تعالی په نزد دغه ډول حکومتی زمکه چی نه وی کرل شوی، دحکومت په اجازه کرل کیدلای شی، که دحکومت لخوا دزمکی ترور کولو وروسته دري کاله تیرشی، او دی هیڅ فائده خنی پورته نه کړی، دغه زمکی به د ده څخه اخلی، اوبل چاته به یی ورکوي چی نورخلک استفاده خینی وکړی. (۲) دامام شافعی اوامام احمد رحمهما الله تعالی په نزد دداسی شاری زمکی دآبادولوپاره حکومتی اجازې ته اړتیانشته. (۳)

{ج:- دفضا دخرڅولو او اخستولو شرعی حکم}

مسئله:- دفضا بیعه درسته ده خوشرائط یی دا لاندنی دی:

اول شرط:- دا چی یا به په زمکه دجوړشوی تعمیر دچت دسطحی نه فضاء خرڅول کړی شی، اویابه دمکان جوړشوی نوی، بلکه اخستونکی ته داسی اوونئ چه تاسی پدی زمکه بانندی مکان جوړ کړه، دهغی دچت دپاسه زمکه دربانندی خرڅوم.

^۱ شامی، ج ۴ ص ۲۶-۲۷

^۲ خلاصة الفتاوی ج ۴ ص ۳

^۳ رحمة الامة ص ۳۶.

دوهم شرط: - دا چی دناجوړ کړی تعمیر اوږدوالی او پلنوالی دی وټاکلی شی، چه دیونا معلوم شی خرڅول رانشی.

دریم شرط: - دا چی دبالائی (پاسنی) منزل حد بندی دداسی اوشی چه دعمار ت مکانیت، اودهغی په تعمیر کښی استعمالیدونکی سامان (خښتی، مصالحه وغیره دمقرر کړی شی ولی چه ددی پتی په لاندنی چت بانندی پورته کوی، پدی باره کی دصاوی الفظ دادی: بان یصف ذات البناء من العظم والخفة والطول، ما یصف ما بنی به من حجر او اجر،^(۱)

اوبل دا چی ددی بیعی په وجی سره به دلاندینی چت مالک دهغه زمکی داندرن مالک وی، اودپورتنی چت دپاسه دفضا مالک به هغه څوک وی چه پورتنی چت ئی جوړ کړی وی، البته هغه په مخ په پورته دنورتعمیر کولو حقدار نه وی، ولی چه دادلوظ او قول نه خلاف کول دی، اوبله خبره داده چه دزیات تعمیر په وجه لاندینی منزل ته دزیان رسیدو خطر ه وی.^(۲)

{د: - د بیعانه ورکولو حکم}

مسئله: - هر کله چه داخستلو خرڅولو یوه معامله جوړه شی، نو پس اخستونکی څه پیسی دهغه ټاکلی قیمت نه خرڅونکی ته ورکړی، چه دا بیعانه بللی شی، دفقهی په اصطلاح کښی دداسی قسم ورکړی بیعانی څه بدیت نشته، ځکه چه دغه دمیعه څه قدری قیمت مخکی دقبضی نه ورکول دي، البته که اخستونکی دغه میعه وانخستوله نو هغه بیعانه به ئی وسوزی، یعنی وا پس به دغه روپی نه ورکوي، نو دا صورت حرام دی، لکه شاوولی الله محدث دهلوی رحمه الله تعالی لیکلی دی چه هغوی صلی الله علیه وسلم دبیع عربان نه منعه فرمائیل ده، دی صورت دادی چه خرڅونکی ته دقیمت څه برخه ورکړی

^۱ حاشیه القاری علی الشرح الصغیر، ج ۴ ص ۳۰.

^۲ جدیدفقهی مسائل، ج ۲ ص ۳۸۹.

شی کہ دغہ شی واخستو نور کپی قیمت بہ ورتہ پہ باقی قیمت کی حساب شی، او کہ وانخستونو خرخونکی تہ بہ دغہ رقم ہی بدلہ (وپریا) ہمداسی پاتی شی، پدی کی دجواری صورت موندی شی۔^(۱)

{۵:- دفرضی شریک سرہ دیبعی حکم}

مسئلہ:- خنی عرب ملکونو کی داقانون جور شویدی، چہ دنورو ملکونو خلق پہ دغہ ملک کی ہلتہ تجارت کولیشی، چہ ددغہ ملک باشندہ بہ ورسرہ ہم پکی شریک وی، یواخی خان تہ مستقل تجارت نشی کولی، لہذا داسی کیری چہ دبل ملک باشندہ دغہ ملک کی دیوشریکوال نوم حکومت تہ بنکارہ کپی، او دغہ کس تہ میاشت پہ میاشت یا مثلاً کال پہ کال ددغی نوم لیکلو خہ تاکلی رقم (رو پی) پہ معاوضہ کی ورکوی، دا صورت خکہ روانہ دی چہ دا رشوت جور پری، چی ہیخ داسی مجبوری نشتہ دکومی پہ وجہ چہ رشوت ورکپہ روا گرخیدلی شی، اوبل خوا دکوم فرضی شریک نوم چہ ورکپی شویدی ہغہ دپارہ تاکلی رقم یادا رشوت اخستل، یامال غصب یعنی پہ زور اخستل دی، چی شرعاً ددی جواز نشتہ۔

پس دادی صحیح طریقہ دادہ:- چی دغہ مقامی (ملکی) سپی ہم خپل یو صحیح شریک جور کپی، کہ ہغہ دیتہ نہ تیار پری نواصل سوداگر دی ورتہ دخپلی پنگہ نہ خہ برخہ دقرض پہ ڊول ورکپی، اوپہ خپلی معاملی کی دی شریک اوگرخوی او پہ تناست سرہ ددہ دپارہ روا نفعہ مقررہ کپی۔^(۲)

﴿ شہرم بحث: دخرخولو او اخستولو ممنوع صورتونہ ﴾

{الف:- دلسو ممنوعو صورتونو توضیح}

مسئلہ:- پہ شریعت مطہرہ کی دخرید و فرس ڊیر داسی صورتونہ شتہ

^۱ حجة البالغة، ج ۲ ص ۱۰۰

^۲ جدید فقہی مسائل ج ۲ ص ۲۵.

چی دهغه څخه منع شوی ده اول صورت سوم علی سوم اخیه ده: داسوم علی سوم اخیه بیعه دینه وائي چی یوڅوک یو شی رانیسی اودخرڅوونکي سره په معامله کولو لگیا اومصرف وي، چی یوبل څوک راشي اوپه سودا کی ني ورولویږی، اودغه نوی رانیوونکي تر دا بل نسبتاً ډیري پیسي (روپی) ورته ووائي دصورت جائزندی.

دوهم صورت بیع علی بیع اخیه ده: - دا بیع علی بیع اخیه دینه وائي چی یوڅوک یوشی خرڅوی بل څوک راشي اوخریدارته ووائي چه دغه ډول شی زه په کم قیمت درکوم. رسول الله صلی الله علیه وسلم ددي دواړو خبرو (سوم علی سوم اخیه، بیع علی بیع اخیه) څخه منع کړی ده، ځکه چی پدي سره ددووکسانو یادلو ترمنځ درقابت اوخوابدتیا دیداکیدو قوی اندیبنه شته. (کما فی صحیح البخاري کتاب البیوع باب لایبیع علی بیع اخیه). البته دامنع هغه وخت ده کله چی دسامان په رانیوخرڅولو خریدار راضي شوی وي. (۱) مگر دنیلام صورت ددي څخه وتلی دي، چی په هغه کی یوڅوک دلور قیمت دحصول په خاطر بولی لکوي، اوپخپله درسول الله صلی الله علیه وسلم څخه دغسی خریدوفروشی ثابت دي. (۲)

دریم صورت بیع حاضر للبادده: دا بیع حاضر للبادمطلب دادی چی دصحرا اوکلي خلک خپل مالونه بنارته راوړی، اودبنارتجاران ددوي مالونه رانیسی، پخپله ني په بنارکی خرڅ کړي، دوي فکر کوي چی داصحرايانوبه په لږه بیعه داشیان خرڅ کړي مارکیت به خراب شي، رسول الله صلی الله علیه وسلم ددي څخه هم منع وکړه، چی په دي کی دعاموخلقو لپاره تاوان شته. (کما فی ترمذی کتاب البیوع باب ماجاء لایبیع حاضر للباد).

۱ عمدة ۱۱ (۳۶۰)

۲ عمده انصاری (۲۵۸)

څلورم صورت تلقی جلب ده: - دا تلقی جلب معنی داده چی له تجارنی قافلې څخه تر ښار دباندي سامان په ارزانه بیعه رانیول شي، اود قافلې خلکوته د ښار د بازار په هکله درواغ ووائی، مثلاً ورته ووائی چی په ښار کی شیان ارزانه شویدي، لکه څنگه چی معلومه ده چی دغه صورت دمال له خاوندانو سره دوکه اودهغو خطا ایستل دي. (۱)

پنځم صورت نجش یا تناجش ده: - دا نجش یا تناجش معنی داده چی یو د را نیولو اراده نه لري، مگر نورو خریدارانوته د دوکه ورکولو په نیت سره یو څوک ناحقه زیات قیمت ووائی، مطلب یی خریدار نوته دوکه ورکول وي چه رسول الله صلی الله علیه وسلم ترینه منع کړیدی. کما فی صحیح مسلم باب تحریم النجش. شپږم صورت تصریه ده: - دا تصریه معنی داده چی یو څوک دغوا یا بزه پدی نسبت نه لوشي چی خریدار دوکه پروخوری، چه رسول صلی الله علیه وسلم ددینه هم منعه کړیده ولي چه داهم ښکار دوکه ده. کما فی صحیح مسلم کتاب البیوع باب تحریمه التصریه.

اوم صورت تولیه اومرابحه ده: - دا تولیه اومرابحه معنی داده چی یو چا یو څه سامان رانیول، اوبل چاته ئی دخرڅولو پروخت وویل چی زه دغه سامان په هغه بیعه تاته درکوم، په کومه بیعه چی مارانیول دي، اود بیعی په ویلو کی درواغ ورته ووائی، یاداسی ورته ووائی چه ما په دونه رانیولی دی اودونه گټه درڅخه غواړم، حالا نکه دخرید په قیمت کی ئی درواغ ورته ویلی وي، دغه دواړو صورتو کی خریدار دحق لري چی دغه سودا ختم کړي، یاد هغه څخه دغه زیاتوب پیسی بیرته واخلي. (۲)

۱ صحیح مسلم کتاب البیوع باب تحریم للقی الجلب. و بدل المجهود، ج ۴ ص ۲۶۸.

۲ الهدایه، ج ۳ ص ۵۵.

اتم صورت بيع عند آذان الجمعة: دا بيع عند آذان الجمعة معنی داده چې کله دجمعي آذان وشي نو خريدفروش به پريژدني، يعنی تجارت کی شريعت له هغه صورت څخه هم منع کړيده چې دهغه له کبله په خالص عبادت کی خلل راشي، الله تعالی په قرانکريم کی دجمعي په هکله په خصوصيت سره تاکيد کړیدی چې کله دجمعي آذان وشي لمانځه ته ولاړشي، خريدفروش پريژدني (سورت الجمعة ايات ۹) لکه څرنګه چې دجمعي دلمونځه لپاره زيات وخت پکاروی او دلمونځه سره خطبه هم وي، نو ځکه خاص توجه ورته شويدي، که نه دهر عبادت اولمانځه لپاره دغه حکم دی؛ پس دجمعي داذان په وخت کی بيعه دامام مالک امام احمد رحمهما الله تعالی او اهل ظواهر و په نزد باطله ده. ليکن دا حنوافو شوافع رحمهم الله تعالی بلکه دجمهورو په نزد جائزده، البته مکروه تحریمی ده، مګر په تلوکی جمعی مسجد ته خريدوفروش مکروه ندی ځکه چه ده مانع دسعی ندی، اواصح داده چه داذان نه مراد اول آذان مراددی. (۱)

نهم صورت بيع فی المساجد: - بيع فی المساجد معنی داده چې مسجدونه خالص ده دالله تعالی ذکر او دين ته درابللو او عبادت ځایونه دي، پس دلته خريدوفروش کی ممکن ده چې دنورو خلقو په عبادت اولمونځه کی خلل راشي، نو ځکه په مسجدونو کی له خريدوفروشه منعه وشوه، البته صرف معتكف د ضرورت په وخت کی بدون دحاضرولو دسامان عقد خريد او فروش کولی شی، پس رسول الله صلی الله علیه وسلم فرمایلی (لا اربح الله تجارتک) يعنی چې په مسجدکي په رانيولو ووينی ورته وواياست چې الله (تعالی) دي ستا تجارت له گټي بی برخي کړي (کما فی الترمذی کتاب البيوع باب النهي عن البيع فی المساجد).

درهم فصل: دیهی مسائل ۲۹ شهرم حت: دیهی ممنوع صور: تونه

لسم صورت تحریم الملامسه و المنايذة: داملامسه والمنايذة معنی داده چی په هغه کی دمکملی خوښی پرته پریوکس سودا لازمه وگرځیږي، یعنی د شریعت عمومی طبیعت دادي چی ددواړو خواوو دمکمل خوښی اورضاپرته معامله باید ونشي، چی هغه بل کس ته په ضرر اوتوان تمامه شی، تراسلام دمخه دخريدوفرش ډیر صورتونه مروج وه چی په هغه کی دمکملی خوښی پرته پریوکس به سودالازمه وگرځیدله، چی یوکس به یی مسحه کړو اویا به یی کوم شی وروغورخولو، سودا به لازمه شوه داسی صورتو ته به نی ملامسه اومنايذه ویل کیدله، پس اسلام دا ډول ټول صورتو نه منع کړل. (ترمذی کتاب البیوع).

{ب:- غله شوی شی اخستلو حکم}

مسئله:- کله چه اخستونکی پدی پوهه شی چه دغه بیعه یعنی سمان غله شوی، نوددغه غله شوی شی اخستل دده لپاره حرام دی، ځکه چه پدیکی دظالم امداددی په ظلم باندي.

اوهمدارنگه (مضطر) یعنی محتاج سره بیعه منعه دی، چی د محتاجی په وجه داشی خرڅوي. (۱)

{ج:- دافیمو هیروینو اوحرامو د بیعه حکم}

مسئله:- دمسلمانانو دپاره افیم او هیروین خرڅول مکروه تحریمی دی، خواه په مسلمانانو

باندي وي او که په غیر مسلمو باندي وي. (۲) دافیون اخستل او خرڅول د دوائی دپاره جائز دی، دوائی نه علاوه دافیون اخستل او خرڅول مکروه تحریمی دی. (۳)

^۱ سنن ابی داود اوبدل المجهود ص ۲۵۲

^۲ ردالمحتار، ج ۵ ص ۲۱۲

^۳ احسن الفتاوی، ج ۶ ص ۴۹۴.

دوهم فصل: دبیعی مسائل ۳۰ شپږم بحث: دبیعی ممنوع صورتونه

مسئله: - دکوم شی نه چه فائده اخستل حرام دی، ددی اخستل اوخرخول هم حرام دی، چونکه گوته کی انگوشتی اچول مکروه دی بی دضرورت نه، نوددی بیعه اوچورول هم مکروه دی، اوماپه شرح تنویر کی لیکلی دی چه دکوم شی ذات سره گناه تړل شوی وی، ددی اخستل او خرخول مکروه تحریمی دی. (۱)

{د: - بیعه عینه حکم}

مسئله: - بیعه عینه ممنوع دی دادی بیعی صورت دادی: چه یوشی مثلاً په سل روپشی واخلی بیانی په پنخوس روپشی خرڅ کړی، د احنافو په نزد دغه بیعه جائز ندی، اگرچه دویمه بیعه مخکی دنقدروپی څخه وي، ځکه چه دا اخستل په کموروپشی هغه باندي دي چی مخکی یی نقد روپی زیاتی ورکړی وي، اوکچری دبیعه وروسته دنقد روپیو څخه وی، نوکه اوله بیعه پدی شرط وه چی بیعه دوهمه به لازمی کوی، نودا بیعه هم جائزندی، لوجه دعدم جواز ددوو بیعونه په یوعقد دبیعی کی، اوکچیری په دوهمی بیعی کی دا شرط نوي نوبیا هم دغه صورت مکروه دی ځکه چه دبیعه دمضطر (محتاج) دی. (۲)

{ه: - دقیمت په معامله کی شرعی لارښوني}

مسئله: دقیمت په معامله کی شرعی لارښوني داسی دي چه دولت حکومت دی پدیکی لاس وهنه نکوي، په قدرتي رفتاردي په قیمتونو کی لوړیدل او ټیټدل روان وي، یووارځینی اصحاب کرامو رضی الله تعالی عنهم په خصوصیت سره درسول الله صلی الله علیه وسلم څخه وغوښتل چی قیمتونه دي وټاکل شي، رسول الله صلی الله علیه وسلم ددوی سره رانی سره متفق نه شو، وئی فرمائیل:

^۱ الدر المنقی علی هامش المجمع، ج ۴ ص ۲۱۲

^۲ الفقه الحنفی وادلته، ج ۲ ص ۴۹

پہ قیمتونوکی گرانہ اوارزانی جووونکی اللہ جل جلالہ دی (ابن ماجہ کتاب التجارات باب من کرہ ان یتعین) البتہ حینی وختونوکی حنی خلق داخلق داخلقی لارنووونواثرنہ قبلوی ددی لپارہ لہ قانون نہ کاراخستل کیڑی، نوخکہ هوفقهاؤ کرامودداسی خلقودطبیعت معلومولوپہ خاطر دگران فروشی دزیدتیدولہ لہ کبلہ دولت تہ اختیارورکری دی، چہ قیمتونوونوکی یعنی تاجران بایددی خبری تہ مجبور کری چہ دحکومت لخوا پہ تاکلو قیمتومالونہ خرخ کری. (۱)

{و:- دااحتکارشرعی حکم}

مسئلہ:- ااحتکارشریعت کی ممنوع دی، دااحتکارمعنادہ، د ضرورت (ارتیا) دشیانو ذخیرہ کول، اوبازارخنخہ راتول ترخوچہ قیمت نی پورته شنی، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرمائی- چہ چاخلوینست ورخی ااحتکار مکردہغه خنخہ اللہ اودہغه رسول بری (بیرار) دی. (۲) داحنافو فقهاو پہ نزد دخوراک شیان خوندی کول منع دی، پہ نوروشیانوکی خوندی کول منع نہ دی، وجہ نی دادی چہ داهروخت پکار راتلونکی شیان دی ددی خوندی کول لپارہ یومیاشت تاکلی شوی ده، یعنی یومیاشت پوری خوراکی شیان خوندی کول ااحتکار نومیڑی، چہ منع دی، خکہ چہ پدی سرہ شیان قیمتی (گرانیری)، تردی حدہ پوری چہ فقهاو حکومت اومتعلقہ انتظامیہ ددی خبری حقدارہ گرخولی ده، چہ دضرورت پہ وخت داسی مال جبراً داخوندی مالونہ راو باسی اودخرخولوانتظام دی نی پنخپل واک (نگرانہ) کی واخلی البتہ ذخیرہ اندوزی کی ضروری ده چہ دغه بہ انسانی یا حیوانی عذا وی، اوبل دا چہ دغه بی خرید شوی وی، کچیری دخپل زمکی حاصل وی بیا جائزده، او

^۱ (الاشباه والنظائر للسيوطی، ۱۸۷).

^۲ مجمع الزوائد ج ۴، ۱۰۰، باب الاحتکار.

بل داچه دغه شهرکی بي واخلي، اویا په داسی خای شخه واخلي چه دغه خای شخه غله دغه شهرته عموما راخی، اوبل دا چه په دغه ذخیره اندوزی کی خلقو نقصان او تکلیف وي، اودغه شهرکی مال زیات وي او خلقو ته تکلیف نوي بیا جائزده. (۱) دخینو فقهاوو په نزد احتکار اومال ذخیره کول یوازي په عدائي موادو کی منعه ده، البته امام ابوحنیفه رحمه الله تعالی په نزد په ټولو شیانو کی احتکار منع دی. (۲) البته امام ابوحنیفه رحمه الله تعالی دیوشهر شخه غله واخلي، اوبل شهرکی ذخیره اندوزی کوي دغه جائزده بعضی علماء کرامو امام ابویوسف رحمه الله تعالی قول د امام صاحب موافق ویلی ده او بعضی علماء کرامو امام ابویوسف رحمه الله تعالی قول دامام محمد رحمه الله تعالی موافق ویلی ده یعنی امام محمد رحمه الله تعالی فرمائي چه دغه مذکور صورت مکروه ده (وکره الاحتکار قوة البشر والبهائم في بلد يضر باهله ... ولا يكون محتکار بحبس غلة ارضه بلا خلاف ومجلوب من بلداخر خلافا للثانی "ابی یوسف رحمه الله تعالی وعند محمد رحمه الله تعالی ان کان یجلب منه عادة کره وهو المختار... وقوله الملتقى قال في شرحه تبعا لشرنبلاله وقد اخرج في الهدایة قول محمد رحمه الله تعالی بدليله أي فان عادته تاخر الدلیل ما یختاره. (۳) وقال کل بقعة یتمد منها الی المصرفی العادة فهی بمنزلة فناء یحرم الاحتکار منه وهو فی غاية الاحتیاط. (۴)

﴿ اوم بحث: دحيوناتو خرخولو او اخستولو حکم ﴾

{ الف: - درینمو چینجئی اودخزندو خرخولو او اخستلو حکم }

مسئله: - دامام اعظم ابوحنیفه او امام ابو یوسف رحمهما الله تعالی په نزد

^۱ الفتاوی الهندیه، ج ۳ ص ۱۰۳.

^۲ در المختار کتاب الخطر والاباحه، ج ۵ ص ۲۵۲.

^۳ الفتاوی الشامیه ج ۶ ص ۳۹۹.

^۴ (البحر الرائق ج ۸ ص ۳۷۰)

درهم فصل: دبیعی مسائل ۳۳ اوم بحث: د حیوانو دبیعی حکم

د ریښمو چینجی، او ددوی هگی خرخول اخستل جائز نه دی، البته امام محمد رحمه الله تعالی علیه نی جائز بولی، اوفتوی هم دامام محمد رحمه الله تعالی په قول با ندي ده، ددی وجه داده چه فائده ترینه اخستلی شی. (لکونه منتفعا به) (۱)

او همدارنگه امام نووی رحمه الله تعالی دنورو حشرات الارض (خزندو) خرید فروخت منع لیکلی دی، لیکن دشاتود میچوود خرید اوفروش اجازت نی ورکړی ده، وجه نی دا ذکر کړیده چه دا پاک حیوان ده، فائده ترینه اخستلی شی. (انه حیوان طاهر منتفع به). (۲)

{ب:- د بزو میگو خرخولو او اخستولو شرعی طریقې}

مسئله:- که یوسری د بزو میگو یو کنهک بزې میگی یاد رختو (کپرو) یوتان خرخ کړو، اووئی وئیل چه هره بزې یا هرگز په یو یودرهم دی، نود امام اعظم صاحب په نزدبه په یوه بیزه او یو گز رخت کی هم بیع جائز نوی، ځکه چه دلته دبیعی په افرادو کی اختلاف دی، نود ټولو قیمت برابره شی تقسیمی پس نزاع جنگ به واقع شی، په خلاف دغلی نه یعنی دغنمو دانو کی څه زیات تفاوت نیشته، پدی وجه هلته په قفیز کی بیع جائز ده، ها که په رخت د عقدنی د ټول کنهک او ټول تان مقدار بیان کړی وه نو په اتفاق به دټولو بیعه صحیح شی، لزوال المانع وهو الجهالة. (۳)

{ج:- هغه شیان چی بغیر د یادونی نه په بیعی کی داخل وي}

مسئله:- دلاندي مسئلی په دریو قواعدو باندي مبنی دی: اول: کوم شی لره چه اسم دبیعی ورته شامل وي په عرف کی، نودغه شی بغیر د ذکر کولو

^۱ البحر الرائق، ج ۶ ص ۷۸، تبین الحقائق، ج ۶ ص ۴۹.

^۲ شرح مهذب ج ۹ ص ۹۲۲.

^۳ هدایه، ج ۳ ص ۲۷.

نه په بیعی کی داخل ده. دوهم: کوم شی چه د بیعی سره په اتصال د قرار باندی متصل وی نو دغه شی هم په بیعی کی داخل ده. دریم: کوم شیان چه ددی دواړو قسمونونه نوي، بلکه د حقوقو او منافعو د بیعی څخه وی، نو دغه شیان د حقوقو د بیعی په ذکر کولو سره داخلیری، او بغير ذکر د حقوقو څخه نه داخلیری، پس اوس که چامکان یا زمکه خرڅه کړه، او ذکر او زمکه نه علاوه څه بل شی نی صراحة ذکر نه کړو، نو په عرف کی لفظ د دار (کور) چه کومو شیانو لره شامل وی هغه ټول شیان به په بیعی کی داخل وی، مثلا دهغی عمارت د بندو و لوجرنده، اندر پایه، مطبخ، او بیت الخلاء وغیره. دغه شان د زمکی په بیعی کی به اونی (درختی) هم داخلی وی، ځکه چه اونی د زمکی سره متصلی وی په اتصال د قرار سره، البته اوچه (خشک) درخته به په بیعی کی داخله نوی، ځکه چه دغه د پریکولو په زدکی راغلی ده، او د زمکی په بیعی کی به فصل هم داخل نوي، ځکه چه دامتصل په اتصال د قرار سره نوي، بلکه دریلو د پاره کرلی شی، البته دبیزی، غوا وینخی، او داسی نورو په بیعه کی به ددوي حمل یعنی نس کی اولاد داخل وی، اگر چه اتصال د قرار سره ندی بلکه دی خوبه خامخا جدا کیری، جواب: - چونکه د خدای پاک نه سوابل څوک ددی حمل په جد کولو قادر ندی، او بل جواب دا چی دمور او د حمل په مینځ کی مجانست هم موجود دی، پدی وجه باندی جزء دمور مقرر کړي شو. (۱)

{د: - د حوض د ماهیانو رانیول خرڅول حکم}

مسئله: د حوض د ماهیانو رانیول خرڅول: دیوشی د خرڅولو لپاره دوي خبری مهمی دی، اول خبره: - داچی کوم شی خرڅیږي هغه به د خرڅوونکي ملکیت وی، دا خوبنکاره خبره ده. دویمه خبره: - داچی دهغه شی حواله

درهم فصل: دبعي مسائل ۳۵ اوم بحث: دحيوانو دسهي حکم

کول او سپارل به ممکن وي، که سمدستي ئي په حواله کولو قدرت نلري بيغه نه صحيح کيژی، مثلاً تنبیدلی حیوان یا ورک شوي سامان خرڅ کړی که څه هم دادخپل اصل مالک په ملکیت کی دي مگر سمدستي دهغه په ورحواله قدرت نه لري.

پس دماهیانو په لړکي هم دغه تفصیل دی، که ماهیان دده په ملکیت کی دي اودي په آساني دهغه په ورکولو قدرت هم لري ددي رانیول خرڅول صحیح دي که ئي په سپارولو قدرت نه درلود یا تراوسه لاده هغه مالک گرځیدل نوي ده رانیولو او خرڅولو معامله ئي روانه ده.

دماهی (کب) دمالک گرځید دري صورتونه دي اوله داچی : ده ماهیان دپرورش لپاره په خاص توگه په حوض (ډنډ) کی ایله کړي وي ددي ماهي دنسل مالک به دغه سپری وگرځي .

دویم صورت دادي چي ماهیان ده په کي حوض اچولی نوي مگر په حوض کی دماهیانو دراوستلو لپاره یا دماهیانو دبیرته نه تللول پاره ئي یوچل کړی وي ، اوس دی په پدي حوض کی دراتلونکی ماهیانو مالک دي ، دریم صورت دادي چی یوسپري ماهی بنسکار کړي او پخپل لوبنی کی ئي وساتي .

اوڅلورم صورت یی هغه دي چي په هغه کی سپری دماهیان مالک نه گرځی ، هغه داچی دیوچا حوض وي هغه ته ماهیان پخپله راشي ، پدي هکله ده هیڅ کوشش نوی کړی فقط حوض دده په مخکه کی دی ، دا خبره ددي لپاره کافی نه ده چي دمخکی مالک به دبچیانو او هگیو هم مالک وي ، بلکي هرڅوک چي دماهیانو چیچیان یا هگی پورته کړی هغه ئي مالک دی: اذافرخ طیرفی ارض رجل فهو لمن اخذه اذاباض فیها. (۱) دماهی په آساني سره دورکولودوه صورتونه دي یو داچی دبنسکار وروسته ئي په یوه لوبني

کې وساتي، لکه څنگه چې عموماً کيږي، یا ماهیان په داسې کوچني کډي کې ایله کړي چې دهغه څخه را ایستل آسانه وي. اوس بسکاره خبره ده چې په کومو صورتو کې سړی د ماهیانو مالک نوي په هغه صورتو کې خريد فروش صحيح ندي، او کله چې د ماهیانو مالک شی بیا هم هغه وخت دي رانیول او خرڅول صحيح دي کله چې په پورته ذکر شوي دوراوو صورتو کې یو صورت وي. دغه مذکور تفصیل ابن همام رحمه الله تعالی د هدایي په شرح فتح القدير کې لیکلی دی او ابن عابدین رحمه الله تعالی دا رانقل کړیدی. (۱)

{ه: - د حمل بیعی حکم}

مسئله: - د حمل بیعه باطله ده، او د حمل د بیعی بیع هم باطله ده، ځکه چه په حدیث شریف کې د دی دواړو ممانعت صریحی دی (ابن ماجه ترمذی احمد) او د گله ی بیزی په شاباندي دوریو او وریخته بیعه روا نه ده، البته امام ابو یوسف او امام مالک رحمهما الله تعالی دینه جائز وائی. او هدارنگه په غولانخ کې دننه د پیو (شودو) بیعه هم روا نه ده، ځکه چه په حدیث شریف کې د دینه منعه راغلی ده. (طبرانی و ابوداود) او هدارنگه معلومه نه ده چه په غولانخ کې پی دی او که هواده. (۲)

{ز: - د خرمنو خرڅولو او اخستلو حکم}

مسئله: - د اکثر و فقهاو په نزد د خرمنو د پاکیدو دوه صورتونه دی: اول دا چې یو څاروی مسلمان یا کتابی بنده په شرعی طریقہ ذبح کړی وي، نو داسې خرمن به درنگولو (پخولو) نه وړاندی هم پاکه وی، او که په شرعی طریقہ څاروی ذبح نکړی شی او هم داسې مرادر شونو درنگولو (پخولو) نه پس ئی خرمن پاکېږی. ("ایما اهاب فقد طهر" رواه ترمذی و نسائی). بله دا

^۱ شامی، ج ۴ ص ۱۰۶.

^۲ مختصر القدوری، ص ۹۵.

درهم فصل: دبیہ مسائل ۳۷ اتم بحث: دبیہ لپاره مهم ہدایات

چه دباعث (رنگولو) نہ مراد دخرمنی داسی برابرول دی چه دہغه بدبولی ورکہ شی، اودسحاکیدواندینبنہ نی ختمہ شی کما قال ما یمنع النتن... فہو دباغ. بلہ داچہ کوم خیزونہ ناپاک اوپلیت دی نودہغی خرخول اخستل روا ندی، ولی چه رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم دشرابو مرادری خنزیر او مرہ شوی خاروی اخستل خرخول حرام گرخولی دی، هرکله چه پہ دیوہ کی چه دبلولہ یہ غرض دخنزیر دوازدی پہ بارہ کی خلقو دہغوی صلی اللہ علیہ وسلم نہ پوبستنه اوکرو، نووی فرمائیل: چه پہ یہود داللہ تعالیٰ لعنت وی هرکله چه اللہ تعالیٰ پہ دوی وازدہ حرامہ اوگرخولہ، نو دوی دہغی خرخول اودہغی کتہ خورل شروع گول. (راوہ ترمذی ونسائی) یعنی حرامہ حیلہ بی ورته جوہرہ گہرہ، اوس ہغہ خرمن ترخوچه رنگ شوی نوی نو ناپاکہ بہ وی، چه دتولو فقہاوو پدی اتفاق دی. (کما فی حدیث متفق علیہ) خکہ نی خرخول اخستل روانہ دی. دغہ شان دایواخی پہ مالگی پوری کولو اولگول سرہ نہ پاکیری، ولی چه پہ دی سرہ بد بوئی اوسخاتو بی نہ ختمیری، البتہ کہہ دوی نہ واخستی شی اورنگ کری شی دہغی اجرت واخستی شی، اوبیاپہ بیعہ واخستی شی نو معاملہ بہ سمہ شی خرمن بہ بی پاکہ شی ہلتہ بہ نی اخستل خرخول جائز (روا) شی. (۱)

﴿ اتم بحث: دخرخولو او اخستلو لپارہ مهم ہدایات ﴾

{الف:- دمال متقوم توضیح}

مسئلہ:- دخرید اوفروش دصحت لپارہ یولازم شرط دہم دی چہ کوم شی خرخیژی ہغہ دی مال متقوم وی، اوشریعت ہغہ دقیمت ورہم وبولی. (کونہ مالاً موجوداً متقوماً، (۲)

۱ جدید فقہی مسائل، ج ۱ ص ۲۵۴.

۲ ردالمحتار ج ۳ ص ۵.

دمظوم او قيمت ورکيدلو معناداده چې شرعاً دداسې شي څخه پورته کول ناروا نوي. (العمال المباح الانتفاع به شرعاً). (۱) پودي بنسټ داسې شيان چې حرام وي او شرعاً دهغه څخه گټه پورته کول مباح نوي. دهغه خريد و فروش جائز ندي، لکه خنزير خريد او فروش، دوينې خرڅلاو، د شرابو بيه، تصويرونه، د ژوندي شي مجسمې رانيول او خرڅول، مردار او شيانو خرڅول، او دفتي په زمانه کې پر اهل فتنه خلقو د اسلحي د خرڅلاو وغیرا، لکه يوار دمکې مکرمې دفتي يوه موقع رسول الله صلی الله عليه وسلم وفرمائيل چه الله او دهغه رسول صلی الله عليه وسلم شراب مردار خنزير، او دبتان خريد و فروش حرام وگرځول. (کما فی صحيح البخاري کتاب البيوع باب بيع الميتة والاصنام). او همچنان رسول کریم صلی الله عليه وسلم دنراوماده حيوان ديو خاي کولو مزدوري ناجائزه وبلله. (کما رواه الترمذی عن ابن عمر رضی الله تعالی عنهما کتاب البيوع باب ماجاء فی کراهية عسب الفحل). او همدرنکه فقهاء کرامودانسان د غائطه مواد خرڅلاو روا نه بولي، ځکه چې دا نجسه دي البته کچيری خاوره په گډه شي او غائطه مواد پکې لږ شي بيا پروا نه لري. (۲)

{ب:- ديمعې د موجوديت مهمه مسئله}

مسئله:- يوشی باند د موجوديت اوقبضي وروسته خرڅ کړي، يعنی د خرڅولو پړوخت هغه شي باند د خرڅوونکي سره په ملک موجوده وي، له همدې يي د ځينو رواياتو مطابق مطلقاً تر قبضي دمخه له خرڅولو منع شويده. (کما فی مسلم کتاب البيوع باب بطلان بيع المبيع قبل القبض). دامام مالک رحمه الله تعالی په نزد دغه حکم چې تر قبضي وروسته به فروش کيژی يوازي دخورا

^۱ ردالمحتار، ج ۳ ص ۱۰۰

^۲ درالمختار علی هامش الردالمحتار ج ۳ ص ۱۰۵.

درهم فصل: دبیعی مسائل ۳۹ الم بحث: دبیعی لپاره مهم هدايات

کمی موادو په هکله دی ، نورشیان پدی حکم کی نه دي داخل . (۱)

البته دا حقالو په نزد باندي په منقوله شیانو کی هغه شیان چی له یوه خایه بل خای ته وړل کیدلای شي قبضه لازمه ده ، اود غیر منقوله شیانو خرخلاو ترقضی دمخه هم جائز دي . (۲)

{ ج: - دکمیشن کاربار کولو شرعی طریقہ }

مسئله: - پدی زمانه کی دخريد و فروش دپرداسي صورتونه مروج دي چي هغه دایجنټانو په وسیله ترسره کیژی ، دکمپني او کارخاني ایجنټ معاملی خلاصوي ، اوبیا پردي کمیشن اخلي ، پوښتنه داه چي دکمیشن ایجنټ لپاره دغه ډول کمیشن خوړل جواز لري اوشرعاً دغه مزدوري جائزه ده که نه ؟ امام بخاري رحمه الله تعالی په دغه لړکي یومستقل عنوان قائم کړيدي ، اونقل کړي دي : چي دابن سيرين ، عطاء ، ابراهيم نخعي او حسن بصري رحمهم الله تعالی په ډول دلوري درجي علماؤ کرامو هم دایجنټ کمیشن جائز بللی ده ، له ابن عباس رضی الله تعالی عنهما څخه نقل شويدي چي یوکه یو څوک یو چاته ټوکر (رخت) ورکړي ، او ورته ووائی چه دا ټوکر خرڅ کړه ، دومره پیسې ئي زمادي ، که دي په اضافه پیسو خرڅ کړه هغه ستادي ، پدی کی باک نشته ، غالباً امام بخاري رحمه الله هم دغه روا بولي ، ځکه چه وروسته ئي پنخپله درسول الله صلی الله علیه وسلم له هغه حدیثه استدلال کړيدي چي فرمائی (المؤمنون عند شروطهم) هر مسلمان لره پنخپلو شرطو اومعاهدو قائم اوسیدل پکار دي ، یعنی دایجنټ اومالک په مابین کی چه خبري معلومي شويدي پکار دی چه دواړه په هغه قایم اوسی . (صحیح البخاري کتاب الاجاره باب اجره المسمرة) . پس ایجنټ کمیشن یعنی

۱ شرح نووي علی مسلم ج ۲ ص ۵۰ .

۲ فتح القدیر ، ج ۶ ص ۳۸۰ .

دلال لره اجرت جائز دی خو پدی شرط چه ددلال حیصه مقررہ او متعین وی، مثلاً لس روپی به دلال وی، او یا بی د فیصدی په اعتبار سره حیصه متعین کری یعنی مثلاً دري فی صده به دا دلال وی، لیکن دلال ته داسی ویل چه پدیکی به ما مثلاً اتیا روپی وی، اونوری مابقی روپی به ستا وی دغه صورت جائز ندي، ځکه چه ددلال حیصه مقررول اومتعین کول ضروري دي. لبتہ دخلورو امامانو په مابین کی پدی هکله اختلاف شته، د سیدنا امام مالک رحمہ اللہ تعالیٰ په نزد دسامان په خرڅولو کی اجرت ټاکل جائز دي پدی شرط چي دخرڅولو لپاره ئی څه موده هم ټاکلی وی، که دسامان مالک وواتي چي ته داسامان خرڅ کره ددي په بدله کی تاته یو درهم درکوم، یا په هرسل (۱۰۰) دینارویوڅه پیسې وټاکي دا جائز دي، دغه رایه دامام احمد رحمہ اللہ تعالیٰ هم دي، ابن تین رحمہ اللہ تعالیٰ لیکلي دي چي که موده وټاکل شي چي په دومره مدي کی به ئی خرڅوي دا یجنت نفع (اجاره) ده، که ئی څه موده ټاکلی نوي د فقه (مالکی) په اصطلاح کی (جعل) دی، ابو عبدالمالک رحمہ اللہ تعالیٰ لیکلي دي چي دا په عرف پوري اړه لري که څه هم پدی کی مزدوري واضح نه ده، ملگر دخلقو دتعامل یعنی پردي دعمل کولوله کبله دا جائز بلل شویدی (لکن جوزت لما مضی من عمل الناس علیه، ^(۱)) که څه هم دامام ابوحنیفه رحمہ اللہ تعالیٰ په مسلک دکمیشن ایجنت دکارو بار ځینی صورتونه داسی دي دجوازله دائري نه وتلي دي، بعضواحنافو پدی موجوده زمانی کی دکار بار زیاتوب په اړتیا دمالکی فقهاؤ په رایه دي فتوی ورکړيدي، دعلمائی احنافو رحمهم اللہ تعالیٰ دا اصول دی چه یوشنی په بل خرڅول هلته روا کیری چه اول ئی پخپله قبض (وصول) کړي. ^(۲)

^۱ (عمدة القاري ج ۱۲ ص ۱۳)^۲ بداية المحي ج ۲ ص ۱۴۴

الفصل الاول ما يشترط فيه قبض) وجه نى داده چه رسول الله صلى الله عليه وسلم دمال وصولولونه بغير دهغى خرخولو منعه كړيدى، موطا امام مالك كى دحضرت عبدالله بن عمررضى الله تعالى عنهما نه نقل دى چى يوخاى نه بل خاى ته داوړلوشى اول خپل تحويل كى اخستل ضروردى، نو پدى صورت كى به نى په نفع خرخول درست وي، او كچيرى اخستونكى اووانى چه مال خپله لارنى (موتر) كى پورته (بار) كړه او يوسه، پس هر كله چه اېجنټ دامال به بتهى (كدام) كى جدا نكړو يعنى قبض نى نكړو اونىغ په نيغه اخستونكى ته اورسيدونوداسى كاروبار صحيح نه دى، كله داسى هم كيرى چه اېجنټ صرف خريدارتباراوي، اوددى خدمت په بدله كى ورته سودگريه سلو پسى خه نفع وركوي، نودا صورت هم رواشو خكه چه دمخت، خدمت اومشقت بدل اخلى، لكه چه ددى دنارواكيدوهيخ وجه نه شى جوړيدل. (۱) والله تعالى اعلم بالصواب.

{د:- دنقدو په نسبت په قرض باندي په زياتوروپوسره دبیعی حکم}

مسئله:- كه يوسري يوشى من او ياكلو په نقدو روپوباندي مثلا په سل (۱۰۰) روپى خرخوي، او په پور (قرض) باندى يى په يوسلوپنخوس (۱۵۰) روپى خرخوي، دا عقد جائزده پدى شرط چه دغه بل سرى به په هغه مجلس كى داخبره واضحه كوى، چه يائى اوس روپى دركوم، اويائى په قرض اخلم يوه مياشت وروسته به روپى دركوم، اودايومن شى ماپه يوسلوپنخوس روپو ماقبول دي، اوداخبره به مجهوله نه پريږدى، خكه چه بيابيعه فاسده گرخي، يعنى داسى به نه وائى چه يابه نى فى الحال سل روپى دركرم اويابه نى يوه مياشت وروسته يوسلوپنخوس روپى دركرم، خكه چه پدى صورت كى جهالت په ثمن (روپى) كى راغى. (ففى الهندية جهالة المبيع او الثمن مانعة

جواز البیع . (۱) او هر چه زیادت د قیمت دمبیعه راغلي، لوجه داجل او نیته څخه راغلي دهدا جائزده علامه ابن نجیم رحمه الله تعالی لیکي (لان للاجل شبهاً بالمبيع الا ترى انه يزاد في الثمن لاجل الاجل . (۲)

{ه:- غبن فاحش د صورت توضیح}

مسئله:- غبن فاحش مکروه دی که څخه هم شریعت دگتی لپاره څه خاص مقدارندی معلوم کړی، مگردومره گته چه د غبن فاحش په درجه کی راشی مکروه ده، د غبن فاحش مطلب دادي چه یوه شی په بازار کی په معلوم نرخ خرڅیږي مگر یو څوک ئی په بیخی ډیره زیاته گته خرڅ کړی، شریعت ددی مخالف دي، پدی هکله شاه والی الله رحمه الله تعالی لیکلي دي چي د تجارت گته دوه صورتونه لري، یو داچی دمحتاج له اړتیا او ضرورت څخه فائده پورته کړي، او یوشی تر خپل نرخ ډیر زیات گران ورباندي خرڅ کړي، دامناسب ندي، دوهم داچی یوه شی په لږه گته خرڅ کړي، او پیسی ئی ژر په کار راوړل شي، دگتی دغه دویم صورت اوشکل دمدنی غوښتو نوسره سم دي، او برکت هم لري. (۳)

﴿ نهم بحث: دخیار شرط، خیار رؤیت، او خیار عیب حکمتونه ﴾

{الف:- دخیار شرط مهم صورتونه}

مسئله:- خیار شرط په بیعی کی خرڅونکی او اخستونکی دواړولره شرعاً جائز دی دخیار شرط لپاره یو څو لاندني صورتونه دی:-

(۱) که یو عقد کوونکی داووائی چه ماته اختیار دی دخوورخوچی معلومی بي نکړی یا همیشه دپاره ماته اختیاروي، دا خیار شرط په اتفاق سره فاسد دی.

^۱ الهندی، ج ۳ ص ۱۲۲

^۲ بحر الرئق، ج ۶ ص ۱۰۰

^۳ حجة البالغة، ج ۲ ص ۲۷۱ البیوع المنهی عنها.

(۲) کہ یو عقد کروونکی داووائی چی مانه ددریوورخویادکم ددریوورخو
اختیاردی، داخیار شرط په اتفاق سره جائز دی.

(۳) کہ یو عقد کروونکی ددریوورخونہزیاتو معلوموورخوخیار شرط شرط
کری، مثالیوه میاشت دوه میاشتی خیارشروط وغورای، دا دریم صورت
اختلافی دی دامام اعظم اوامام شافعی رحمہما اللہ تعالیٰ په نزد دخیار شرط
جائزندی. اود صاحبینو اوامام احمد رحمہم اللہ تعالیٰ په نزد دخیار شرط جائز
دی، خوچہ مدہ معلومہ وی. دامام مالک رحمہ اللہ تعالیٰ په نزد دومرہ مدی
پوری صحیح دی په کومہ کی چہ میعی لره اختیارول ممکن وی، اودامدہ
داختلاف داشیاء په لحاظ سره مختلفه وی. (۱)

{ ب: - عقد کونکو په خیارشروط کی دصلاحیت توضیح }

مسئلہ: کہ په بیعہ کی خیارشروط خرخونکی لره وه نومبیعہ به په دی صورت
کی دخرخونکی دملک خخہ نه خارج کیږی، خکہ چہ بیعہ هغه وخت پوره
کیږی کله چہ دجانینو رضا ورباندی حاصله شی، نودخیارشروط سره به بیعہ
تامہ نوي، همدا وجه ده چہ اخستونکی ته په میعہ کی دتصرف حق نیشته،
اوس کہ اخستونکی په اجازت دخرخونکی په میعی قبضہ اوکره، اوپه مدہ
دخیارشروط کی هغه هلاکه شوه، نوپه اخستونکی به دمبیعی بدله لازم وی،
یعنی کہ میعہ قیمتی وه نوقیمت به یی ورکوی، اوکہ مثلی وه نو مثل به یی
ورکوی، اوکہ خیارشروط اخستونکی لره وه نو میعہ به دخرخونکی دملک
خخہ اوخی، پس کہ دغه داخستونکی په قبضہ وه او هلاکه شوه، نو په
مقابلہ درویی کی به هلاکه کیږه. (۲)

مسئلہ: - کہ عقد کونکو کی کوم یونفر لپاره خیارشروط وه، که دغه نفر بیعہ

^۱ هدایہ مع الزیادۃ ج ۳ ص ۳۴.

^۲ مختصر القدوری ص ۹۱.

نافله کره نو بیعه به نافله او تکمیله شی، اگرچه بل ملگری ترینه
 نوی، لیکن که دبل په عدم موجودگی کی نی بیعه فسخ (رنگه) کره، نو د شرط
 (رحمهما الله تعالی) په نزدبه بیعه فسخ نوی ترخوچه بل عاقدته په مده دخیار شری
 کی ددی فسخ دبیعی خبرورنکری شی، اوفتوی هم پدی قول بانندی ده.
 {ج: - دخیاررؤیت توضیح}

مسئله: - خیار شرط: - پس دنالیدلی شوی شی اخستل جائز دی، او دلیدونه
 پس اخستونکی مختار دی که دغه شی اخلی او که بی نه اخلی، اگرچه دلیدونه
 نه وړاندی راضی شوی هم وی دایمه ثلاثه و په نزد بانندی، البته دامام شافعی
 رحمه الله تعالی په قول جدیدکی دنالیدلی شوی شی په اخستولو سره عقد بیعی
 باطل دی یعنی عقد نه صحیح کیږی، او بل طرفته خرخونکی ته دنالیدلی
 شی په خرخولو کی خیار رؤیت نیشته، مثلاً چی چاته په وراثت کی څه شی
 پاتی شوی وه، اوده دغه نالیدلی شی په چاخرخ کړو، نوبیا دلیدلونه پس ده
 ته د ماتولو دبیعی اختیار نیشته. او امام اعظم رحمه الله تعالی علیه هم دی قول
 ته رجوع کړیدی. (۱)

مسئله: - دلیدو په سلسه کی دتولی مبیعی لیدل ضروری ندی، بلکه دومره
 حصه لیدل هم کافی دی په کومی سره چه دبیعی حال معلوم شی، نو د کیلی
 وزینی شی دپیری ظاهری سطح لره لیدل، دنغبنستی جامی (کپری) ظاهر لره
 لیدل، دوینخی یا غلام مخ لره لیدل، دسورلثی (آس) خراوقچر وغیره مخ
 اوشاته دوراه حصی لره لیدل کفایت کوی، نو په دغه منحنیو لیدلو سره به
 بی خیاررؤیت بی ختمیږی، ځکه چه دبعضی مبیعی لیدل گویا دتولی مبیعی
 لیدل دی، البته که په پیری دننه ناقصه غله رابنکاره شوه، البته دواپس کولی

^۱ مختصر القدوری ص ۹۲

^۲ مختصر القدوری ص ۹۲

لهم بحث: دخیارونه حکمتونه

۴۵

درهم فصل: دبیعی مسائل

خودخیاررؤیت په وجه نه، بلکه دخیارعیب په وجه سره، پس شی ده کومو شیانو په افرادو کی چی تفاوت وی په دغو کی به هله ساقط وی چی ټوله مکمله یی اووینی. (۱)

{ د: - مبیعی لره وکیل او یا دقاصد لیدلو حکم }

مسئله: - دامام اعظم رحمه الله تعالی په نزد داخستونکی وکیل مبیعی لره لیدل داسی دی لکه چی موکل پنخپله دغه مبیعه لیدلی وی، چی اوس یی اخستونکی یعنی موکل دغه شی لره دلیدونه پس دخیاررؤیت په لحظ سره نه شی واپس کولی، هان که څه عیب پکی رامعلوم شو نو اوس یی واپس کولی شی، ولی چی دخیاررؤیت په ساقط کیدلو سره خیارعیب نه ساقط گیری. که داخستونکی قاصد (استازی) مبیعی لره ولیدل، نودده لیدل داخستونکی دلیدلو پشان ندی یعنی اخستونکی ئی دلیدونه پس واپس کولی شی، البته د صاحبینو او ائمه ثلاثه په نزد وکیل او قاصد دواړه په عدم اسقاط دخیاررؤیت د موکل (مشری) په سلسله کی برابر دی یعنی خیاررؤیت یی ساقط ندی. (۲)

{ ۵: - درانده دبیعی حکم }

مسئله: - درانده اخستل خرڅول صحیح دی، اگرچه دغه مادرزاده پرونه نوي، ځکه چه دیناو پشان دغه هم مکلف ده، او دخريدفروش ته محتاج دی، دامام شافعی رحمه الله تعالی په نزد مادرزاده پرونه اخستل خرڅول اصلا جائز ندی. بیا که ده مبیعی لره په لاسو مسحه کولو سره اولیدله، یائی بوئی کره، او یائی وڅکله، نو پدی سره ورته دمبیعی حال معلوم شو، نودده خیاررؤیت به پدی سره ساقط شی، او کوم شیان چی په لاسو وهلو، بوئی کولو، او څکلو سره ورته حال دمبیعی نه معلومیدلو، نو پدی صورت کی به

^۱ هدایه، ج ۳ ص ۴۱.

^۲ هدایه ج ۳ ص ۴۲.

دوهم فصل دهم مسائل ۴۶
 نهم بحث: دخیارونه حکمونه

دمیمی داوصافو په ذکر کولو دسره به ئی خیاررؤیت ساقط شی، او که
 دوصف بیانولونه پس نابینا بیناشو، نوده ته به خیاررؤیت (لیدل) حاصل
 نوي، ځکه چه عقد ددینه وړندی تمام شویدی، او که یوینا سړی څه شی
 نالیدلی واخستولو، او بیادغه نابیناشو، نودده اختیار به بیان داوصافو طرفته
 وړمنتقل کولی شی. (۱)

{ و:- دخیارعیب توضیح }

مسئله:- خیانت او عیب پټول په میعه کی حرام دی، لکه حدیث شریف
 راغلی دی: چاچه میعه خرڅه کړه عیب ئی ورته بیان نکړو همیشه دالله
 تعالی په غضب کی وي یا همیشه ملامتکی ورباندی لعنت وائی. (۲)

مسئله:- کچیری یوسرپوشی خرید کړی او بیائی مارکت ته یوسی هلته په
 دی کی کوم عیب قدیم چی موجودوه هغه ظاهرشو، او اخستونکی پدی
 عیب باندی پوهه نه وه، چه کله ئی مارکت ته یی یورو او تجارو ورته وویل
 چه داشی خو خراب ده، بیا هلته حکومت یا بلی ادارئی هغه شی خپلی قبضی
 کی راوستولو اوضبط ئی کړو، نو که په دی صورت دوو شاهدانو پدی
 شاهدی وکړه چه داغه عیب پخوانی ده، د اخستونکی سره دغه غیب نوی
 نه دي پیداء شوي، خرڅونکی پدی اقرار وکړو چه صحیح ده غه عیب زما
 په لاس کی دپخوانی نه پدی شی کی موجودوه، نو پدی دواړو صورت ئی
 اخستونکی حق درجوع د نقصان علی البائع لری، پدی معنی چه مثلا
 اخستونکی د خرڅونکی څخه دغه شی یومن مثلاً په لس زره (۱۰۰۰۰)
 واخستو کوم وخت چه دپدی شی کی عیب ظاهر شو نو په اته زره
 (۸۰۰۰) یومن مثلاً خرڅیده، نو اخستونکی اوس پدی خرڅونکی دا حق

^۱ الفتاوی الشامیه ج ۴ ص ۷۶ مع الزیاده.

^۲ التسهیل الضروری المسائل القدوری، ص ۱۶۷.

لری چی صرف دوزره (۲۰۰۰) روپی دده خرخونکی څخه واپس واخلي. لکه صاحب الهدایه فرمائی (ومن اشتری عبدا فاعتقه امانت عنده لم اطلع علی عیب رجع بنقصانه اه. (۱)

مسئله: - که یو خرخونکی په اخستونکی یوشی خرڅ کړیوه، او اخستونکی ته ئی وونل وه چه پدی کی که څومره عیبونه وی سره دهغه عیبونو یی په ستا باندي خرڅوم، اوهمچنان که بیاوروسته هم کوم عیب پکی ظاهرشو، نوزه بیا هم بیعه نه فسخه کوم، او که اخستونکی پدی صورت کی دعواد فسخه کیدلو دبیعی وکړه، نو که خرخونکی سره دوه شاهدان وی چه سره دعیونومی په ستا باندي قبوله کړیدی، نو اخستونکی حق دفسخه دبیعی نلري، او که خرخونکی شاهدان نه لری نو بیا به خرخونکی ورته قسم وکړی، نوبیعه به صحیح شی. علامه حصفکی رحمه الله تعالی فرمائی ویصح البیع بشرط البراءة من کل عیب وان لم یسم ویدخل فیہ الموجود والحادث بعد العقد قبل القبض فلا یرد بیع. (۲)

{ ز: - دعیب نه دصلح شرعی طریقہ }

مسئله: - صلح داعیب نه جائزده یعنی که مبیعه عیب ناکه ثابته شوه، اخستونکی ته هغه عیب معلوم شوه کوم چه پخوانی عیب ؤو، او خرخونکی نه ؤو بیان کړی شوی، نو بیاوروسته صلح یی سره وکړه اودمبیعی یی قیمت څه اندازه ورته کم کړو، او یا یوبل شی یی په عوض دهغه کی ورکړو، نو دا صلحه جائزه ده، البته که اخستونکی صلحه ورکړه چه مبیعه دی واپس کړه زه به څه اندازه روپی درکړم دا صلحه جائزندی، ځکه چی دغه درشوت څخه سوا بله وجه نلري. علامه حصفکی رحمه الله تعالی فرمائی

۱ الهدایه، ج ۳ ص ۳۷.

۲ الفتاوی الشامیه، ج ۴ ص ۱۰۶.

درهم فعل دبی مال
 ۲۸
 لهم بحث: دخیارونه حکمتونه
 وجد المشرى بمشرى عیباً واراد الرد به فاصطالحا علی ان یدفع البائع
 الدارهم الی المشرى ولا یرد علیه جاز وعکسه .. الخ (۱)

مسئله: - کوم سری چه په میعه کی عیب اوموئی ده ته اختیارشته، چه که
 تولی روی ورکوی او هغه شی اخلی، او که هغه شی ورته واپس کوی،
 ځکه چی دمطلق عقد مقتضی داده چی باند میعه دعیب نه پاکه وی، البته
 دخیار عیب په خوشرطونو پوری مقیددی، اول داچی عیب به دخرخونکی
 سره پیداء شوی وی، داخستونکی سره به نوي پیداشوي. دوهم داچی
 اخستونکی ته داخستو په وخت به داعیب معلوم نوي. دریم داچی دقبضی
 په وخت هم ده ته عیب معلوم نه وه. څلورم داچی اخستونکی به بلامشقته
 په ازاله (لیری) کولو دعیب باندي قادر نوي. پنځم داچی ددی عیب نه یاد
 تولو عیبونه به دبرأت کولو شرط نوي شوي. شپږم داچی دفسخ کیدونه
 وړاندي به دغه عیب زوال پذیر نوي. (۲)

{ ح: - مالک داجازت نه بغیر دیوشی دبیعی حکم }

مسئله: - که یونفردبل چا شی لره دده داجازت نه بغیر خرڅ کړو، نومالک
 یې ته اختیارشته که غواړی بیعه دی نافذه کړی، او که غواړی بیعه دفسخ
 کړی، اومالک دبیعی دنافذه کولونه مخکی اخستونکی لره په میعه کی د
 تصرف کولو حق نشته، خواه ده میعه قبضه کړی وی او که نوي کړی، او که
 مالک دده په قیمت قبضه کړی وه، نودغه داجازت دبیعی دلیل دی، لیکن
 مالک ته دنافذ کولو اختیار هغه وخت دی کله چه څلور شیان پخپل حال باقی
 پاتی وي، یعنی یوخرخونکی، دوهم اخستونکی، دریم مالک، څلورم میعه،
 پدی صورت کی وروسته اجازت په منزله دوکالت سابقه وی، اوخرخونکی

^۱ الفتاوی الشامیه ج ۳ ص ۱۰۹.

^۲ هدایه، ج ۳ ص ۴۴ مع الزیاده.

به در کابل په درجه کی وی. (۱)

مسئله: - که یو سړی په ماشوم او غلام باندی کوم شی خرڅ کړو، اویائی یو شی ترینه واخستلو، نو پدی صورت کی خیاروالی د ماشوم او غلام ته دی، یعنی که والی نی خوښه وي نو بیعه د نافذه کړی کچیری مصلحت پکی وی، او که مصلحت پکی داوه چی بیعه فسخه کړی نو بیعه د فسخه کړی، ځکه چه ماشوم او غلام او مجنون په شریعت غراء د تصرفات څخه ممنوع دی. (۲)

{ط: میعی کی د تصرف نه وروسته په پخوانی عیب باندی دخبر کیدلو حکم}

مسئله: - که یونفر اخستلی رخت (کپړه) قطع کړه، یائی وگنډله، اویائی رنگ کړه، اویا یی ستوان په غورو کی اولړل، بیا وروسته په پخوانی عیب باندی خبرشو، نو اخستونکی په اندازه د نقصان دعیب روپی د خرڅونکی نه واپس کولی شی، البته میعه نه شی واپس کولی، اگر چه خرڅونکی او اخستونکی دواړه په واپس کولو د میعی باندی راضی هم وي، ځکه دلته داخستونکی د طرفه په اصل د میعه کی زیاتی شویدی، اوس که ددی زیاتی سره واپس شوه نو شبه درېوا (سودا) لازمیږی، او بغیر د زیادت نه واپس کول خو ممکن نه دي، ځکه چه دغه زیادت چی په میعه کی راغلی ده دغه جدا کیدای نه شی. فامتنع الرد اصلا. (۳)

{ی- میعه کی دننه دزیاتی ددوه قسمونه توضیح}

مسئله: - په میعه کی دننه دزیاتی دوه قسمونه دی: منفصله او متصله؛ بیاد متصله دوه قسمونه لري یو هغه چه داصل نه پکی پیداوی لکه لویدل، خربیدل، او حسن جمال اوداس نور، دا قسم زیاتی په صحیح قول باندی

^۱ الفقه الحنفی وادلته ج ۲ ص ۳۵.

^۲ التسهیل الضروری لمسائل القدری، ص ۱۹۵.

^۳ هدایه، ج ۳ ص ۴۶.

دواپس کولو دمیعی نه مانع لوی، ځکه دزیاتی تابع محض وی، دواپس
 قسم زیاتی هغه ده چه داصل نه پیدا لوی لکه رخت (کپره) لره لره
 ورکول، یا دی رخت لره گندول، یا سوانو په غوروکی لول، یا په زمکه له
 عمارت (آبادی) جوړول، اوداسی نور پس ددی قسم زیاتی حکم دادی،
 دا قسم زیاتی به په اتفاق سره دواپس کولو دمیعی نه مانع وی.
 همداراز دزیادت منفصله هم دوه قسمونه دی یو هغه کوم چه داصل نه پیدا
 وی، مثلاً بعضی خاروی وه چه بچنی ترینه پیدا شول، یا ترینه پشی (شودی) حاصل،
 شوی، اویاتی په بدان وری راغلی، یا خو درخته (اونه) وه میوه نی اونیوه، دا قسم
 زیاتی دواپس کولو دمیعی نه مانع وی، ځکه چه پدی قسم زیاتی کی په مقص
 دی طور دفسخی دیعی څه خاص وجه نیشته ځکه چه پدی باندی عقد دیعی
 وارد شوی ندی، همدارنگه دی لره په تابع جوړولو سره هم فسخ کول د عقد
 دیعی هم نه شی کولی، ځکه چی طبیعت یی په انفصال سره ختم شویدی، او
 دزیاتی نه بغیر تنها په اصل کی فسخ خو ممکن ندی، ځکه چی بیا لدینه سودا
 جوړیږی. ځکه چه اخستونکی کله میعه واپس کوی او رویی اخلی نو دسره
 به داضافه بغیر دعوض نه پاتی شی، دوهم دا چی کوم داصل نه پیدانوی لکه
 کسب دغلام او ذاتی آمدنی او کتبه، دا قسم زیاتی واپس کولو دمیعی نه مانع
 ندی، ځکه چه کسب په هیڅ حالت کی هم مال ندی، ځکه چه دادمنافعه نه
 حاصلیږی او منافع جزء دعین ندی، پس پدی صورت کی عقد بلازیاتی به
 په اصل دمیعه کی فسخه وی، اود اخستونکی سره به داضافه شی مفت
 پاتی شی، کسب چونکه جزء دمیعی ندی نو پدی وجه سره به دی مالک په
 عوض دروپیونه شی، بلکه مالک به بالضمنان شی دغه ربحه (گتبه) رواده.
 لما روی ان النبی صلی الله علیه وسلم قضی ان الخراج بالضمنان (کما فی الصحیحین) (۱)

{ ک: - مبیعی کی دعیب معلومید لو طریقه }

مسئله: - که یو چاداسی شی واخستو چه عیب (خرابنی) ئی د ماتولونه بغیر نه معلومیده، لکه هگی خبربوزه، ختکی بادرنګ او غوزان اوداس نور، نو بیانی دغه شیان مات کرل نو خراب ئی اوموندل، نو اوس به دیته لیدلی شی چه آیادغه خرابی دومره زیاته ده چی دغه شیان قابل دنفعی نه دی، مثلا هگی دننه سخااوخته، اوختکی اوبادرنګ بالکل تریخه وو، اوغوزان ددنه نه بالکل اوچ او خالی وو، نو پدی صورت کی به بیعه باطله وی، اوخستو نکي به دخرخونکی نه پوره روی واپس واخلی، ولی چی دغه شی مال ندی، اومال خو هغه وی چی دکوم نه فی الحال یا په آینده کی ترینه نفع اخستلی شی. کچیری دغه شیان خراب وه خونفع ترینه اخستلی شی، نو پدی دوهم صورت کی اخستونکی مبیعی لره نه شی واپس کولی، مگردا کچیری خر خونکی په واپس اخستو دغی شیان راضی وه، خکه چه ده دهغه حق وه چه پخپله بی ساقط کړیدی. (زیلعی) خکه چه دمبیعه ماتول یونوی عیب دی، کوم چه دفسادپه عیب بانندی ورزیاتی دی او پدی واپس کولوسره دخرخونکی نقصان دی، البته اخستونکی نقصان دعیب ترینه اخستی شی چه ترممکنه حده پوری دجانینو ضرر لیری شی. خلافاً للشافعی و. موژ وایو چه داداسی ده لکه مبیعه چه مثلا خه رخت (توکر) وی، او اخستونکی دغه رخت پریکړی وی اوبیانی ورسته په عیب بانندی خبرشوی وی، چه په دی صورت کی اخستونکی په اجماع سره رجوع بالنقصان کولی شی، نو پدی صورت کی هم رجوع بالنقصان کولی شی. وان حصل التسلیط من البائع... الخ. (۱)

مسئله: - که دمبیعی خه حصه خرابه اوموندلی شی، خودا په کم مقدار بانندی وی، مثلاً په سلو غوزانو کی یواودوه غوزان خراب وو، پس شمس الائمة

درهم فصل: دبیعی مسائل

۵۲

لسم بحث: په مسائلو متفرقو باندی

سرخسی رحمه الله تعالی فرمایي چي دوه دري غواښ خراب او خرابي نواسه حسابانه بيهه جائزه وي، داځکه چي په مبيعه کي داسي معمولي خرابي په عام طور باندی بيخي کمه وي، لکه مثلا په لس منه غله کي دوه چټاکي خاوره راوځي، او که د مبيعي اکثره حصه خرابه وه، نو دامام صاحب په نژدې بيهه جائز نوي، او اخستونکي به پوره رويي واپس ترينه اخلي، ځکه چي پلي صورت کي نئ مال او غير مال جمع کړيدی، او خرڅ کړيدی، دا جائز ندي په النهر الفائق وغيره کي ليکلي دي چه د صاحبينو په نژد د دومره حصي بيهه جائزه څومره چه بڼه وي، او څومره حصه چه خرابه او خيږي ددي خرابي حصه بيهه صحيح ندي نور جوع بالنقصان کولي شي يعني هغه رويي به واپس ترينه اخلي چي منځکي يي ورکړيدی په نهايه او کفايه کي ليکلي دي چه د صاحبينو قول اصح دي. (۱)

﴿ لسم بحث: په مسائلو متفرقو باندی تبصيره ﴾

{ الف: - د مسجد شريف زياتی سامان خرڅولو حکم }

مسئله: - د مسجد شريف زياتی سامان خرڅول هلته جائز دي چه د مسجد شريف په کار کي نه راځي، او قيمت به ئي په مسجد شريف کي بيزنه لگولی شي، البته کچيري داسي سامان وي چه دهغي تعلق د مسجد شريف آبادی سره وي لکه دروازی کادر او داس نور، او مسجد شريف هم آباد ده مونځ پکي ادا کيږي، نو د داسي مسجد شريف سامان بل ته منتقل کول روا نه دي. او کچيري مسجد شريف آباد نوي او مونځونه هم پکي نه کيږي، او خلق هم لدی ځايه تللی وي نو د مسلمانانو په اتفاق سره د مسجد شريف نختي دروازی او داسي نور سامان دا دي مسجد شريف ښکولو په صورت کي بل مسجد شريف ته انتقال کيدای شي، البته د مسجد شريف بل قسم

لسم بحث په مسالو مفصله تصويره

۵۳

درهم فصل: دبیعی مسائل

سامان هغه دی چه بیخی دمسجد شریف په آبادی کی داخل نوی لکه
پچانی اوداسی نورآلات دمسجد شریف، لوکچیری دغه ته په دی مسجد
شریف کی ضرورت نوی اوزیات وی، لوبیا په بل مسجد شریف کی نی
استعمال جائز دی پدی شرط چه دوقف کونکی اجازت به هم وی (۱)

{ ب: - حق تلفی په صورت کی رشوت ورکول حکم }

مسئله: - ددفع مضرت دپاره رشوت ورکول جائز دی، احکام القرآن ابوبکر
رازی یعنی چه درشوت نه ورکولو په صورت کی حق تلفی مظلومیت مظنون
وی، نورشوت ورکول حرام ندی هان دبل دحق تلفی په صورت کی به
کنهگاروی، (۲)

{ ج: - دقبضی نه وړاندی دشیانو خرخولو حکم }

مسئله: - که یوچاداسی شی واخستولو چی نقل کول اوورل یی کیدلی شو،
نودقبضی نه وړاندی دادی شیانو منقولو بیعه په اتفاق سره جائزه نه ده،
خکه چه په حدیث کی ددیمانعت راغلی دی. (ابوداود اوایمه مت) او
همدرنگه دامام محمد امام زفر اوامام مالک رحمهم الله تعالی علیه په نزدبه
غیرمنقولو شیانو یعنی دزمکی بیعه هم جائزه نه ده، خکه چه حدیث شریف
کی دنهی مطلق ذکرشوی دی، اودشیخینو رحمهما الله تعالی په نزدجائزده،
خکه چه په حدیث کی دنهی علت دادی چه دهلاکت دبیعی په صورت
کی دفسخی دبیعی احتمال شته، اودا په غیرمنقولو شیانو کی لکه زمکی نو
په دی صورت کی دفسخی دبیعی احتمال نادردي. (۳)

۱ ردالمحتار ج ۳ ص ۴۷.

۲ ردالمحتار، ج ۲ ص ۳۰۳.

۳ مختصر القدوری، ص ۹۷.

{ ۵: - دقرض بحر خول ناروا دی }

مسئله: - دقرض بحر خول ناروا دی: پس ددی صورت کله داسی کمپری چه مثلا دزید خه رقم یعنی پنځه سوه روپي عمر و سره پاتی وي، هغه نی په بکر باندی په پنځوسوه روپي یا په کمو روپو باندی خرڅ کړي، نو دادواړه صورت تونه ناروا دی، پس رومی صورت کی سر په سر بحر خول یعنی پنځه سوه په پنځوسوه روپي بحر خول ځکه ناروا دي چی دارویی په روپی بحر خول دي، چی د فقهی په اصطلاح کی ورته بیع صرف ویلی شی. دامعامله لاس په لاس کول شرعاً ضروری وي، که یو طرف نه نقدی اوبل طرفته ته قرض وی لکه پدی صورت کی نولدینه دسودا صورت جوړیږی، چه دینه روپو بالنسیه وئیل شی، دوهم صورت ځکه ناجائز دی چه له یوخوا مکمل پنځه سوه روپي ورته خودلی شوی دي، اوله بله خوا کمی روپي ورته مقرری شویدی، چه په روپوسره یی خرڅه کړی او په هغی کی کمی بیشی وی نو دا هم دسودا صورت دی چه د فقهی په اصطلاح کی ورته ربوالفضل وائی، او همداراز غتی روپی په کوچنی روپی د ماتولو اوبدلولو په صورت کی کمی زیاتی کول هم دسودا صورت دي، یعنی ربوالفضل دی چی ناروا دي. (۱)

{ ۵: - اقاله (رنگول دبیعی) حکم }

مسئله: - اقاله (رنگول دبیعی) په مثل درویی اول جائزه بلکه مستحبه ده، ځکه چه د نبی کریم صلی الله علیه وسلم ارشاد مبارک دی: چه څوک خیمانه ته دده دبیعی اقاله او کړی حق تعالی به په قیامت کی دده لغرش معاف کړی. (ابن ماجه اورده البغوی فی مصابیحه). په شرع کی اقاله بیعی لره ددی دثبوت نه پس زائل اوماتولو ته وائی، که په اقاله کی یی درویی اولونه دزیاتی روپی یا کم روپی شرط کړی، اومبیعه په خپل حال باقی وه،

منقوله کی مخکی دقبض نه وه، یا په بیعه مقائضه کی یو دعوضین دهلکت نه وروسته وی، نو اقاله به دفسخ په حکم کی وی، او که داهم متعذر شی په دی شان سره چی په اشیاءو منقوله کی دقبضی نه مخکی اقاله په روپی اول سره چی دازیاتو یا کمو روپیو په عوض کی وی، یاد بل جنس په عوض کی وی، او یا غیر مقائضه کی داسبا بودهلکیدونه وروسته وی، نو اقاله به باطله شی. دامام محمد امام زفر او امام شافعی رحمهم الله تعالی په قول جدید کی اقاله فسخ دبیعه وی که په روپی اول سره وی، یاد دینه په کمو روپیو سره وی، او که فسخ کیدل بی متعذر وو نو بیابه اقاله په حکم کی دبیعی وی، او کچیری داهم نه شو کیدلی نو اقاله به باطله شی. او همداراز دروپیو هلاک کیدل دصحت دا اقالی نه مانع ندی بلکه اقاله جائزده، البته دبیعه هلاک کیدل مانع دصحت دا اقالی دی، ځکه چه فسخه دبیعی قیام دبیعی غواړی، او بیعه خو په مبیعی پوری قائمه وی، نه چی په روپی پوری، او کچیری دبیعه څه حصه هلاک شوه نو په باقی کی به اقاله جائزده ځکه چه په باقی کی تر اوسه پوری بیعه قائمه ده. (۱)

{ ز: - تول او پیمانہ کی کمی کولوسزا }

مسئله: پوره پیمانہ او تول کول تجارو لپاره لازمی دی، ځکه چه له یوی خوا په پیمانہ او تول کی کمی اسلام ممنوع کریدی، بله خوا دا چی په تولنه کی اعتماد او باور ختموی، او تجارت ته تاوان رسوی، الله تعالی فرمائی، خرابی، (هلاکت) دی دهغو کمو ورکوونکو لپاره، چه هر کله یو شی په تول او پیمانہ اخلی نو پوره ئی اخلی، او چا ته ئی په تول او پیمانہ ورکوی نو کم ئی ورکوي. آیا دغه خلق دا گمان (فکر) نکوي چی دیوی لوی درندی ورخی لپاره به دوی راپورته لکړی شی. (۲)

۱. ملخص هدايه، ج ۳ ص ۷۲

۲. (المظننين سورة، ص ۱ - ۲۰۰ هـ ۳۰)

{ ح: دکفار سره معامله }

مسئله: - دکفاروسره معاملات دخرید و فروش جائز دي، البته خوږی کافرچه اسلامي ملک بالندی حمله و کړی، او یا هغه کفارچه خپل ځان ته مسلمان راي، نودداسی کفاروسره خرید و فروش کول جائز دي. (۱)

{ ط: - د پگړی شرعی حکم }

مسئله: - په دغه زمانه دا رواج دی چه مکان یا دوکان څوک په کرایه ورکوي نومخکی ترینه پگړی یعنی څه رقم (روپی) واخلي چه نه یی بیا په کرایه ورحساب وي، او نه یی بیا واپس ورکوي، پس دغه رقم مالک دمکان او مالک ددوکان شي، نودغه صورت یعنی رقم (روپی) اخستل حرام دی، او ورکونکی یی هم د رشوت دگناه مرتکب ده، او همدارنگه دا هم رواج دی، چه کله مالک غواړی چه کرایه دارڅخه مکان یا دوکان خالی کړی، نوکرایه دار دا مالک څخه پگړی یعنی څه رقم (روپی) اخلی، پس دغه رقم (روپی) اخستل هم حرام او ظلم دی، یو حدیث شریف ده ملعون *مَنْ ضَارَ مُؤْمِنًا أَوْ مُكْرِبًا مَشْكُورَةً ج ۲ ص ۵۲۱*، البته که د پگړی یعنی څه روپی په میاشتنی کرایه کی ورحساب وي، نو بیا د صورت جائزه ده. (۲)

{ ي: - دبیعی سلم توضیح }

مسئله: - دبیعی سلم توضیح: - پس دفقهی په اصطلاح کی بیعه سلم یع الاجل بالاجل ته وائی، داجل نه مرادمسلم فیه دی، اودعاجل نه مرادرأس المال دی، اوصاحب مال ته رب السلم، اوعاقد آخر ته مسلم الیه وایی، اومیعی ته مسلم فیه وایی، اوروپی ته یی راس المال وائی، پس په کومو اشیانوکی بیعه سلم جائز دی او پکوموکی جائزه دی؟ نوددی بیعی سلم

(۱) احسن الفتاوی من ۵۳۴ ج ۶

(۲) فتاوی حقایه ص ۲۲۲

قاعده کلیه داده چی دکومو شیانو صفت ضبط کول ممکن وي، مثله دغه شیانو عمده یا ناقص کیدل، اوددوی مقدار معلومول هم ممکن وي، مثله کیلی، وزنی، عددی متقارب المقدار، لکه غلو، دانو، غواذن، هگی، یا پوره کچه بنختی، اوداسی نور یعنی په هر یو داسی شیانو کی بیعه سلم صحیح دی او په کومو شیانو کی چه داخبره ممکنه نوی په دغو شیانو کی بیعه سلم صحیح ندی، پس په حیواناتو اوددوی په اطرافو کی بیعه سلم صحیح ندی، او همدلار په خرمنو کی په شمار لوسره او په لرگیو او گیاه وکی په کیلو لوسره بیعه سلم صحیح ندی، او په جواهرتو او ملغرو کی هم بیعه سلم صحیح ندی. (۱)

{ ک: - دزکوة کنبی به دموجوده بنار قیمت معتبروی نه داخستلو قیمت مسئله: - که یو تجار په یو بنار کنبی یو شی مثلا په یوسلو پنخوس افغانی واخستلو او په بل بنار کنبی په دوسوه پنخوس افغانی خرخوی نودزکاة په مسئله کنبی به دهغه بنار قیمت معتبر وی په کوم کنبی چه ده مال موجود وی مثلاً لا چه په کوم بنار کنبی قیمت دوسوه پنخوس افغانی وی نوزکوة به ددوسوه پنخوس افغانی نه ورکوی، ویقوم فی البلاد الذی المال فيه (۲) که یو چا دبل چا په زمکه کنبی دوکان جوار کرو او په دوکان کنبی دیکوراو المری جواری کړی په دی دیکوراو المریو غیره قیمت کی زکوة نشته البته په پدی دوکان کی چه کوم سامان خرخوی په هغوی کی زکوة ورکول فرض دی، ولافی البدن واثاث المنزل ودورالسکنی ونحوها... وکذلك آلات المتحرفین (۳)

{ ل: - په تجارتي کرایه او ذاتی استعمال والا موټرو کنبی دزکوة حکم مسئله: - کوم کس چه دموترو تاجرو وی اودهغی اخستلو خرخولو کار بار

^۱ ملخصاً مختصر القدری، ص ۱۰۰ (۱)

^۲ (الدر المختار علی هامش ردالمحتار، ج ۲ ص ۲۴)

^۳ (الدر المختار علی هامش ردالمحتار، ج ۲ ص ۸)

درهم فصل: دینی مسائل ۵۹ لسم بحث: په مسائلو منظرلو تبصیره

کری هغه به دموټرو قیمت نه باقاعده زکوة ورکوی، لکونها من اموال
التجارة و سلمها، الزكاة واجبة في عروض التجارة كالثبات ما كانت اذا بلغت
قيمتها نصاباً،^(۱) او کوم کس چه لاری واخلی په کرایه او په اجرت نی
چلوی نو هغه به دمنافعو نه زکوة ورکوی او دلارنی په قیمت کښی به زکوة
رجب نه وی، لانه استغلال کبیوت الکراء کما فی مجمع البرکات رجل
المتري اعيانا منقولة يواجرها مياومة ومشاهرة ومسانهة ويحصل له من
المنقولة مال عظيم لا يوجب الزكاة فيها لانها ليست بمال التجارة الخ^(۲)
و کوم موټر وغيره چه ده ذاتي استعمال لپاره وی په هغه قیمت کښی زکوة
نشته، ولو اشترى قدوراً من الصفر يمسكها ويواجرها لا تجب فيها الزكاة^(۳)
اوپه قسطونو باندي داخستلو په صورت کښی به دغيراده شوه اقساط اندزه
دقرض په حکم کښی وی يعنى دا مقدار به دنصاب نه کم کړی او دباقي
روپو زکوة به اداکوی. ومن كان عليه دين يحيط بماله فلا زكاة عليه وان
كان ماله اكثر من دينه زكى الفاضل اذا بلع نصاباً.^(۴)

{ م:- زر ضمانت، دکرایه کورونو، اودو کانونو کښی دزکوة حکم }

مسئله:- که زيد دبکر نه په کرایه باندي دکان واخستو او بکرورتو دکان
ورکړ، وليکن دکرایي نه علاوه اته زره روپي ضمانت هم طالب کړی، البته
د دکان پریخود لویه صورت کښی به دارقم واپس کولی شی، نو دا اته زره
روپي دزيد دملک نه وتلی نه دی بلکه امانت یا قرض دی او داجاری رقم نه
دی، نو دوصولی نه پس به زيد ددی رقم دتولو تیر شو کلونو زکوة اداکوی.

^(۱) (فتاوی عالمگیری، ج ۱ ص ۱۷۹)

^(۲) (مجموعه الفتاوی للعلامة عبدالحی الکهنوی، ج ۱ ص ۳۶۳)

^(۳) (فتاوی قاضی خان علی هامش الهندی، ج ۱ ص ۲۵۱)

^(۴) (هدایة علی صدرفتح القدير، ج ۲ ص ۱۱۷)

درهم فصل: دهم مسائل

٦

اسم بحث: به مسائل متفرقة نصير

قال ابن عابدين: (قوله ويعتبر ماضى من الحول) اى فى الدين المتوسط لان الخلاف فيه وامام القوى فلاخلاف فيه لمامى المحيط من انه تجر الذكاة فيه بحول الاصل لكن لايلزمه الاداء حتى يقبض منه اربعين درهما واما المتوسط ففيه رويتان الخ (١)

اودا كورونواودو كانونوبه قيمت كنبى زكوة واجب نه دي، البته دهفي دكرايه نه به قاعده زكوة وركولې شي. كذافي خزانه الروايات (لوشترى الرجل دارا وعبدا للتجارة ثم أجره يخرج من ان يكون للتجارة ولو اشتري قدورا من الصفر يمسكها ويواجرها لايجب فيها الزكاة كما فى بيوت الغلة كذافي فتاوى قاضى خان، (٢)

{ ن: - دغرائزونو اولرگو كنبى دغشر حكم }

مسئله: - دغرائزونو ونو (درختو) كنبى عشرواوجب نه دى، وفي محيط المرخسى كل شى يتبع الارض فى البيع بغير شرط فلاعشر فيه (٣). البته ددي غرائزو ونو (درختو) په ميوه جاتو كنبى بعضي وختونو كنبى عشر واجبيرى، ومايوجد فى الجبال من العسل والثمار فيه العشر (٤). دغه شان دكومى ونې خانكه چه دنيزي وغيره دپاره پكاربيرى نودهغي په تنه كنبى عشرنشته، ليكن په دغه خانكه كنبى عشرواوجب دى، لانه قوئمها كائمرات، ومنها ان يكون الخارج من الارض مما يقصد بزاعته نماء الارض وتستعمل الارض به عادة فلاعشر فى الحطب، والحشيش والقصب الفارس لان هذه الاشياء لاتستعمل بها ولاستعمل به عادة لان الارض لاتنمو بهابل تفسد فلم

١ (الدر المختار على هامش ردالمحتار، ج ٢ ص ٣٩)

٢ (مجموعه الفتاوى، ج ١ ص ٣٦٣)

٣ (كما فى تنقيح الفتاوى الحامدية، ج ١ ص ١٠)

٤ (هدايه على صدر فتح القدير، ج ٢ ص ١٩٣)

﴿ دریم فصل: دشرکت پیز ندنه ﴾

﴿ اول بحث: دشرکت مشروعه توضیح ﴾

محترموا دنفس شرکت په مشروعت باندي کتاب الله اوسنته مبارکه دواړه شاهددي، الله تعالی فرمائی: "فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ" الاية. او په یوحدیث شریف کی دی چی رسول الله صلی الله علیه وسلم فرمائی: يقول الله: - انانالث الشریکین مالم یخن احدهما صاحبه فاذاخان خرجت من بینهما. (۱) یعنی تعالی فرمائی چه زه دریم دشر کینووم ترخوچه دوی یوبل سره خیانت ونکړی، اوکله چه هم یو ددوی دخپل ملگری سره خیانت وکړی زه ئی دما بین خنجه ووخم، اوهمدارنگه په مشروعت دشرکت باندي تراوسه پوری تعامل دخلقو جاری دي، اوچاترینه انکارندی کړی، نو اجماع دامت هم ددی شرکت په مشروعت باندي دلیل دی، اوهمدارنگه دی شرکت جواز عقلاً هم ضروری ده چی دغبی اوذکی فقیر اوغنی ټولو ضرورتونه ور سره پوره شی، یعنی غبی اوغنی به مال لري خو تجروبه یی نوي، بل خوا ذکی اوفقیر تجروبه خولري خومال نه لري، پس په دشرکت سره د ټولو ضرورتونه حل او پوره شی. پس شرکت په لغت کی ددوو حصوله داسی خلط کول او یوخی و هل دی چه امتیاز (جلاوالی) ئی باقی پاتی نشی، همدارنگه عقد شرکت هم سبب ده دی خلط دي. اوشرکت په اصطلاح دشرعی کی هغه عقد ته وایی کوم چه په رأس المال اومنفعت دواړوکی واقع وي، اوکچیری شرکت صرف په منفعت کی وی دیته مضاربت وائی، اوکچیری شرکت صرف په رأس المال کی واقع وی دیته بضاعت وائی شرکت پس دشرکت دوه قسمونه دی شرکت املاک یاالملک: دابیاپه دوه قسمه دی یوجبریه ده، اودوهم اختیاریه ده، اوبل قسم شرکت عقود دی.

(۱) (ردالمحتارهای الدرالمختار، ج ۲ ص ۳۹) المستدرک، ج ۲ ص ۶۱.

دويم فصل: دشرکت پيز ندله ۶۳ دوهم بحث: دشرکت املاک احکام

دایا په خپل کورکی په څلور قسمه دی یو شرکت مفاوضه ده، دوهم شرکت عنان ده، دریم شرکت صنایع ده، او څلورم شرکت وجوه ده، چه ددی توضیح به ان شاء الله تعالی په مسائل کی وشي.

﴿ دوهم بحث: دشرکت املاک احکام ﴾

محترموا شرکت املاک دادی چه دوه یازیات کسان په وراثت، خرید، هبه، صدقه، استیلا، او اختلاط اوداسی نورو وجوهاتوپه وجه سره دیومعین شی مالک شی، چه تمیزنی ممکن وي او که غیر ممکن وی. ددی شرکت املاک حکم دادی: چه پدیکي هریو دشر کینونه دبل شریک په حصه کی اجنبی محض دی، پدی معنی چی دهغه بل شریک داجازت نه بغیر شه مضر یعنی نقصانی تصرف پکی نه شي کولي. (۱)

﴿ دریم بحث: دشرکت مفاوضه احکام ﴾

{ الف: - شرکت مفاوضه توضیح }

مسئله: - شرکت مفاوضه دادی چی شریکان په مال کی، په تصرف کی، او په دین کی سره برابر وی. پس شرکت مفاوضه ددوه آزادو مسلمانانو، عاقلانو، اوبالغانو، سړیوپه مینځ کی صحیح کیږی، اودیتته شرکت مساوات هم وائی، همدراز ددی شرکت لپاره داهم شرط دي چه په شریکینو کی هریو شریک دبل وکیل وی، اوهم دده دطرفه کفیل هم وی، چه په اخستی شوی شی کی شرکت واقع کیدلو مستحق شي، پس چی یو شریک کوم شی واخلی دی شی لره دبل په ملک کی هغه وخت داخلولی شي، کله چه ده ته ددی ولایت حاصل وی، اودلته ولایت دوکالت نه بغیرنه شی حاصل کیدلی، اوهمدراز خرڅونکی هر یو د شریکینو څخه مطالبه دروی کولیشی لوجه دکفالت څخه چی دده طرفه کفیل دي، البته بیابه رجوع وکړی کفیل په اخستونکی

^۱ الفقه الحنفی وادلته، ج ۲ ص ۱۰۹.

باندی په نصف (نمائی) دهغه روپو چی ده ادا کړیدی، ځکه دغه دهغه
څخه کفیل دي، په امر دهغه یی دروپی ادا کړیدی. (۱)

(فانده) دائمه ثلاثه ورحمه الله تعالی په نزد شرکت مفاوضه جائزندی حتی
امام مالک رحمه الله تعالی فرمائی چه "لا اعرف ما للمفاوضه" حقانی عفی عنه.
{ ب: - شرکت مفاوضه کی شریکانو لپاره هدیات }

مسئله: - کله چه شرکت مفاوضه وتړلی شی، نو په شریکینو کی چه کوم یو
سری چی څه شی واخلي دغه شی به ددوارو مشترک وي، ځکه چه
مقتضاء د عقد مساوت (برابری) دی، او په شریکینو کی هر یو د بل قائم مقام یعنی
نائب دي، پس دیو اخستل گویا د بل اخستل دی، البته کوم شیان چه په
دائمی ضرورتونو کی داخل دی هغه د دینه مستثنی دي، یعنی دهغه شی
اخذل به شخصی وي، لکه داهل و عیال دپاره خوراک، لباس، اور هائش،
(استوگنی) دپاره کور اخستل، ځکه چه کوم شی د دلالت د حال په ذریعه
معلومیږی هغه دلسانی یعنی زبانی شرط برابروي. (۲)

مسئله: - په کومو شیانو کی چه شرکت مفاوضه صحیح وی لکه دارهم او
دنایر، کچیری په شریکینو کی یو شریک د دغه یوشی په طریقه د هبه یا په طر
یقه د وراثت سره مالک شي، نو پدی سره به شرکت مفاوضه باطل شي، او
شرکت عنان به وگرځی، ځکه چی په شرکت مفاوضه کی لکه څنگه ابتداءً
مالی مساوات شرط دي، دغه شان بقاء کی یی هم مالی مساوات شرط دی،
او د اصورت مذکوره په بقاء کی مالی مساوات نشته دي، البته کچیری به
طریقه مذکوره یعنی په طریقه د هبه یا په طریقه د وراثت سره څه سامان، یاز
مکه حاصله کړی شي نو شرکت مفاوضه به باطل نوی، ځکه چه

^۱ مختصر القدوری، ص ۱۲۶

^۲ مختصر القدوری مع الزیادة، ص ۱۲۶

درهم فصل: دشرکت پیز لده ٦٥ خلورم بحث: دشرکت عنان احکام
پدی کی شرکت مفروضه صحیح ندی نومساوات به بی هم ضروری نوبی (١)

{ج:- دشرکت مفروضه شرایط}

مسئله:- ددراهمو اودنانیرونه سوا په سامان اوزمکه وغیره کی شرکت مفروضه صحیح ندی، لیکن که څوک پدی سامان اوزمکه کی شرکت مفروضه کول غواړی، نو صورت ئی دادی چه دهریودشریکینونه هر یو خپله نیمه حصه دبل دنیمی حصی په عوض بانندی خرڅه کړی، ددینه پس دواړه شریک سره شی، ځکه چه اوس دواړه دعقد دبیعی په ذریعه په قیمت کی شریک شو په شرکت دملک سره، چی یو شریک ته دبل شریک په حصه کی تصرف کول جائز ندی، ددینه پس دعقد شرکت په وجه سره دشرکت ملک شرکت عقد شو، چی اوس هر یو شریک دبل شریک په حصه کی تصرف کولی شی. (٢)

{د:- شریک اختیارات}

مسئله:- هر یو شریک لره جائز ده چه دغه مال په وکالت، مضاربت، امانت، اواجاری سره ئی ورکړی ځکه دغه دافعالو دتجارو څخه دی، اودی آمین دی په مال کی، اوداهم ورته جائز دی چه مفروضه شرکت سره ئی ورکړی، خو په اجازت دشریک خپل سره که ورسره شریک شو، او که بغیر داجازت نه وو نو وگرځید شرکت ددواړو شرکت عنان. (٣)

﴿خلورم بحث: دشرکت عنان احکام﴾

{الف:- دشرکت عنان توضیح}

مسئله:- شرکت عنان صرف متضمن دی وکالت لره نه کفالت لره، یعنی هر یو شریک وکیل کیدای شی، البته ضامن کیدای نه شی، پدی شرکت

^١ الفقه الحنفی وادلته، ج ٢ ص ١١١

^٢ مختصر القدوری، ص ١٢٦

^٣ الفقه الحنفی وادلته، ج ٢ ص ١١١

عنان کی مساوات هم شرط ندي، یعنی برابره څېره ده که په رأس مال او گټه کی دشریکان برابروي، او که په رأس مال او گټه کی یې کمی بیشی وی نو شرکت جائز دی، لیکن که ټوله نفع یې دیو شریک لپاره مقرره شوه بیاد صورت جائز ندي ځکه چه بیا شرکت پاتی نه شو، بلکه د صورت بضاعت یا د قرض شو، یعنی که ټول نفعه د عامل لپاره مقرره شوه نو بیاد قرض ده، او که ټول نفعه د صاحب مال لپاره مقرره شوه نو بیا د بضاعت دی. او امام شافعی او امام احمد رحمهما الله تعالی د عقودو د شرکتونو نه صرف ددی شرکت عنان د جواز قائل دی. (١)

{ ب: - شرکت عنان کی شریکانو لپاره هدیات }

مسئله: - په شرکت عنان کی چی مال د دواړو شریکینو برابروي، او په نفع (گټه) کی یې کمی زیاتی وه، یعنی دیو شریک نفعه زیاته وه، او د بل شریک نفعه کمه وه، نو زموږ احنافو په نزد شرکت عنان یې صحیح دی، ځکه چه کله د معاملي کونکونه یوزیات ماهر او تجربه کاروي، پدی وجه د زیاتی ضرورت راپېښیږی، البته امام شافعی او امام زفر رحمهما الله تعالی د مال د حصی څخه د زیاتی نفعه جائزه نه بولي. (٢)

مسئله: - که د شریکینو نه هر یو د بعض مال په ذریعه شریک وی نو دا شرکت هم صحیح دی، ځکه چه په شرکت عنان کی مساوات د مال شرط ندي، او دارنگه په مختلف جنس سره هم شرکت صحیح دی، یعنی چی دیو شریک یو جنس مال وي، او د بل شریک بل جنس مال وي، ځکه چه مونږ احنافو په نزد د عنان شرکت دپاره اختلاط د مال هم شرط ندي، البته امام زفر رحمه الله تعالی په نزد جائزه دي، مونږ احنافو وایوچه ډیرو احکامو کی

^١ مختصر القدوری، ص ١٢٧.

^٢ الفقه الحنفی وادلته، ج ٢ ص ١١١.

درهم اصل: دشرکت پز لده
 ۶۷
 مخلصوم بحث: دشرکت عملان ۱-۱۹م
 دراهمو او دنانیرو لره دجنس واحده په درجه کی منلی شویدی، چنانچه په
 باب دزکوة کی یولره دبل سره یوخی کولی شی پس
 دراهمو او دنانیرو بانندی عقد کول گویا په یو جنس بانندی عقد کول دي. (۱)
 { ج: - دشرکت عنان دباطل کیدلو صورتونه }

مسئله: - شرکت عنان کی یو معلومه اندازه مال یو دشریکینو لپاره مقررہ کول
 جائز ندی، ځکه چه دشرکت ندی بلکه اجاره دی، او همدراز په شرکت
 عنان کی په بضاعت، مضارب، وکالت امانت او اعارت بانندی مال ورکول
 هم جائز دی، او همدارنگه اخستل او خرڅول هم په نقداو په قرض دواړو
 بانندی په شرکت عنان کی جائز دي، خو چه بل شریک ئی منع نه کوي. (۱)
 مسئله: - شرکت عنان کی دمال خلط (گډول) شرط ندی، پس دکوم یو
 شریک مال چی هلاک شو پخوا دخلط څخه او وروسته د عقد شرکت نه،
 نو هلاک شو پنخپل مالک بانندی، برابره خبرده په خپل لاس کی یی هلاک
 شوی وي، او که دبل شریک په لاس کی هلاک شوی وي او که وروسته
 دخلط نه هلاک شوی وي، نوبیا په دواړو بانندی هلاک دي یعنی دواړه په
 نقصان کی شریک دي. (۲)

مسئله: - کله چی هلاک شی ټول مال دشرکت، او یا یو دشریکینو دمال
 څخه هلاک شی پخوا داخستلو دیوشی څخه، نو شرکت په دی هلاکت دمال
 سره باطل شو، ځکه چه شرکت په دغودو و مالو بانندی تعین شوی وه، کله
 چه دیو شریک مال هلاک شی پس شرکت په هلاک کیدونکی مال کی
 باطل شو، لوجه دنشتوالی مال څخه، او بل کی هم ورسره باطل شو ځکه

۱ ردالمختار، ج ۳ ص ۳۷۳

۲ الفقه الخفی وادله، ج ۲ ص ۱۱۳

۳ ردالمختار، ج ۳ ص ۳۷۵

چی هغه بل شریک پدی شرکت باندي راضی ندي چی دخپل مال دگنی څخه کوم شی هغه بل شریک ته ورپا ورکړی، او کچیری یو شریک پخپل مال سره څه شی واخستل بیادبل شریک مال هلاک شو، نو اخستی شوي شی ددوی په مابین کی مشترک دی، په هغه شرط اولوظ چه دوی پخپل منځ کی مقررکړی وي، ځکه چه وخت د اخستلو کی دغه شی مشترک واخستلوشو نوپه هلاکت دمال دیوشریک سره حکم نه متغیر کیري لیکن خپل شریک باندي به دهغه روپیو رجوع وکړي کومه چی ددی حصی سره برابرپری، ځکه چه دغه شریک دغه شی لره نیم مشترک اخستی دهغه بل شریک په وکالت باندي، اوروی بی هم دخپل مال څخه نقدی ورکړیدی. (۱)

مسئله: لاس دشریک په مال مشترکه کی لاس دآمانت دی، پس که هلاکی شومال مشترک بغیر دتعددڅخه، نو دشریک ئی ضامن ندي. (۲)
{ د:- دشریک مال دزکات آداکولو طریقه }

مسئله:- یوشریک دبل شریک داجازت نه بغیر دهغه دمال څخه زکات نه شی ورکولې، ځکه چه په شریکینو کی هریوته چه دکوم تصرف اجازت د هغه بل طرفه حاصل ده، دغه صرف په امورو دتجارت کی دی، اوزکات خویدی امورو کی داخل ندي، او کچیری په شریکینو کی هریوخپل شریک ته دزکات اداء کولو اجازت ورکړی وه، پس که دواړوشریکانو زکوة آداکړو، نودامام صاحب په نزدچه کوم روسته زکوة اداکړی دی دغه به ضامن وی، خواه دبل شریک زکوة اداء کول ورته معلوم وی او که ورته معلوم نوی، دصاحبینوپه نزدده معلوماتوپه صورت کی به روسته زکوة اداء کونکی

^۱ مختصر القدری، ص-۱۲۷

^۲ مختصر القدری، ص-۱۲۷

فصل: دشرکت پز لده
 پنجم بحث: دشرکت صنائعواحكام
 ۶۹
 ضامن نوي، او که دواړو شريکانو په يوځای زکوة اداکړونودواړه به
 ضامن وي، اوبيا به شريکان مقائيسه کوي، (يعنی يو شريک به دبل ته بدله
 ورکوي) او که ديو شريک مال زيات وه نو زياته اندازه به واپس اخلي. (۱)

پنجم بحث: دشرکت صنائعواحكام ﴿
 { الف: - دشرکت صنائعو توضیح }

مسئله: - شرکت صنائع (کسبونو) چی دپته شرکت تقبل، شرکت اعمال او
 شرکت ابدان هم وائی ددی شرکت صورت دادی: چه دوه کاریگران مثلاً
 دوه درزیان اویا بودری اویورنگساز پدی خبره متفق شی، چه یو مناسبه کار
 به پیدا کوي اوهم به یی قبلوی، او چه څه گته اونفعه وشي دغه دواړه به
 پدی نفعی کی شریک وي، پس اوس په شریکینو کی چه هر یو شریک یوڅه
 کار پیدا کړی او قبول یی کړی، نودغه کار کول به په دواړو لازمی وي، او
 کومه مزدوری، یانفعه چه ددغه کار کولونه حاصله شي، دغه به دهغه کړی
 شرط اولوظ موافق په دواړو شریکانو تقسیم کیري، اگرچه هغه بل شریک
 کارورسره نوی کړي. وعندالامام الشافعی رحمه الله تعالی لاتجوز هذه الشركة. (۲)
 { ب: - شرکت صنائعو دشریکانو مسؤلیت }

مسئله: - کله چه واخلی هر یو د شریکانو په یو کار نوپه دواړو شریکینو
 باندی دهغه کارپوره کول لازمی دي، ځکه چه دغه شریک ئی پدی
 مقرر کړیدی چه تا به کار رانیسی، اوپه شریکه به ئی کوو، ددی فائده داده
 چه هغه کس دهر یو څخه دعمل غوښتنه کولی شی، اوهمدارنگه هر یو
 داجرت (مزدوری) مطالبه کولی شی، او همداراز ورکونکی داجرت هم
 پدی خلاصیری چه هر یو شریک ته یی چی اجرت ورکړه، داهلته چه

(۱) ردالمختار، ج ۳ ص ۳۸۵

(۲) ردالمختار، ج ۳ ص ۳۸۰

دریم فصل: دشرکت پیز ندله

۷۰

شهریم بحث: دشرکت وجوه احکام

دشرکت وجوه احکام

شرکت مفاوضه وی، کچیری شرکت عنان وی نوبیا به دصاحب
سبب نه مطالبه کولیشی نه دده بل الدوال خنجه. (۱)

﴿ شهریم بحث: دشرکت وجوه احکام ﴾

{ الف: - دشرکت وجوه توضیح }

مسئله: - شرکت وجوه (الترسوخ): دادی شرکت وجوه صورت دادی چه
دشریکینوسره مال نوي، البته دوی پخپل اعتماد اود اعتبار په ذریعه دسوداگرو
خنجه سامان په قرض (نسیا) یو بازار ته راوړی، اویایی هلته خرڅوئی، اودوی
په نفعه کی راسره شریکان وی. اوددی شرکت داصورت هم صحیح دی
چه پدبکی داخستی شوی شی په اعتبار سره نفعه تقسیموی، یعنی که دواړو
شریکانو کوم یوشی په نیمه واخستو نونفعه به یی هم نیمه وی، او کچیری
دغه یو شریک دریمه حصه واخستله، اودبل شریک دوه حصی واخستی،
نونفعه به هم دغه شان په دغه حیصو تقسیموی، او کچیری یو شریک دزیاتی
نفعی شرط اولگاوه، نو دا زیاتی نفعی شرط به یی باطل وی. دائمه ثلاثه
رحمهم الله تعالی په نزد دشرکت هم جائزندی. (۲)

{ ب: - دشرکت فاسده صورتونه }

مسئله: - شرکت فاسد: - شرکت فاسد هغه شرکت ته وای چی په هغه کی
دشرائطو دصحت دشرکت نه یو شرط موجود نوي، اودوهم داچی کوم
شیان چه مباح الاصل دی، لکه لرگی، گیاه، بنکار او اوبه اوداسی نور،
ددوی په حاصلولو کی شرکت صحیح ندی، ځکه چه شرکت وکالت
غواړي اود مباحو شیانو په حصول کی دوکالت تصور نشي کیدی، ځکه چه
دمباحو شیانو موکل پخپله مالک نوي، نو په خپل ځای

۱ ردالمحتار، ج ۳ ص ۳۸۱
۲ ردالمحتار، ج ۳ ص ۳۸۲

دشرکت پز لده دقائم مقام یعنی نائب مقرر کولو مالک به هم نوي. (۱)
 دبل چا لره دغه وجه سره کوم یو شرکت فاسد شی، نو پدېکی چه کومه
 مسئله: که په دغه به دمال دمقدار په موجب بالدی وي، اگرچی زیاته نفعه یی
 نفعه وی دغه به دمال دمقدار په موجب بالدی وي، اگرچی زیاته نفعه یی
 شرط کړی وي، پس اوس که ټول مال دیوه شریک وي، نو بل شریک لره
 به دده دمخت اجرت (مزدوری) ورکولیشی. په قنیه کتاب کی دی چه که
 یو سړی دکشتی مالک وه، ده دخان سره څلور نور سړی شریک کړل، پدی
 شرط چه دکشتی به چلوی، اوڅه نفعه ترینه حاصله شوه دهغی نفعی پنځه
 شریک به دکشتی مالک وي، اوباقی نفعه به دخلور کسانو په خپل مینځ کی به
 حصه به دکشتی مالک وي، نو دشرکت فاسد دی، پس چه څه نفعه وی دغه به
 په برابري سره تقسموي، نو دشرکت فاسد دی، پس چه څه نفعه وی دغه به
 ټوله دمالک وي، اودغو څلور کسانوته به واجبی مناسبه مزدوری ورکولی شی. (۲)
 { ج: - دشرکت یوڅو خصوصي صورتونه }

مسئله: - درخت (کپړی) اودلو دپاره چه یو جولاته پرسی ورکړی شی، اود
 هغی نه جوړه کړی نیمه، دریمه وغیره برخه رخت (کپړی) هغه جولاته دهغی
 په اودلو مزدوری کی به ورته مجره کړی شی، نو داصورت به د(مانعینو) په
 نزد جائزه وی، لیکن دمجوزینو په نزد به دغه صورت جائزوي، لکه چه په
 احتافو کی هم د(بلخ) مشائخو دعرف اودستور په بناددی اجازت ورکړیدی. (۳)
 مسئله: - دوه بنڅو شرکت او کړوچه دواړه به دغره نه یو ځای خشاک (لرگی)
 راوړو، یا به لرگی یو ځای راټولوو، نو دشرکت شرعاً صحیح نه دي، پس
 دکومی بنڅه په لاس چی څومره خشاک راغله هغه بنڅه ئی مالکه ده. (۴)

^۱ مختصر القدوری مع الزیادة، ص ۱۲۸

^۲ ردالمحتار مع الزیادة، ج ۳ ص ۳۸۳

^۳ عنایة علی الهدایه علی هامش فتح القدير، ص ۳۹-۴۰

^۴ جنتی کالی، ج ۵ ص ۴۳۳

مسئله: - یوی پنهنی بلی ته اووی چه حمادهگی (اکی) غیبهی چترکی ته کیده نوبیا به بی بچی راسره نیمایی کرو لودصورت جائز نه دی. (۱)

مسئله: - که یودشرکینونه وفات شویمارتدشو (العیاذبالله تعالی) اویادارحرب ته لارونوشرکت بی مابین کی باطل شوخکه چه شرکت وکالت لره معظمن دی اوروکالت خو په وفات اوارتداداو لحوق دارالحرب سره باطل کیوی. (۲)

{ د: - دشرکت یوناروا شرط توضیح }

مسئله: که دسوداگردمال نه کوم شی غلاشه، نو اوس ددواروشریکانو نقصان اوشه، داسی به نوي چه ټول نقصان به دصرف دیوشریک وي، همداراز که شرکت کی یوشریک داسی شرط کړي وه چی نقصان به ټول په ماباندی وي، اونفعه به نیمه باندي شریکه وی، نو داهم جائز نه دی، ولی چی کله شرکت ناجائز شه، نو اوس په تقسیم کی دقول او اقرار هیخ اعتبار نیشته، بلکه که دوارو مال برابر وه نونفعه به بی نیمه وي، او که مال بی کم زیات وي نونفعه به هم کمه زیاته وي، خواه اقرار اولوظ چه نی هرڅه کړی وي هغه معتبرندی، ولی چی اقرار هغه وخت معتبردی چه شرکت کله صحیح وی، دلته خو شرکت صحیح. (۳)

{ ۵: - دشراکت دبی برکتی سبب }

مسئله: - دشراکت بی برکتی دشریکینوداختلاف اوخیانت لوجی څخه وي له سیدنا ابوهریررضی الله تعالی عنه څخه روایت دی چه رسول الله صلی الله علیه وسلم فرمائی: چه الله تعالی فرمائی: (زه دریم دشرکینووم ترخوچه یودبل سره خیانت ونکړي

^۱ جنتی کالی، ج ۵ ص ۴۳۳

^۲ الفقه الحنفی وادلته، ج ۲ ص ۱۱۶

^۳ جنتی کالی، ج ۵ ص ۴۳۲

فصل دمضاربت پزلدنه (۱) والله تعالى اعلم بالصواب

﴿ غلورم فصل: دمضاربت پزلدنه ﴾

﴿ اول بحث: دمضاربت توضیح ﴾

مضاربت په لغت کی په زمکه گر خیدل او گشت کولو ته وائی د
 مقاصد علی باب خخه دی، الله تعالى فرمائی ﴿وَأَخْرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ
 يَنْتِفُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ﴾ مضارب چونکه دتحلصیل دنفعی دپاره دپه زمکه
 دگرخی راگرخی، په دی وجه دی عقد ته دمضاربت عقد وائی، اهل حجاز
 دپه مقارضه او قراض وائی. اوپه اصطلاح کی مضاربت هغه عقده وائی
 په کوم کی چه دیو طرف نه مال وي، اودبل دجانب نه عمل وي، په نفعه
 کی به دواړه شریک وی، دکوم دطرف نه چی مال وي ده ته رب المال
 وائی، او عمل واله ته بی مضارب وائی، او کوم مال چه بی ورکړی وي دپه
 مال دمضاربت وائی، اوپه کوم مال کی چه شرکت صحیح وی (یعنی
 دراهم اودنانیر) نو په دغه مال سره مضاربت هم صحیح دی، اودمضاربت
 صحت دپاره نی دنفعه ددواړوپه مینخ کی شاعه او عامه کیدل لازمه ده،
 لکه مثلا په نیمه یا په دریمه حصه باندي شریک کیدل، که چا دخان دپاره
 دیو معینه اندازه نفعه شرط اوکړو، نوپه دی سره به عقد مضاربت فاسدوي
 اومضارب ته به په دي صورت کی دده محنت مزدوری ورکولی شي، البته
 ده محنت مزدوری به دامام ابویوسف رحمه الله تعالى په نزد باندي
 دمشرط مقدارنه به زیاته نه شی ورکولی، اودامام محمد او ائمه ثلاثه رحمه
 الله تعالى په نزد دده دمحننت اومزدوری اندازی کوم قید نیسته.
 اومقدارنگه کچیری مضاربت کی تاوان نقصان وشي پس اول به دغه تاوان
 دربحی (گته) خخه لندیشی، اوکه ربحه (گته) نوي نو بیابه دغه تاوان

درأس المال شخصه اداء کړي، يعنی مضارب به دتاوان ضامن لوي، البته وخت به ئی ضائع شوی وي، اوهمدراز دمضاربت جواز په شريعت سره ثابت دي ځکه چه دنبی کریم صلي الله عليه وسلم دبعثت نه پس به خلقو دغه معامله دمضاربت کوله اودوی مبارک صلي الله عليه وسلم ترينه منع نه ده کړي، اواصحابه وکرامو رضی الله تعالی عنهم تعامل هم پدی معامله دمضاربت باندي جاری وه، اوبل خواخلقو هم ددیته ضرورت لري ځکه چه بعض خلقومالداروي لیکن پخپله کاروبارنه شی کولي، اوبعض خاص بیوپاریان اوکاروبار مجرب خلق بی ماله غریبان وي، لهذا دعقددمضاربت مشروعیت عقلاهم ضروری دي، چه دغبی اوذکی اوفقیرواغنی ټولوخلقو ضرورتونه پوره اوتکمیل شي.

﴿ دوهم بحث: دمضاربت دصحت شرطونه ﴾

{ الف: -دمضاربت ددریو شرطونه بیان }

مسئله: - دمضاربت شرائط: - یو شرط دمضاربت دادی چه څومره روپی ورکول غواړی هغه ورته وبنائی، اوورئی هم کړی، کچیری هغه ته ئی حواله نه کړی، نودامعامله دبه فاسده وی؛

دویم شرط دمضاربت دادی چه دمنافعو دویشلو خبره به صافه کړی، چه ستابه دومره نفعه وی اوځمابه دومره نفعه وي، که صرف داووائی چه منافع به ویشواو خبره واضحه نه شوه نودامعامله فاسده.

دریم شرط دمضاربت دادی چه ځان لپاره به یه یومعینه اندازه نفعه نه مقرره وي، لکه ووايي چه یوخاص رقم روپیو به ځماوي، اوباقی به مشترک وي، بلکه پدی طریق به ئی مقرره وي چه مثلاً دمنافعو نیمه حصه به دیووي اونیمه حصه دبل وي، یا یوه حصه دیو اودوه حصی به دبل وي، یا یوه حصه دیواودری حصی به دبل وي، او که دمنافعو یوخاص رقم یوکس ته مقرر کړی

۷۵
 دوهم بحث: دمضاربت شرطه نه
 غلرم فصل: دمضاربت پزولده
 شی نو بیا دمعامله فاسده دی؛ اوهمدارنگه کچیری خبره داسی
 وشوه چه په مضاربت کی که نفعه (گته) ونه شوه، نو بیا هم به زه تالره
 داصلی رقم نه دومره روپو درکوم، نو دا معامله دمضاربت هم فاسده ده؛
 اوهمدارنگه که دائی مضارب ته اووئیل چه که په مضاربت کی که نقصان
 وشوه نو نقصان به ستا په غاړه وي، نو دا معامله دمضاربت هم فاسده
 دی، پس دمضاربت حکم دادی- که مضاربت معامله صحیح وه نو نفع
 (گته) په هغه ترتیب ویشلی شی، چه څرنگه دوی خپل منخ فیصله کړی
 وه، او که نفع ونه شوه او یا نقصان وشولو نو مضارب ته به هیڅ شی نه
 ورکوی، اوزیان تاوان هم په مضارب نشته، او کچیری دامعامله دڅه شرط
 درجی نه فاسده شوی وي، بیا مضارب (کارکونکی) په نفع کی ورسره
 شریک ندی، بلکه مناسب معاش یعنی مزدوری به ورکولی شی، برابر خبره ده
 که په دی فاسده مضاربت کی نفع شوی وي او که نفع نوی شوی، لیکن
 کچیری مناسب مزدوری یی زیاته کیدله، او کومه نفعه چه ورته مقرره کړی
 شوی وه هغه دمزدوری نه کمه وه، نو بیا به ورلره مقرره نفعه ورکیدی
 شی، او مزدوری به نه شي ورکولی. (۱)

{ ب:- دمضاربت شرعی حیثیت }

مسئله:- مضارب مخکی دتصرفاتو څخه آمین دی، دتصرف څخه وروسته
 بیا وکیل دی، که ربحه (گته) ئی وکړه نو بیا ورسره شریک دی، که مضاربت
 فاسد شی نو بیا اجیر (مزدور) دی او که د عقد مضاربت څخه ئی مخالفت
 وکړو نو بیا غاصب دی، لهده په مضارب باندي به دامین، وکیل، شریک، اجیر
 او غصب احکام جاری کیږی. (۲)

^۱ ملخصاً الفقه الحنفی دلت، ج ۲ ص ۱۱۹

^۲ خلاصه الفتوی، ج ۴ ص ۱۸۸

{ج: - دمضارب اختيارات}

مسئله: - که عقد مضاربت مطلق وه نوبیاد مضارب دپاره به هغه لپاره
 امور جائز وی، کوم چه دتجارو په نزد معتاد (رائج) وی، لکه په نقد یا لیسبا
 خرید فروخت کول، وکیل جوړول، سفر کول، او په طریقه دبضاعت مال
 ورکول وغیره، لیکن بل چالره یی په مضاربت نه شی ورکولی، البته کچیری
 که درب المال (د مال خستن) څخه ددی اجازت وی چه په مضاربت یی
 ورکولی شی، اویانی دا ورته وئیل وی چه دخپلی رایی موافق کارکوه مکمله
 اختیارستا دی، نو په دی صورت کی مضارب یی په مضاربت ورکولی شی؛
 همدارنگه که رب المال خاص بنار، یا خاص سامان، یا خاص وخت، اویا خاص
 سری ورته معین او مقرر کړی وی، نو په دی صورت کی مضارب لپاره
 لدی رب المال هدیاتونه خلاف کول جائزندی، ځکه چه مضارب ته حق
 دتصرف دصاحب المال په سپارلوسره وی، کوم لره چه ده مخکی امورو
 سره خاص کړی وی، کوم چه دفائدی نه خالی ندی، ځکه چه تجارت په
 اختلاف دسامانونه، اشخاصو، ځایونو، او وختونوسره مختلف کیږی، پدی
 وجه درب المال تفویض نه خلاف کول به مضارب ته جائز نوي. (۱)

مسئله: - که یوسری بل سری ته زر روپی په مضاربت باندي ورکړی، نو
 مضارب لپاره جائز نه دی چه یوشی دمضاربت لپاره لدینه په زیاتوروپو
 باندي واخلي، خواه که ئی ورته ویلی وی چی پخپله رایه عمل کوه او که
 نوی ئی ورته ویلی، پس کچیری یوشی یی مضاربت لپاره لدی روپو څخه
 زیات واخستو، نو حصه دزرو روپو مضاربت شوه، چه کوم زیاتی وی هغه
 حصه دمضارب لپاره ده که گته وی او که تاوان، زیات روپی خاص په
 مضارب باندي دی،

او همدر از نه ضامن کچیری مضارب پده خلط سره. (۱)

﴿ دریم بحث: دمضاربت حکم ﴾

{ الف: - دمضاربت دهلاک شوی مال حکم }

مسئله: - که مال دمضاربت هلاک شی، نودی هلاکت لره به اول دربیچی (گفته) نه مجری کول شی، خکه چه راس المال اصل دی، اوگتته بی تابع ده او هلاکت لره دتابع طرفته راجع کول غوره دی، لکه په باب دزکوة کی دهلاکت مقدار عفوی طرفته راجع وی، او کچیری دومره مال هلاک شوچه دنفع (گفته) نه هم زیات وه، یعنی راس المال هم خه حیصه هلاک شو نو مضارب به ددی تاوان ضامن نوي، خکه چه دغه آمین دی او په آمین بانندی ضمان (تاوان) نوي. (۲)

مسئله: - که مضاربت باقی وه اونفع ئی مابین تقسیموله، بیا ټول مال یاخه مال هلاک شو، نو که نفعه وشوه، پس نفع به واپس کوی راس المال به پری پوره کولیشی، خکه چه دارأس المال دووصول کول نه وړاندی دنفعی تقسیمول صحیح ندی، ددینه پس چی خه شی باقی پاتی شی دغه به تقسموی، او کچیری دنفع تقسیمولونه پس ئی عقد مضاربت فسخ کرو، او بیانی دنوی سره عقد مضاربت او کرو، بیا مال هلاک شونواوس به اوله نفع نه شی واپس کېدی، خکه چی اولنی عقدا تام شویدی اودغه نوي عقد د مضاربت ده. (۳)

{ ب: - دمضاربت په مال کی دتصرف کولو حکم }

مسئله: - که مضارب درب المال داجازت نه بغیر بل سری ته په مضاربت بانندی مال ورکرو، نو په مضارب اول بانندی به صرف په مال ورکولوسره

تاوان نه لازميږي، ترڅو چي دوهم مضارب ورباندي دتجارت ككاري، شروع كړي نوي، خواه دوهم مضارب ته ربحه (نفعه) حاصله شوي وي او كه نفعه حاصله شوي نوي، دغه ظاهر الروايه او دصاحبينو قول دي (وقيل ويه نفعي). البته امام اعظم رحمه الله تعالى عليه فرماني: چي خو ترپورري چه دوهم مضارب ته نفع حاصله شوي نوي، ترهغه وخته پورري په اول مضارب باندي ضمانت (تاوان) نه راخي، او كچيري دوهم مضارب ته نفع حاصله شي نو په دغه وخت كي به دتاوان ضامن وي، ځكه چه اوس په مال كي ددوهم مضارب شركت ثابت شو، دائمه ثلاثه ورحمهم الله تعالى په نزد صرف په مال وركولو سره په اول مضارب باندي تاوان لازميږي، ځكه چه مضارب ته په طريقه د ودعيت (آمنت) سره دمال وركولو حق شته، اونه په طريقه دمضاربت سره. (۱)

مسئله: - كه مضارب دصاحب المال په اجازت سره بل چا ته په مضاربت سره په دريم حصه باندي دغه مال دمضاربت وركړو، پس كله چه صاحب المال دمضارب اول سره دامقرره كړي وه، چه څه الله جل جلاله دركړل هغه به څماو ستا په نيمه وي، نو صاحب المال ته به ددي شرط په موجب دټولي نفع نيمه برخه وركول كيږي، او دوهم مضارب ته به يو ثالث (درېمه حصه) وركول كيږي، ځكه چه مضارب اول دده دپاره دټولي نفعي ثلث مقرر كړي وه، اوس پاتي شوسدس (شپږمه حصه) دغه به مضارب اول وركول كيږي، مثلا دوهم مضارب شپږ درهم او كتيل، نودري درهم صاحب المال ته وركولي شي، اودوه درهمه به دوهم مضارب ته وركول شي، او يو درهم به اول مضارب ته وركولي شي، ځكه چه دلته رب ا دخان دپاره دټولي نفع نيمه مقرره كړي وه. او كچيري صاحب ا مضارب اول ته داسي وئيل وو چه تاته څه نفعه الله تعالى دركړله دغه

قبض کره، نوبیا مضاربت پدی روپو بانندی کوه، پس هغه دغه سمان او غلام خرڅ کرل، تصرف ئی پکی وکړو، نو اوس په دی صورت کی مضاربت جائز شو. (۱)

{ د: - قرض بانندی دمضاربت کولو حکم }

مسئله: - راس المال دمضاربت به عین وی نه دین، لهدا په دیونو (قرضونه) بانندی مضاربت جائز ندي. پس کچیری یوسری په بل سری بانندی مثلاً زر درهمه قرض وه، او صاحب دین ته ئی امر وکړو، چه پدی زر درهمه قرض بانندی مضاربت کوه، نو دغه مضاربت جائز ندي کذا فی النهایه وهذا بالاجماع. او کچیری لدینه وروسته مدیون څه شی تجارت لپاره واخست، او خرڅ ئی کرل، نو گته یا تاوان ئی پکی وکړو، نو گته او تاوان په ده بانندی لازمی دی، او هغه پخوانی قرض همغسی په ده بانندی باقی دي، دادامام اعظم رحمه الله تعالی قول دی، او صاحبینو رحمهما الله تعالی فرمائی: چه کوم شی یی واخستو او بیا ئی خرڅ کړو هغه جائز دي، نو گته او تاوان د صاحب الدین دی، او مدیون د قرضی څخه خلاص دي، او ده لره مناسبه مزدوری په صاحب الدین بانندی لازمه دي. کذا فی المحيط البته کچیری یی دین (قرض) په دریم نفر بانندی وه، او ورته ئی وویل چه ماقرض (پور) ترینه راواخله، او مضاربت وربانندی وکړه، نو پدی صورت کی مضاربت صحیح دي. کذا فی المحيط. (۲)

مسئله: - که یوسری ته ئی زر درهمه ورکړل، چه نیمائی روپیو قرض دي، او نیمائی نورو روپیو بانندی مضاربت کوه په نیمه حصه نفعی بانندی، نو هغه سری دغه روپی پدی شرط واخستی، نو دا صورت جائز ده چی څرنکه

^۱ محیط السرخسی. الفتاوی الهندیة، ج ۴ ص ۲۸۶

^۲ الفتاوی العالمگیر، ج ۴ ص ۲۸۶

درم بنگال. دمضاربت حکم
 فصل: دمضاربت بزلله
 ۵۱
 کی په مابین کی په نیمه حصه نفی بالندی فیصله کړې وه کلاهی
 کچیری دغه مال منځکی دعمل څخه هلاک شو، نو دسړی د
 پس کچیری دقرض ضامن دی، او کچیری عمل لی وکړه او گټه یی وکړه،
 هغه نیمو روپو دعامل ده، او هغه نیمه نوره گټه به په هغه طریقه بالندی وی، چی
 یونیمه گټه دعامل ده، او هغه نیمه نوره گټه به په هغه طریقه بالندی وی، چی
 خوښکه نی په مضاربت کی شرط کړی وه. (۱)
 کچیری یوسړی مضارب ته ووئیل چه دغه زردرهمه واخله، چه
 مسئله: - کچیری یوسړی مضارب ته ووئیل چه دغه زردرهمه واخله، چه
 بیسی به قرض وی، اونیمائی نورو بالندی مضاربت کوه، خو هغه ټول گټه به
 زماوی، دغه صورت جائز دی، البته مکروه دی ځکه دغه قرض نفعه راکش
 کړه. کلاهی المحيط. (۲)

{ ه: - مضارب دمصرف اوخرچی کولو حکم }

مسئله: که مضارب کاروبار دتجارت په ښار کی کوي نو نفقه خرچه به د مال
 مضاربت څخه نه کوي، البته کچیری سفر کوي نو خوراک، څښاک، جامی او
 کرایه به نی دمضاربت مال څخه وی، بیا کله چی دسفر څخه واپس راشی چه
 کومه اندازه روپی دکرایه اوخرچی څخه زیاتی شوی وی، هغه به بیرته
 دمضاربت روپیوته واپس کوي، او کچیری وتل نی دسفر په اندازه نه وه بلکه
 صباتی به تلواو بیگانی به بیرته خپل کور راتلواو شپه به نی خپل کور کی کوله
 نفقه نوداپه شان دوکاندار دي په ښار کی، نو نفقه خرچه د مضاربت مال څخه
 نه شی کولی، او که شپه نی خپل کوروته نه شوه رسولی نو نفقه خرچه دده
 په مال دمضاربت کی ده، او همدراز مضارب دمرض علاج اودائی به پخپلو
 شخصی روپیو بالندی کولی شی، او دمضاربت دمال څخه علاج نشی کولی،
 ځکه چه مرض یوعارضی شی دی، پس کله چه مضارب خرچه دمال د

الفناری الهندیه، ج ۲ ص ۲۹۰
 الفناری العالمگیری، ج ۴ ص ۲۹۰

مضاربت څخه وکړي، بيا گټه وکړي نورب المال به خپل راس المال کامل واخلي، او خرچه به گټي ته واپس کيږي نه راس المال وته، چه کله راس المال پوره شي نو مابقي به چه څرنکه يي فيصله کړي وي هغسي به يي تقسيم کړي. (۱)

﴿خلورم بحث: دمضارب اوصاحب المال د اختلاف حل طريقي﴾
 { الف: - جانبيود اختلاف ديومهم صورت حل }

مسئله: که اختلاف واقع شوه په مابین دمضارب اوصاحب المال کې، چې مضارب دعوادعامی اجازی وکړه په هر کاربارد تجارت کې، اوصاحب المال دعوادخاصی اجازی وکړه په یوخاص کاربارد تجارت کې، نوپدی صورت کې قول دمضارب معتبر دي کذا فی الکافی خوسره دقسم نه، اووروسته د تصرف څخه په مال دمضاربت کې؛ البته مخکې دتصرف دمضارب څخه په مال دمضاربت کې بياقول دصاحب المال معتبردي. پس انکار دصاحب المال دعامی اجازی څخه گرخپړی منع کول دمضارب دتصرف څخه، یعنی نشته مضارب لره تصرف کول په عام تجارت کې. اوکچیری دااختلاف وروسته دتصرف څخه واقع شو، نوپدی صورت کې قول دمضارب معتبر دي سره دقسم نه استحساناً، اوپه صاحب المال باندي گواهانو وړاندي کول دي، وبه اخذ علماونا الثلاثة کذا فی المحيط (۲)

{ ب: - دمضارب معزول کيدلویو ضروري صورت حل }

مسئله: که صاحب المال مضارب لره دمضاربت کاربارنه معزول کړو، او مضارب ته ددی گوشه کيدو علم نه وه شوی، اوده خریدفرش وکړو نودابه جائزه وی، ځکه چه دی دصاحب المال دطرفنه وکیل دي، اوبالقصد وکیل

^۱ ملخص الفتاوی الهندیة، ج ۴ ص ۳۱۲

^۲ هندیه، ج ۴ ص ۳۲۳

فصل: مضاربت پزلده
۸۳ پنجم بحث مضاربت دهم کیدل
لره معزول کول دده تر علم پوري په عزل کیدلو موقف وی، پدی وجه
دعلم کیدونه وړاندی به دی معزول نوی، اوکه مضارب ته خپله معزولی
پداسی حالت کی معلومه شوه چه مال نقدنه وه بلکه سامان وه، بیا به هم
معزول کیدل د مضارب تر سامان د خرخولو پوري موقف وی، یعنی مضارب
دغه سامان خرخول نی شی، ځکه چه په نفع کی ورسره د مضارب حق
وابسته شویدی، او دده ظهور به په تقسیم سره کیدی شی کوم چه په راس
المال بانندی موقوف دي، او دراس المال اندازه د سامان خرخولو او نقد کولونه
وروسته معلومیري. (۱)

﴿ پنجم بحث: مضاربت د ختم کیدلو توضیح ﴾
{ الف: - مضاربت د باطل کیدلو ترتیب }

مسئله: - که صاحب المال یا مضارب مرشو، نو په دی مرگ سره مضاربت
به باطل شو، ځکه چه د مضارب د عمل نه پس مضاربت د توکیل په حکم
کی وی، او وکالت د مؤکل دوکیل په مرگ سره خو باطل کیږی، نو
مضاربت هم باطلیږی، همدارنگه که صاحب المال (خدای تعالی مه کړه)
مړتدشودار الحرب ته لاړو، نو پدی صورت کی هم مضاربت باطل شو،
خو کچیری حاکم دده د دار الحرب سره د الحاق حکم کړی وه، چه پدی
وجه سره به دده املاک نه ملک زایل شی، او ورثا و طرفه به ملک منتقل
شی، نو دا الحاق دده د مرکیدو په درجه کی شو، او که حاکم حکم نوي
کړی، نو مضاربت به دده دراتللو پوري موقف وی، کچیری هغه واپس راغی
نو مضاربت به یی برقرار وی. (۲) او همدارنگه عقد د مضاربت په تیریدلو
دمدی سره هم باطلیږی چه مده (نیته) یی

^۱ هدایه، ج ۲ ص ۲۶۳

^۲ هدایه، ج ۳ ص ۲۶۳

په مابین کی مقررہ کړی وي. (۱)

{ ب: - مضاربت دفسخ کيدلو ترتیب }

مسئله: - که صاحب المال او مضارب دواړه د عقد دمضاربت دفسخ کيدلو نه پس جدا شو، او مال دمضاربت خلقوسره قرض وه، او مضارب ته په تجارت کی نفع حاصله شوی وه، نو مضارب به په وصول کولو د قرض باندی مجبور کولی شی، ځکه چه مضارب اجیر (دمزدور) پشان دی، او نفعه دا جرت پشان ده، پدی وجه به دی مضارب لره په پوره کولو د عمل مجبوره کولی شی، او که نفعه ورته نه وه شوی نوبیا به نه شی مجبور کولی، ځکه چه اوس دغه احسان کونکی دی او په متبرع جبر (زور) نوي، البته مضارب ته به دا وئیل شی: چه ته د قرض وصول کولو دپاره صاحب المال لره وکیل جوړ کړه چه دده مال ضائع نه شی. (۲)

{ ج: - د صاحب المال د مال حفاظت لپاره یوحيله }

مسئله: - کله چه د صاحب المال اراده وي، چه وگرځوي مال مضمون (تاوان) په مضارب باندی نوددی لپاره حيله داده چه قرض ور کړي مضارب ته خپل مال ورته ئی سپاري او گواهان هم پري مقرر کړي بیا واخلی دغه مال صاحب المال په مضاربت دنمایی اوثلث سره ئی بیرته ئی مستقرض (مضارب) ته ور کړي او طلب د امداد او کړي په هغی سره په عمل کی نو کله چه هلاک شی په لاس دده کی نو قرض دی په ده باندی پس مضمون (تاوان) دي په مضارب باندی او کله چه یی گټه وکړه او هلاک نشی نو ربحه (گټه) به شریکه وي په ما بین ددوي کی په هغه شرط باندی چه دوی شرط کړیدوي. (۳) والله تعالی اعلم بالصواب.

^۱ التسهیل الضروری لمسائل القدوری، ص ۲۳۲

^۲ الفقه الحنفی وادلته، ج ۲ ص ۱۲۳

^۳ الفقه الحنفی وادلته، ج ۲ ص ۱۲۱

{د: - دمضارب لپاره دتنخوا مقرورول حکم}

مسئله: - که یوکس چاته رویی دمضاربت لپاره ورکړی اوورته اوبی چي: موټرورباندي واخله اوچلوه یې چې خومره گټه دورباندي وکړه هغه شریکه ده او موټرچلولوتنخوا هم اخله داتنخوا اخیستل ورته روا ندي. وشروطها سبعة أمور: کون رأس المال ثمناً معلوماً عیناً مسلماً للمضارب، وکون الربح شائعاً معلوماً حظ کل منه مشروط حظ المضارب منه حتی لوشرطه من رأس المال او منه، ومن الربح فسدت. (۱).

﴿ پنجم فصل: داجاری پیژندنه ﴾

﴿ اول بحث: دمشروعہ اجاری توضیح ﴾

محترموا اجاره په لغت کی: هغی مزدوری ته وائی چه استحقاق ئی په عمل دخیرسره وي، له دی وجه نه ددی په ذریعه دعاء هم کولی شی لکه مثلاً لرمائی: اعظم الله اجرک. او اجاره په اصطلاح دشرعی کی: د هغه عقد نوم دی کوم چه په عوض معلومه، او په منافع معلومه باندي یې اطلاق کیږی، خواه عوض یې مالی وي، او که غیرمالی وي، لکه منافع یعنی مثلاً چی دمکان استوگنه لره دسپارلی حیوان په عوض کی ورکول وي. او همدارنگه که عوض یې دین وي لکه پیمانی واله شیان، یاموزونی شیان اویاعددی متقارب شیان لکه مثلاً غوزان هگی اوداسی نور. او که عوض یې عین وي لکه دواي (خاروي)، اویارختونه (توکرونه)، اوداسی نور. پس هبه، عاریه، او نکاح ددی اجاری تعریف نه خارج شو، ځکه چه پدی کی دعوض په مقابلي سره صرف دمنافعورواوالی وي، نه داچی ددوی تملیک ورسره حاصل کیږی. البته قیاس اجاره جائزه نه بولي، ځکه چه پدی کی معقود علیه منفعت ری، کوم چه په وخت دعقد کی موجود نوي، بلکه دده وجود روسته وي،

دوهم بحث: د اجاره شرطه،
 حڪه چه دائنده موجود كيدونكي شي طرفته دتمليك اضافت صحبه
 ندي، ليكن قرآن كريم او احاديث شريفه ددي په صحت شاهد دي، داسي
 تعالي ارشاد مبارك دي "علي ان تاجرني ثمانى حجج" اودنبى كريم عليه
 عليه وسلم ارشاد مبارك دي چي: "مزدورته دده مزدورى دده دخولى او چيلورته
 وړاندى وركوي" (۱) دينه علاوه نور ډير صحيح احاديث په صحيحينو و غيرهم
 كى موجود دي چي داجارى صحت او جواز ترينه معلومېږي.

﴿ دوهم بحث: د مشروع اجارى شرطونه ﴾

{ الف - داجارى دصحت شرعى طريقى }

مسئله: - داجارى دصحت دپاره د مزدورى او منفعت دواړو معلوميدل
 ضرورى دي، البته مزدورى په معلومونوكى خوځه مشكل نيشته، لکن
 دمنفعت په معلومولو كى خوځه قدرى مشكل شته، لهدا دمنفعت معلوميدل
 لپاره درى طريقى دي: اول طريقه داچي ددى مدى بيان باند وكړي شي، چه
 دمدى په بيانولوسره چي دمنفعت اندازه معلوميدل يولازمي خبره ده، پدې
 شرط چه منفعت يې متفاوت (جلا جلا) نوي، مثلا دكور او زمكى په اجاره كى
 دا بيانول ضرورى دي، چه دومره مدى پورى به په دكور كى استوگنه، او
 دومره مدى پورى به دزمكى دكوروندي دپاره وي، پس مده كه كمه وي
 او كه زياته وي پروا نلري خوچي تعين يې وكړي شي، نو اجاره به صحيح
 وي. البته داوقافو په صورت كى به ددريو كالونه ترزياتى مدى پورى تعين
 كول جائز نوي. دوهم طريقه داچي هغه عمل باند هم بيان كړي دكور
 دپاره چه اجاره كوي لكه دجامو (توكر) رنگ كول، او كندل، او په څاروى
 سورلى، يا باروړل وغيره، يعنى داسى بيان وكړي چه بياپكى منزاغت (جنگ)
 نوي، مثلا درنگوالى په صورت كى به دجامى (توكر) درنگ بيانول ضرورى

دې، چې سور رنگ دی او که سپین رنگ ده، اود گندولو په صورت کې د جنلون ترتیب وغیره بیانول ضروری دي. دریم طریقہ داچې هغی طرفه هم اشاره اوشی، چه فلانی خای ته ددی شی وړل ضروری دي، او چې کله یوکس اجیر شي، او خای اوپېژنی، نومنتفعت به یې معلوم وي، نو عقد د اجاری به یې درست شي. (۱)

{ ب: - د اجاری مهمو شرطونو تشریح }

مسئله: - اجاره چونکه په منزله دبیعی ده، پدی وجه په کوم شرطونوسره چه بیعه فاسدېږی په هغی سره به اجاره هم فاسدېږی، لکه مثلاًدا شرط کول چه که مکان اونړېږی، پادجرندی اوبه بندی شی، بیابه هم په هغه اجرت لازم وي دا شرط فاسده دي، دغه شان شی ماجوره مجهول کیدل، پاجرت، پامدت، اوباعمل مجهول کیدل وغیره سره به اجاره فاسدېږی، پس په اجاره فاسده کې به اجرت مثل واجب وي، لیکن دمسمی (مقررہ شوي) نه به زیات نه شي ورکولی. (۲)

{ ج: - د اجاری مشروطه حکم }

مسئله: - که په چایي دا شرط مقرر کړو چه خمادا جامی (کپری) به خاص ته گڼی، اویابه یې ته وینخی، اویابه یې ته رنگ کوی، نودا کاراوس په بل نه شی کولی په خپله به یې کوي او که دا شرط یې ورته نوي کړی نوبیایي بل ته په کارور کولی شي. (۳)

{ د: - مستاجر بل مستاجرته دیو شی په اجاری ورکولو حکم }

مسئله: - یوکس یودوکان په اجاره باندي نیولی دی، چونکه دوکان په ښه

^۱ ملخصاهدایه، ج ۳ ص ۲۹۱

^۱ هدایه، ج ۳ ص ۲۹۹

^۲ جنتی کالی، ج ۵ ص ۲۲۷

موقعیت باندې دی دغه دوکان یو بل کس ته پرېوږدي خو په دې شرط چې لوکړني مستأجر ته به دتخلې په بدل کې یو خوړوی وړکوي، نو ددغه روپو اخیستل ورته روادې (اذاکانت الاجارلمدة معلومة استحق المستأجر البقاء علیهاالی تلك المدة، فلوأراد رجل آخر ان یتنازل المستأجر عن حقه، ویصیر هوالمستأجر بدله، یجوز للمسأجرالأول أن یطالب بعوض، ویكون ذلك نزولاً عن حق الاستجاز بعوض، ویجوز ذلك قیاساً علی النزول عن الوظائف بمال، ولكن یشرط لذلك أن تكون الاجارة الأصلية الی مدة معلومة، کعشر سنین مثلاً ویتنازل المستأجر فی اثنائها.)^(۱)

﴿ دریم بحث: دمکان اودوکان داجاری شرعی احکام ﴾

{ الف: - د دمکان اودوکان اجاری کولو شرعی طریقہ }

مسئله: - دمکان اودوکان اجاره جائزه دی، اگرچه هغه کار بیان نه کړی کوم کار چه په مکان اودوکان کې مستأجر کوي، مگر دغه صورت استحساناً جائز دی، ورنه دقیاس په لحاظ سره خو جائز ندی، ځکه چه معقود علیه مجهول ده، پس وجه داستحسان داده چه دوی کی عمل متعارفه یعنی په عرف کی استوگنه ده، کوم چه په اختلاف دعامل سره نه مختلفه کیږی، دا قاعده ده چه امر متعارف پشان دمشرط دی، اوس مستأجر چه کوم کار غواړی هغه پکی شرعاً کولی شی، ځکه چه عقد مطلق شویدی، البته اهینگری (لوهار)، دوبي، او جرندي واله، اوداسی نور چه خپل عمل یعنی اهینگری وغیره پکی نشی کولی، ځکه چه پدی کارونو سره عمارت کمزوری کیږی، اوتاون ورته رسیږی. لیکن که دغه کارونه یې په اول عقد کی بیان کړی وي، بیاخو کوم مشکل نشته بیا دغه کارونه پکی کولی شی^(۲)

^۱ (بحوث فی قضایا فقهیه معاصره ج ۱ ص ۱۱۴). وکذالی ردالمحتار ج ۷ ص ۳۱.

^۲ هدایه، ج ۳ ص ۱۹۵.

{ ب: - دمستاجر صلاحیت او اختیارات }

مسئله: که یوسړي کور او مکان په اجاره (کرایه) ونيول، دغه سړي لږه جائز دی چه هرڅوک پدی کور او مکان کې اجاری سره اوسوي وسولي شي، خو پدی شرط چه دغه کور او مکان به ئی قبض کړی وي، که په مثل دهغه اجاری باندی ورکوي چه ده په کومی اجاری سره ئی نیولی دي، اویایی د هغه اجاری نه په کمی کرایي سره ورکوي، کچیری په زیاته کرایه سره ئی دغه کور او مکان ورکړه دهغه کرایي نه چه ده په کمی کرایي سره نیولی وه هم جائز ده، مگرده لږه دغه زیادت بهتره ندی، البته که مکان کی ئی جوړښت برابری اوبادروازی وغیره یې پکی جوړی کړی وي، نوبیا زیاتی کرایي اخستل پروا نلري. (۱)

مسئله: که یوسړي یو مکان او کور په اجاره سره ونيولو چه پدی کور او مکان به اوسېږي، او کنجیانی (کلی) مالک ورته وسپارلی، اومده داجاره تیره شوه خو ده ترینه استفاده ونکړه، نوپه دغه مستاجر باندی اجرت (کرایه) لازم دي، یعنی برابره خبره ده چه دی پکی اوسیدلی وي اوبانه، مگر کچیری منع کړی وی یو منعه کونکی دحاکم وغیره طرف نه بیا کرایه ورباندی لازمه ندی. (۲)

{ ج: - دمکان او کورد کرایه یوڅومهم صورتونه }

مسئله: - دمکان او کورد کرایه یوڅومهم صورتونه دادی اول صورت: دمکان مالک کوم زر ضمانت چه د (دپوزټ) په نامه سره دکرایه دارنه پیشگی رقم (روپی) اخلي، نوغوره خبره داده چه هغه رقم بعینه محفوظ او ساتلی شي، پس کوم مالک چی دغه مال اولگوی نو هغه به ددی رقم ضامن وي، چی دکرایه داری دمودی په ختمیدوئی سره به یې سمدستی کرایه

^۱ الفقه الحنفی وادلته، ج ۲ ص ۸۴

^۲ الفقه الحنفی وادلته، ج ۲ ص ۸۵

دارته واپس ورکوي. دوهم صورت : که یو مکان یادوکان په کرایه ور کړی شی، اودمکان مالک درواجی پکړی په نوم چی داصلي میاشت وار کرایه نه علاوه رقم هم دکرایه دارنه وصول کړي، نودابه کنترلی شی چه دمکان مالک ددغه مکان واپس اخستودحق نه لاس واخستلو، اوددی عوض ئی وصول کړو، نومالک دپاره به دغه رقم اخستل جائز وي، خوبیا که دمکان مالک کرایه دارنه مکان واپس اخستل غواړی، نوکرایه داربه داحق لری چه دمکان خالی کولو په عوض کی دمالک نه دومره څه رقم وصول کړي په کوم چه دواړه فریقه راضی شی، اوپدی صورت کی کرایه دار دهغی خپل حق نه لاس اخستی شی، چه بل کرایه دارته ئی دورکولودپاره دمالک دایوخاص رقم داداکولودپاره دمالک نه دیوخاص رقم ورکولوپه عوض کی حاصل کړی وي.

دریم صورت: دمکان مالک چه پکړی وانخلي او کرایه دارته ئی ورکړی، په اصل معاهده کی داجاری او کرایه څه موده نوی ټاکلی شوي، نودمکان مالک اختیارلري چه څه وخت اوغواړی دغه مکان کرایه دارنه خالی کړی، البته پکاردی چه دمکان مالک خالی کولودپاره کرایه دارته دومره مهلت اومیعادورکړی، چه مقامی حالاتوسره سمون اومناسبت ولري، مالک اوکرایه داروته پکی څه خاص ضررنه وي، خو کرایه دارلره هم پکاردی چه په دغه مناسب اوتاکی میعا دکی مکان ورته خالی کړي. (۱)

{ د:- دمنقولی شی اجاری کولو حکم }

مسئله:- که یوسړي یومنقولی شی (چه یوخاي څنڅه بل خاي ته ورلی شی) په اجاره (کرایه) سره ونیولو، نومخکی دقبض څنڅه ئی بل چاته په اجاره نشی ورکولی، لکه چه په بیعه کی هم دحکم دي چه مخکی دقبض څنڅه

په شی خړخولی، او کچیری په اجاره سره ئی غیر منقولی شی ولیولو
 نو اراده ئی وه چه بل چاته ئی په اجاره ورکړی، نومخکی دقبض څخه ئی
 هم دشیخینو په نزد ورکول جائز دی، البته امام محمد رحمه الله تعالی علیه ئی
 مخالف ده، او چا و نیلی دی چه داجاره بالاتفاق جائزه نده. (۱)

{ ۵: - دکان یاسرای داجاری شرعی طریقہ }

مسئله: - دکان یاسرای په اجرت اخیستل صحیح دی هولازم دي چی
 دکرای مقدار، او موده و ټاکل شی، البته هغه سړی به پدی کی څه کوي
 استوگنه به پکی کوي، یا څه بل کار پکی کوي، ددی خبر و ټاکل لازم
 ندی، هوکه سرای دیوه داسی لوي درانه کار لپاره استعمالوی چی په هغه
 سره دسرای کیفیت ته تاوان رسیدلای شی دهغه وضاحت کول په کاردی
 لکه دکالوپر پرو لوکار، چی دویان ئی کوي، دغه ډول تنور په دکان کی
 جوړول، یا استاکاری، دلاکی، او دژرندي کار، یا د ډول دنورو کارو اراده
 وې بیلازم دي چی ددی وضاحت وکړي. (۲)

{ ۶: - دحمام داجاری شرعی حکم }

مسئله: جائز دی حمام واله ته اجرت دحمام، څکه چه پیغمبر صلی الله علیه وسلم حمام
 دجحفه ته داخل شوه وه، او عرف هم پدی دلیل دی، څکه ټولونبارونو کی
 خلق حمام واله ته اجرت ورکوی سره لدینه چه نوی معلوم اندازه د هغو
 ابرچه استعمالیږی، نو اجماع هم دلالت کوی په جواز ددی اجرت باندی. (۳)

الفقه الحنفی وادلته، ج ۲ ص ۸۵

(البحر الرایق، ج ۸ ص ۹-۱۰)

الدر المختار، ج ۵ ص ۳۲

پنجم فصل: داجاری پزندنه ۹۳
 خورم بحث: درمکرد اجاری احکام

حق نشته. صاحب قاضي خان کی ليکلی، رجل اساجرارضا ليزرعهها،
 فاصاب الزرع آفة فهلك او عرق ولم يثبت كان عليه الاجر لانه قد زرع،
 ولو عرقت الارض قبل ان يزرعها فلا اجر عليه انتهى. (۱)

{ ج: - دزمکی داجاری دیواختلا فی صورت بیان }

مسئله: - که دیوسری زمکه وی اوبل سری محنت وی، نوددی زمکی پیداور
 به په دواروکی تناسب په لحاظ سره ویشل کیژی، امام ابوحنیفه رحمه الله تعالی
 که څه هم په برخه دزمکی دور کولو څخه مکمل منعه کړی، مگر دامام
 صاحب مبارک ځینوشاگردانو اوزیاتره فقهارء کراموددی اجازه
 ورکړی، دهور ددی څخه ئی منع کړی ده چی دزمکی یوه خاص برخه
 باید اوار یو خاص مقدار په دواروکی یودخان لپاره مخصوص کړی، اوفتوی
 هم پردی ده کمافی صحیح البخاری کتاب المزارعة باب قبیل المزارعة
 بالشرط، وترمذی عن رافع بن خدیج رضی الله تعالی عنه ابواب الاحکام
 باب ماجاء فی المزارعة، دمزارعت، تفصیلات دیوبل سره تر معاهدي
 او عرف لاندی خلاصیژی، تخم دمالک لخواوی که دبزرگر لخوا؟ داپه عرف
 اوعادت موقوف دی، دادول کبنت تر رسیدو ورسته دهغه ټولول، او کورته
 رسول، دچاپه ذمه ددی پدی ټولوکی دخلقو عام عرف اوتعامل داصل او
 بنیاد دحیثیت لری، اودهغه په رناکی به فیصله کیژی. (۲)

{ د: - دزمکی داجاری اوقفیز الطحان متعلق توضیح }

مسئله: - یودهقان، زمیندار، لوگری ته وواتی چه دغه یوجریب زمکه غنم
 لوکړه ستاته به مثلاً پنځه منه غنم درکرم، یاتریشل کوونکی ته وواتی چه یو
 جریب غنم تریشل کړه مثلاً پنځه منه غنم بادرکرم نوکه دغه شرط یه عقد

(۱) لغاری قاضیخان علی هامش الهندیة، ج ۲ ص ۳۱۶

(۲) لغاری هندیه، ج ۵ ص ۲۳۵

کی موجودشو بیایه قفیزالطحان کی داخل ده یعنی ناجائزده اوکچیری
 دغه شرط لوکونکی یاتریشل کونکی په دهقان ونه لگوي نو بیا دغه عقد
 صحیح ده او قفیز الطحان خخه جداده که بیاهم دهقان ددغو غنمو خخه
 لوگوي لوکوي یاتریشل کوي و خه حیصه ورکوي نوروا ده ولودفع عزلاً
 لآخر لینسجه له بنصفه، ای بنصف الغزل او استاجر بعلأ لیحمل طعامه
 ببعضه، او ثورا لیطحن بره ببعض دقیقه فسدت فی الكل لانه استاجره
 بجزء من عمل فسدت فی الكل لانه استاجره بجزء من عمله، والاصل فی
 ذالک نهیه صلی الله علیه وسلم عن قفیزالطحان، وقد منا فی بیع
 بالوفاء والحیلة ان یفرز الاجرا واولاً او یسمى قفیزا بلا تعین ثم یعطیه قفیزاً منه
 فیجوز، قوله قفیزا بلا تعین، ای من غیران یشرط انه من المحمول او من
 المطحون فیجب فی ذمه المستاجر انتهى. (۱)

{ ه: - دمنافعو په منافعوبانندی داجاری کولو حکم }

مسئله: - اجاره دمنافعوپه منافعوبانندی جائز دی خوچه کله ئی جنس مختلف
 وي، لکه اجاره داستوگنی کورشوه چه په فصل دزمکی سره بي اجاره
 کوي، لهذا کچیری بي جنس متحد وه بیا اجاره جائز ندي، لکه داستوگنی
 کورد داستوگنی دکور په عوض سره اجاره شي، البته کچیری دوکانونه وه نو
 بیا اجاره جائز دی، لوجه دا اختلاف دمنفعت نه، اوچا وئیلی دی چه دا هم
 جائز ندي، لهذا کچیری دمنفعت دمنفعت په جنس کی اجاره فاسده وشوه،
 او بل کس ترینه خپل منفعت پوره کړو، نو په ده کس بانندی اجر مثل لازمی
 دی، هغه بل کس لپاره په ظاهر روایت کی وعلیه الفتوی. (۲)

(الشامیه، ج ۵ ص ۲۰)

(ردالمحتار، ج ۵ ص ۳۹)

{ و:- اجاره فاسده کی دمزدوری یو خاص حکم }

مسئله: که داوړه کولو دپاره ئې چاله غنمودانی ورکړلی، چه مثلاً ددینه په پاؤ وزن ددغه داوړه کولو مزدوری واخله، یا پتی ئې پرلو کولو اوریلو ورکړو، چه دومره غله یا حاصل ئې ته مزدوری واخله نودغه اجاره فاسده دی. داجاری فاسدی دا حکم دی چه څه شی مقررشوی وي هغه شی به په عوض کی نه ورکوئی، بلکه ددومره کار دپاره چه څه مقدار مزدوری وي، او یاد دومره کور مکان دپاره چه څومره کرایه وي هغه به ورکوی، لیکن که دستور او عادت نه زیات وه، او ددوی مابین کی مقررشوی مزدوری یا کرایه کمه وو، نوبیا به مقرره شوي مزدوری یا کرایه ورکوی او ددستور موافق مزدوری یا کرایه به نه ورکوي، یعنی کومه چه کمه وي هغه مزدوری یا کرایه به اخلی. (۱)

{ ز:- اجاره فاسده دیو عجیب صورت بیان }

مسئله: که غوا بیزمیخه دپو دپاره په کرایه اخستل جائز نه دي، او همدارنگه څه جانور او حیوان په نیمه ورکول جائز ندی، یعنی چرگه ئې چاله ورکړه چه داساته او بچی به ئې نیم ځما او نیم ستاوي دا جائز نه دي. (۲)

{ ح:- دزمکی داجاری عشر ادا کول حکم }

مسئله:- زمیندار ته که منافع دپراپتی کیږی نو عشر ادا کول په هغه باندی دي اړکه مستاجر ته منافع دپرو وی نو عشر ادا کول به په ده باندی وي. چونکه عموماً مستاجر ته گټه دپره وي لهذا عشر به په ده باندی وي. (۳)

پنجم بحث: دسپرتیا یا بارورپولو دپاره دسوارې داجاری شرعی احکام

{ الف:- دسپرتیا یا بارورپولو دپاره دسوارې کرایه اخيستلو شرائط }

مسئله:- دسپرتیا یا بارورپولو دپاره دسوارې کرایه اخيستل روادي، فقهاؤ کرامو

۱ جنى كالى، ج ۵ ص ۴۲۸

۲ جنى كالى، ج ۵ ص ۴۲۸

۳ ردالمحتار، ج ۲ ص ۷۵

لیکلي دي چې ددي لپاره دسپور هغه سامان چې باروی دکوم ځایي څخه ترکومه ځایه وړل کیږي دهغه ټاکل لازم دی. (۱) پس دفقهاو کراموپه نزد دي ټولو وضاحتواصل مقصد دامکانی جگړې او اختلاف منځیوی دی، په موجوده زمانه کې چه څه تیز رفتار ه سوری دي دهغه لپاره چې څه قوانین او قاعدې دي دهغو مطابق به معاملي کیږي، ځکه چې دقانون له کبله ددي حیثیت دعرف دی، او کوم شیان چې دعرف برابرې هغه دجگړې او اختلاف منځیوی کوي.

{ ب: - دسپورولو او بارورولو لپاره دموترو داجاری کولو توضیح }

مسئله: - دسپورولو او بارورولو لپاره اجاره دسیاراتو (موترو) جائز ده، ځکه چه منفعت ئی معلوم دی، او که موجر مقید کړی مستاجر لره په قیادت دموترو سره نو بیا جائز ندی دغه مستاجر لره چه بل څوک پکی سپر کړی، ځکه چه خلق په سپرلی کولو کې زیات فرق لري، نو که سپرید ونکی ئی متعین کړو بیا د مستاجر څخه سوا بل څوک پکی سپر شو او هغه هلاک شوه، نو مستاجر د هغه قیمت ضامن دي، او که هلاک شوه او مستاجر ورباندې پنځپله سپروه، نو بیا یې ضامن ندی، بناء پدی باندې کچیری مثلاً په استعاری (سوال) سره ئی دچا څخه موترو اخستو او هغه موترو هلاک شو، او مستعر پنځپله پکی سپروه، او دی سبب هلاکت نه وه نو بیا ضامن ندی، او که بل چاته ئی ورکړه او بیا هلاک شوه نو بیا یې مستعر ضامن دي، کچیری موترو ئی دبارورولو لپاره اجاره (کرایه) کړو او مقدار ئی معلوم کړو، او نوعه ئی هم معلومه کړه پس دغه اجاره جائز دي، او دغه مستاجر لره رواده چه بار کړی مثل دهغه چه دوي ورباندې راضی شویدي په ضرر کې، یا کم دهغی اندازی څخه، لوجه نه تفاوت څخه، یعنی که هلاک شودغه مستاجر یې ضامن ندی، البته دغه مستاجر لره جائزنده چه زیات دمقدار مقرره

پشم فصل: د اجارې پر لاندې
 څخه ورباندې بار کړې، کچیرې زیات دمقدار مسمی څخه په ضرر کې
 ورباندې بار کړې، بیا هلاک شوه نو مستاجرې پدې صورت ضامن دی. (۱)
 {ج:} - د اجاره کړې موټر دهلاک کیدلو د تاوان زمواری تشریح {
 مسئله:} - که یو موټر ئی تر یو معلوم ځای پورې په کرایه ونیولو، بیا دهغه حد
 معلوم څخه تیر شو، نو د مستاجر پدې خلاف سره ضامن وگرځیدو، چه کله
 پیاوړې شی او موټر ئی خپل مالک ته وسپارلو، نو د تلوا جرت ورباندې لازم
 دی، او د اراتلوا جرت ورباندې واجب ندی، چه کله ئی د تلور ا تلود و اړ لپاره
 ره کړې وی، ځکه چه کله دخپل مقرر حد څخه تیر شو نو مخالف وگرځیدو
 نو لازم شوی ده باندي ضمان (تاوان)، او موژا حنا فوپه نزد اجرت او ضمان
 دواړه جمع کېږي؛ او کچیرې موټر ئی یومعین ځای پورې اجاره کړو، بیا
 لار نه شو، پخپل کور کې ئی موټر او درو، تردی چه مده تیره شوه او هغه
 څه حادثه هلاک شو، په ده باندي دهغه ضمان لازم دی، او کرایه ورباندې
 ، ځکه چه مستاجر هغه موټر لره بند کړې وه په ځای هغه کې چه موجر
 ته اجازت نه وه؛ او همدارنگه که موټر ئی اجاره کړې وه یوه ځای ته، او بیا
 یو بل ځای ته روان کړ، نو دی ضامن دی، اگر چه هغه ځای لدینه قریب
 ری، بیا که څه حادثه پیشه شوه چه دی مخالف وگرځیدو، نو اجرت په ده
 باندي نشته په ده باندي دهغه ضمان لازم دی، او کچیرې په اجاره سره ئی
 یو معلوم ځای ته ونیولو، نو لار په غیر عام روډ (سرک) باندي، نو کچیرې
 خلقو دغه لاره استعمالوله، نونه گرځیرې مخالف نو دی ضامن ندی، او که خلقو
 دغه سرک نه استعمالولو، او بیا په یوه حادثه باندي هلاک شو، نو دی ئی
 ضامن دی په ده باندي دهغه ضمان لازم دی. (۲)

الفقه الحنفی وادلته، ج ۲ ص ۸۶

الفقه الحنفی وادلته، ج ۲ ص ۸۷

} د:- دمزدوري او ملازمت دتاوا نونو دضامن دوه مهم صورتونه { مسئله:- داجير مشترک او اجير خاص دتاوانو ذمه واري په ارتباط علماء ليکلی چه دمزدوريا ملازم څخه يو شيني ضائع شي، ددي تفصيل دا ددي چه دمزدوري او ملازمت دوه صورتونه دي، يوداچي دمعاملې بنياد کارکونکي دوهم داچي دمعاملې بنياد وخت وي، داوول صورت لکه دوشی، ملاح، حمال، راعي، حفار، او خياط وغيره لکه مثلا دخياط کارکونکي دي چي يو چاته ټوکړ، رخت، دگنډولو لپاره ورکړي دلته هغه وخت پايښته ندي، دکار پايښده دي چه ټوکړ، رخت، به گنډوي، ددوهم مثال داوول دي چي څوک مدرسي لپاره مدرس مقرر کړي چي هغه به هره ورځ پنځه يا اته ساعت تعليم ورکوي، دلته هغه دوخت پايښده، او پدي وخت کي دحاضریدو مکلف دی، که څخه هم شاگردان وي که نوي، دسبق وړان نوبت راشي که رانه شي، داوول دپوره ورځي لپاره يومزدور دسرای جوړولو لپاره ونيول شي، دلته هغه ددي خبري پايښددي چي ټوله ورځ خپل وخت ورکړي، اول قسم ملازم ته، اجير مشترک، او دوهم قسم ملازم ته، اجير خاص، وائي؛ که داجير مشترک څخه يوشی ضائع شي هغه پنځله دي ضامن دي او تاوان به ورکوي، اجير مشترک سره چه کوم مال متاوي دغه امانت وي، پس که دغه بلا تعدی هلاک شي نو دامام صاحب، زه او حسن بن زياد رحمهم الله تعالى به نزد به ئي دي ضامن نوي، دصاحبينو او اما مالک او په يوقول کي دامام شافعي رحمهم الله تعالى په نزد به دي ضامن وي مگر که داسي په داسي سبب سره هلاک شي دکوم نه چه بچ کيدل حفاظت ممکن نوي، لکه پنځل مرگ ئي مړه کيدل، يا اور لگيدل وغيره، کوم شئ چه داجير مشترک په عمل سره تلف شي لکه دوبي په ټکولو سر کپړي (جامي) خيري شي، يا داجير په خوئيدو سره، يا دهغه رسي چه بوج پر

پنجم فصل: داجاری پزنده ۹۹ پنجم بحث دبار و لو دمه آری اجاره

تولی وی او شو کیری، مال ضائع شی، باد ملاح (کشتی بان) په بی قاعده
 رانیکو دو سره کشتی دپوه شئی، او مال غرق شی نودی به بی ضامن
 وی، خلافا لزر والشافعی رحمها الله تعالی موژداو ایوچه تحت الاذان هغه عمل
 داخل وی کوم چه تحت العقد داخل دی، او هغه عمل صالح دی نه چه عمل
 مفسد وی البته د کشتی دپویدو یا سورلئی نه په غورخیدو و خوک مری شی
 نوددی به بی ضامن نوي، خکه چه پدیکی دبنده ضامن دی او دبنده ضمان
 په عقد سره نه واجبیږی، بلکه په جنایت سره واجبیږی. (۱)

دوهم اجیر خاص دکوم چه دوهم نوم اجیر واحد هم دي هغه ته وائی
 کوم چه دیوه وخت معینه پوری صرف دیوه مستاجر کارکوي، دی چه کله
 خان په مده دعقد کی دمستاجر خدمت لپاره پیش کړی، نودای دجرت
 مستحق کیری خواه مالک دده نه کارا خستی وی او که کاری نوي ترینه
 اخستی، لکه هغه سړی کوم لره چه ئی دپومیاشتی پوری ددرس دپاره،
 یا خدمت دپاره، پابیزو خرڅولو دپاره نوکر کړی وی دجرت مستحق دي. (۲)

پس که داجیر خاص څخه دده دزیاتوب او ارادي پرته څه سامان ضائع شی
 هغه ددی ذمه وارندی. (۳)

{ ۵: - مزدور د مزدوري د آداینی توضیح }

مسئله: - مزدور د مزدوري مقدار دي مخکی څخه واضح شی اودادي شکمن
 نه پریږدي، پس رسول الله صلی الله علیه وسلم دیوه مزدور څخه دکاراخیستلو
 څخه منع کړی ده ترڅو چي دهغه مزدوري واضح نه شی، "ان رسول الله
 صلی الله علیه وسلم نهی استجاره الاجیر حتی بین له اجره"، السنن الکبری

ملخص الدر المختار و رد المحتار، ج ۵ ص ۴۱

رد المحتار، ج ۵ ص ۴۳

(فتاوی عالمگیری، ج ۳ ص ۵۵۵).

پنجم فصل: داخاری پڙندنه

۱۰۱

پنجم بحث: دباروړلو دسواري اجاره

البیهقي، در رسول الله صلى الله عليه وسلم عادت مبارک داوو چی هیچاته نی دهغه دمزدوړي څخه کمه مزدوړي نه ورکوله، کمافي صحیح بخاري عن ابی هريرة رضی الله تعالی عنه؛ او همدراز دمزدوړمزدوړي باید ژر تر ژره وکړل شي رسول الله صلى الله عليه وسلم فرمائي چی دمزدوړمزدوړي دخولي تروچیدو مخکی ورکړئی، اعطوا الاجیر اجره قبل ان یجف عرقه (ابن ماجه و بیهقي).
 اوفقهاؤ کرامولیکلي دي چی دمزدوړی داداینی دري صورتونه دي اول: پخپله آجر، کار اخیستونکی، تر کار دمخه مزدوړي ورکړي، دوهم: مزدوړد شرط لکولی وي چی مزدوړي به مخکی راکوي، په دي حالت هم ده ته په کار دي چی تر کار مخکی مزدوړي ورکړي، دریم: مزدوړ کار پوره کړي دکار پوره کیدوسره سمدستي مزدوړي ورکړي. (۱)

{ و: - دمزدوړی پرآره ددولت مسؤلت }

مسئله: - د حقوقو ساتنی په اړه قاضي ابوالحسن ماوردي رحمه الله تعالی د، محتسب، په فرایضو کی لیکي - که یوسړی پرمزدوړ او ملازم، اجیر، زیاتوب وکړي، مثلاً مزدوړي کمه ورکړي، اویا کار زیات ترینه اخلي، محتسب دي دادسی کولو څخه دسړی راوگرځوي او وی دبیروي، او که زیاتوب دمزدوړ له طرفه وی، مثلاً کار لږ وکړی او مزدوړي زیاته غواړي، هغه دي هم ددي څخه راوگرځوي، او ودي نی بیروي، که دیوبل دخبرو څخه انکار وکړی، دیصلی حق بیا حاکم ته دي. (۲)

{ ز: - د تړلي مزدوړی پرآره اسلامی هدیات }

مسئله: - تړلي مزدوړي ظالمانه رسم رواج ده، یوسړی بل سړی په اسلام کی دیته مجبورولای نه شي دمزدوړي به دخامخاکوي، بلکه اسلام داخالص

^۱ (الفتاوی الهندية، ج ۳ ص ۵۰۶)

^۲ (الاحکام السلطانية للماوردي، ص ۳۹۹، الباب عشرون)

پنجم فصل: دا جاري پيژندله ۱۰۱ پنجم بحث: د باروړلو د سوارۍ اجاره

د انسان ذاتي مسئله او حق گټي چه هغه د چار کار کوي او که ئي نه کوي، بلکي حکومت هم يوسړي او استو گن دپته مجبورولای نه شي، ما سواد دي وجي نه چي کله داسي حالات پيداشي چي د قومي او اجتماعي مصلحت له کبله خلق يوه کارته مجبور کړل شي، دغه لامل ده چي فقهاوو د نکاح، درنيولو، او خرڅولو، او نورو معاملو په ډول پديکي هم. دا وارو اړخو رضایت لازم بللی دی. فرمائي- و امارکنها فالایجاب والقبول. (۱) او همدرنګه په اسلام کی هر سړی ته د يوځای څخه بل ته د تګ راتګ آزادی حاصله ده، او داخالص ذاتي او شخصي مسئله ده هغه په هر بناړ او منطقه کي مزدوری او ملازمت کول وغواړي کولای شي چه شرعی موانع موجود نوي، الله تعالی فرمائي، وَمَنْ يُّهَا جِرْفِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرَاغَمًا كَثِيرًا وَسَعَةً ج (سورت النساء- ۱۰۰)

{ ح: - د مزدوررانو فرائض اوزمواری }

مسئله: - د مزدوررانو او ملازمانو فرائض اوزمواری داده: - چه يوبه پکي قوت او صلاحيت وي بل پکي امانت او ديانت وي، څنگه چي قرآن مجيد کي هغه ته مختصراً په دوو لفظو کي اشاره شویده حضرت شعیب عليه السلام چي موسی عليه السلام په کوم بنياد خپل ملازم وټاکي هغه دده دلور دغه اطلاع وه (يَاءَ بَتِ اسْتَجِرْهُ إِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَجِرْتِ الْقَوِيُّ الْأَمِينُ (سورت القصص) ژباړه: - اي زما پلاره دی مزدور و نيسه، بيشکه غوره مزدور چي ته ئي مزدور نيسي هغه څوک دی چي قوي، او امانتگروي. پس چي داهليت پرته دي دهیڅ کار ذمه واري نه اخلي، ځکه فقهاوو کرامو هغه طيب چي په عقل کي ئي فرق راغلی وي، الطيب الما جن،، د علاج څخه دراکرڅولو امر کړی دي (الاشتباه والنظائر لابن نجيم) دويم داچي کوم کار ورته سپارل شوي وي،

باند هغه کاراما ننگری اوایمانداره سره تر سره کړي، لکه څنگه چې
 علماوو لیکلي دي-چې په عدل سره وزن وکړي، په دې کې داهم داخل
 دی چې مزدوران دي دمزدوري دوخت پوره پوره خیال وساتي، (کمالی
 معارف القرآن لمفتی محمدشفیع رحمہ اللہ تعالیٰ) او په امانت کې داهم داخل
 دی چې رشوت دي نه آخلی، رشوت دادي چې ورسپار شوي کارترسره
 رسولولپاره جلا نوري پیسی واخلي، رسول الله صلی الله علیه وسلم په ډیره
 سختی د دې څخه منع کړي ده فرمایلی دي-رشوت اخستونکی
 اوورکوونکی دواړه دوزخیان دي، (الراشي والمرثي كلاهما في
 النار، طبراني عن ابن عمرورضی الله تعالی عنه). پس رشوت یوازي داندي
 چې درشوت په نوم واخیستل شي، بلکې هغه پیسی هم په رشوت کې
 داخلي دي چې عام خلق دیوچادمنصب له کبله د، هدیه،، اونڈرونياز،،
 تخفه، په نوم ورته وړاندي کړی، دادرشوت یوداسی قسم دي چه ښه
 دینداره خلق په آخته دي، نو رسول الله صلی الله علیه وسلم فرمائی: چې کوم
 سړی دیوچالپاره سفارش وکړي هغه دده لپاره تخفه واستوي، (ابوداؤد عن
 ابن امامه رضی الله تعالی عنه) ، فقهاؤ کرام فرمائی: چې دقاضی لپاره نارواده چې
 دمقدمې په لړکې دطرفینو یعنی دمدمعي اومدعاعليه څخه تخفي قبولي کړي.

{ ط:- داجرت مثلی یومهم صورت }

مسئله: که یومزدورئی ونیولواواجرات ئی ورته معلوم نکړو، نوده لره وچې
 دی اجرت مثلی چه څومره اندازي پوری مزدورئی رسیږی هغه به ور کوي،
 البته اجاره فاسده کې په تخلیه (بی کاری وخت) یعنی نه کارکولو په
 صورت کې اجرت نه لازمیږی، لیکن په اجاره صحیحه کې په تخلیه سره
 اجرت لازمیږی که نفعه ئی دمزدورنه اخستی وي اوکه نوي اخستی. (۱)

پنجم فصل: داڃاری پڙلده ۱۰۳ پنجم بحث دٻارور لږ دسوارۍ اجاره

{ ۱: - ناروا ملازمت او مزدوري ڪولو ڪناه }

مسئله: - دداسي شيانو ملازمت او مزدوري روانه ده چه ڪناه وي، خرنگه
 جي ڪناه ڪول روانه ده ددادول دڪناه لپاره لامل اووسيله جوڀيدل،
 اوپه دي ڪي مرسته هم ناروده، او دخومره درجي جي ڪناه وي په هفي ڪي
 مرسته هم دهغو مره درجي ڪناهه، لکه سُرنا، نوحی سازوسرود، سينما،
 سود بنک ملازمت، دسنڌرو او غزلود آلاتو، اوداسبابو تجارت يامزدوري جي
 دهغو مقصد يوازي لهوولعب وي، لکه بتان جوڀول، بتان خرخول دغزلو
 اوسنڌروسامان، فلمي ريڪاٽونه، ڪيستونه، فحش تصويرونه او مضمونونه
 ڇاپول او خورول، اودسي نوروددغه شيان په ڪارومزدورنيول صحيح ندي،
 اردوي دمزدوري حقداروندي، دناروا ملازمتونه دي. لکه فقهاء ڪرام ليکلي -
 لايجوز الاستجار على شئ من الغناء والنوح والمزامير... ولاجرلهم في
 ذلك. (۱) باب اجارة المعاصي، حتى كفاروسره په ڪناه ڪي مرسته جائزندي
 ڪه ڪه هم وادوي په دين ڪي جائزوي، فقهاء ليکي رجل اب ذمي اوامراة
 ذمية ليس له ان يقوده الى بيعة وله ان يقوده من البيعة الى منزله لان الذهاب
 الى بيعة والى معصية والى المنزل لا. (۲)

مسئله: - په تنگ ٽڪور، په مرووڀر ڪولو، اوپه لوبوتوقوسره اجاره اخستل
 ناروا ده. (۳)

{ ڪ: - دڪافر سره مزدوري ڪول حڪم }

مسئله: - دڪافر سره پداسي ڪارڪي نوڪري او مزدوري ڪول بالاتفاق جائزدي
 ، چه دمسلمان ذلت په ڪي نوي، او په ڪومو ڪارونو ڪي چه دمسلمان لپاره
 ذلت وي، لکه دڪافر خدمت، اودده دخناور خدمت ، وغيره نوبيا

(۱) عالمگيري، ج ۲ ص ۳۳۹

(۲) غلامه الفاروي، ج ۲ ص ۳۳۶

(۳) ڪنز الدلائل، ص ۳۹۲

دامزدوری مکروه دي اوضرورت شدیدہ بھر حال ترپنه مستثنی ده. (۱)

﴿ شپږم بحث: داجاری دفسخی کولو احکام ﴾

{ الف: - موجراو مستاجر خیارات }

مسئله: - داجاری فسخه: - موجراو مستاجر دپاره خیار شرط او خیار ررویت صحیح دی، او پده خیار سره اجاره فسخه کولی شی، او پاڅه داسی عیب پیدا شی په کوم سره چه نفعه اخستل فوت شی، لکه مثلاً د کور پر نکیدل، یادجرندی اوزمکی اوبه بندیدل وغیره، لیکن که مستاجر دمعیوب شی نه فائده اخستلی شوه نو ټول بدل به ورباندي لازم وي، او که مالک ددغیب ازاله او کره نواوس به مستاجرته دفسخی داجاری حق حاصل نوي، بیا دفسخ داجاری دپاره دموجر موجود کیدل ضروری دي، کچیری دموجر په نه موجودگی کی ئی داجاری فسخ او کره نوپوره اجرت به ورکوي، او همدارنگه کله چه یو دمعاملي کونکونه مړه شي او اجاره ده دخان دپاره کړی وه نو اجاره فسخ شوه، البته که اجاره یی دبل چا دپاره کړی وه مثلاً وکیل دموکل دپاره، یا وصی دیتیم دپاره کړی وه، یا عاقد متولی دوقف وه، نو یو دمعاملي کونکوپه مرگ سره به اجاره فسخ نوي، ځکه چه پدی صورتو کی دملک دغیرنه منتفع کیدل یا اجرت ادا کول لازم نه راځی، او باداسی عذر پیدا شي چه استفاده ترینه مشکله وي، لکه چا دکان دتجارت دپاره په کرایه واخستو بیا دده مال ضائع شو، یا چا مکان یادوکان په کرایه ورکړو بیا دی مفلس (غریب) او مقروض شو، او دده سره دآدائیگی دقرض دپاره ددغی مکان یادوکان نه سوابل څه مال نه وه، یا چا دسفر دپاره په کرایه څاروی واخستو بیا دده ته یومانع دسفر یعنی څه ضرورت پیدا شو، البته په کرایه دورکوونکی په حق کی ددی اعتبار نیشته، پدی ټولو صورتونو کی به اجاره

پنجم فصل: داجاری پزلده

اوم بحث دہنی کارولہ مالای آجاری

سخ شی، دامام شافعی رحمہ اللہ تعالیٰ پہ نزدہ اعداروسرہ اجارہ نہ
 شی سخ کیدی خکہ چہ ددہ پہ نزد منافع پہ مثل داعیالودی، موڑاحناف دا
 واپوچہ منافع غیر مقبوض دی، او منافع معقود علیہ دی، نو پہ باب داجارہ کی
 عذر داسی شولکہ چہ پہ مبیعی کی دقبضی نہ مخکی عیب وی، نو خکہ سخ
 کبری لیکن جامع صغیر کی دی چہ کل ماذکرناانہ عذر فالاجارہ فیہ تنقض
 ددینہ معلومیچی چہ دقضاء قاضی تہ احتیاج نیسی. واللہ اعلم وعلمہ اتم. (۱)

{ ب:- داجاری دفسخہ کولو صورتونہ }

مسئلہ:- کہ پہ کرایہ اخستونکی اوورکونکی کی ہوتن مرشی، نواجارہ
 فسخہ اوماتہ شوہ، او ہمدراز کہ خہ داسی عذر پیداء شی چہ اجارہ ماتول
 غواری، نو دمجبوری پہ صورت کی ئی داجارہ ماتول صحیح دی، مثلاً
 پانگہ (چہ آس پسی بی تری وی) ئی کرایہ کرلہ، بیائی نیت بدل شہ د
 پانگہ نہ پاتی شو، نوماتول داجارہ ئی صحیح دی، او ہمدراز کہ دچاکوم
 دستور او قانون وی چی خہ شئی کرایہ کری نو خہ پسی او رویی پہ اول د
 عقد کی بہ ورکوی، چہ کہ ورسرہ لارونویا بہ نورہ کرایہ ہم ورکوی،
 ارکہ پاتی شونو دا رویی بہ ستامجاناً وی دا صورت جائزندی دغہ رقم بہ
 بیاوہس کوی کچیری ہفہ ورسرہ نہ لارو. (۲)

{ اوم بحث: دہنی کارونوباندی اجرت اخستلوا حکام }

{ الف:- دموضوع پہ ارہ علمی خیرنہ }

مسئلہ:- پہ دہنی کارونوباندی اجرت اخستلوکی اختلاف دی، لکہ تعلیم د
 قرآن شریف، امامت او اذان وغیرہ، پس ائمہ ثلاثہ او اصحاب ترجیح و تخریح
 علماء کرام رحمہم اللہ تعالیٰ ئی اجرت اخستل جائز بولی، او بل خوا امام اعظم

رحمه الله تعالى د عبادت په هيڅ يو کار اجرت اخستل درست نه بولي، اونه دې قسم اجاری ته صحيح وائی. درواياتو او مذاهبو د تطبيق کولو د اصورت ډير غوره ده چه د داجرت نارواوالی روايتونه په تقوی باندې حمل کړی شي، باداهغه علماو دپاره او گنرلی شي چه داجرت اخستولونه بی پرواوي، او وختو نه ئی ښه تیرېږی او گتی وتی او دنورو ضروریاتو پوره کولو نور اسباب هم لري، او داجرت درواوالی روايتونه په ضرورت مندی او محتاجی باندې حمل کړی شي، لکه بیهقي شریف روايت ده "احق ما اخذتم عليه اجرا کتاب الله" نور علامه شامی رحمه الله تعالى رسائل ابن عابدین نوم سره مشهور یو رساله دی نو په ده رساله کی یی پدی موضوع باندې تفصیلی بحث کړیدی فاطم ثمه. (۱)

{ ب: - حج بدل باندې اجرت اخستلو حکم }

مسئله: - یوسړی بل نفر ته ووائی چه زما پاره حج بدل ته ولاړ شه، هغه نفر ورته ووائی ښه ده ولاړ به شم، لیکن ته به ماته دلاری دمصرف خرچی څخه علاوه نور اجرت به هم راکوي، پس دغه اجرت په حج باندي اخستل جائز ندي، ځکه چه دا اجرت اخستل په عبادت دي او دناروا ده. علامه شامی فرمائی: وبعضهم يفرغ على ذلك مسألة صحة استجار على الحج وهذا كله خطأ اصرح من الخطاء الاول، فقد اتفق النقول عن ائمتنا الثلاثة ابي حنيفة وابي يوسف ومحمد رحمهم الله تعالى ان الاستجار على الطاعات باطل. (۲)

{ ج: - په تحکیم باندې داجرت ورکولو اخستلو حکم }

مسئله: - زمونږ په نزد تحکیم باندې اجرت اخستل جائز نه دی لیکن چه کله تحکیم مفت نشی کیدلی نو بعضی علماء فرمائی چه دخصمینو په رضامندی سره دمحمکینو دپاره اجرت اخستل چه هغوی په کتابونو کښی

۱ رسائل ابن عابدین، ص ۱۳-۱۴

۲ (انتهی بحواله شرط عقود رسم المفتی، ص ۳۷)

پنجم فصل: دا جاري پزلده
 ۱۴۷ اوم بحث دېهي "الله و اولو بالدي، اجرت
 كتلو سره راجح قول اوشالي او جگړه ختمه شي نودا په تعليم او تعلم
 باندي د جرت اخستلو پشان ده داناجائزله ده. شامل. (۱)

{ د:- فتوى بالدي دا جرت اخستلو حكم }

مسئله:- په فتوى اجرت اخستل حكم: فتوى وركول دوه قسم ده يوداچه
 خونه باندي دڅه حكم فتوى وركړي، پدي باندي اجرت اخستل حرام دي،
 علامه مفتي محمد فرید رحمہ اللہ تعالیٰ فرمائي، اخذ الاجرة على بيان احكام
 الشرعي لا يحل عندنا. (۲) دوهم قسم فتوى وركول دي په تحرير او
 ليكلوسره، پدي اجرت اخستل جائز دي، چه څومره چه دده كاعل قلم
 اړليكولو مناسب وي. لابس ان ياخذ شيا على كتابة جواب الفتوى ،
 وذلك لان الواجب على المفتي الجواب بالسان دون البنان. (۳)

{ ه:- ايصال ثواب باندي دا جرت اخستلو حكم }

مسئله:- كه يو حافظ ئي مقرر كړو، چه دومره ورځي دفلاني په قبر قرآن
 كليم وايه، او ثواب ئي د صاحب قبر پسي بڅه، دومره تنخواه به دركوم
 د عقد اجرت بي باطله ده ، نه دلو ستو نكي ثواب اوشه اونه دمړي ثواب
 وشه، اود حافظ دڅه تنخواه اخستولو حقدار هم ندي. (۴)

{ و:- درخصتي او چتيانو تنخواه وركول او اخستل حكم }

مسئله:- مدرسينو (استاذانو) او د دين خادمانو ته درخصتي او چتيانو تنخواه
 وركول او اخستل جائز دي، علامه شامي رحمه الله تعالى عليه فرمائيلى دي چه
 دسه شني (منگل) او جمعي اود روژي او اخترونوكي رخصتي (چتي) وي دهغه
 ورځو تنخواه (معاش) اخستل حلال دي، همداسي كه دعادت نه خلاف چيرته

(فتوى لريديه، ج ۲ ص ۲۷۷)
 (الشرار باب الفتوى، ص ۳۸)
 (الهي البشري، ص ۴۹)
 (جنتي كالي، ص ۲۲۸)

پنجم فصل: دا جاري پڙندنه

۱۰۵

اتم بحث: د صنعت او کسبگري اصول

يوه ورځ ئي د سبق ليکلودپاره رخصتي ورکړه، نوهم ددې ورځ
تنخواه اخستي شي. سوا د دينه چه وقف کولو والا صرف هم دهغه ورځ
د تنخواه ورکولو قيداو لگوي چه په هغه ورځو کې درس کيږي، فقيه ابوالليل
رحمه الله تعالى عليه وائي چه که استاذ شاگردانو څخه د داسې ورځې اجرت هم
واخلي، چه پکې سبق نه ولولي هم امید دي چه هغه به جائزوي. (۱)

﴿ اتم بحث: د صنعت او کسبگري د دوه اصولو توضيح ﴾

محترم: - په صنعت او کسبگري کې يوازي يوه اصوله مخ ته ايښودل
پکاردې، او هغه دا چې ددې په وسيله دي په گناه کې نيغ په نيغه مرسته نوي،
مثلاً بتان او مجسمې جوړول جائز ندي، زنا او صليب جوړول جائز ندي، ولي
چه دا په هندوانو او عيسيانو کې ديو مذهبي نخښې درجه لري، دا ډول دساه
لرونکي شيانو او مجسمې جوړول ناروا دي، ولي چې پخپله رسول الله صلي الله
عليه وسلم ددې منع کړيده، کما في صحيح مسلم عن ابن عباس رضي الله
تعالى عنهما باب تحريم تصوير صورة الحيوان و تحريم اتخاذ مافيه صور درهم
اصل دادي چه خپل صنعت پرداسې خلقو خرڅول چه هغه ددې په وسيله
فته راپورته کولای شي جائز ندي، مثلاً دا اسلام مخالفو خلقوته سلاح
ورکول يا ورباند خرڅول جائز ندي، ولي چه ددې غلط استعمال کيږي. (۲)

په همدغه نور صناعات هم قياسدلای شي.

مسئله: - دساه دار (ژوندي) خيز (شي) کالبتونه جوړول په اسلام کې بيخښي
حرام دي، جمهور علماء او محدثين د سادارو (ژوندو) د تصويرونو هم دا حکم
بولي، فوټوگرافي هم تصوير جوړول دي عکس سازي نه ده، پدې وجه لره
خپل کار کسب د زېست روز ذريعه جوړول او ددې اخستل خرڅول ناروا

^۱ ردالمحتار، ج ۳ ص ۳۸

^۲ (در مختار، ج ۵ ص ۲۵۰)

فصل: داجاری پزلده
 ۱۰۹
 نهم بحث: دمائلو مفرقو بیان

دی. دحضرت عبدالله بن عباس رضی الله تعالی عنهما په روایت کی دانهیره
 په داکتره راغلی ده (متفق علیه) خصوصاً داسی واره کالبتونه جوړول یادداسی
 کسانو تصویر ونه چه عبادت اوپرستش نی کیږی ډیره شخته گناه ده، بلکه
 گناه څه چه به کفریاتو کی نبع په نیغه امداد کول دی دایشان صلیب
 پراخی تصویرخونه دی مگر دعیسایانو د مذهب یو خاص نشانی ده، ځکه
 اکر چه تصویر خونه دی مگر دعیسایانو د مذهب یو خاص نشانی ده، ځکه
 خورسول الله صلی الله علیه وسلم ددی د ماتولو باقاعده حکم ورکړو، البته دبی ماه
 مثلا د عمارتونو، اوکلونو وغیره تصویرونه جوړول په اتفاق سره
 څیزونو نوددی جوړول، کسب کول، اودزیشت روزگار ذریعه نی گرځول
 رادی، نه لری، ځکه چه دحضرت عبدالله بن عباس رضی الله تعالی عنه
 په ذکر شوی روایت کی دی اړخ ته اشاره څرگندېږی. (۱)

﴿ نهم بحث: دمائلو مفرقو بیان ﴾

{ الف: - د ډاکتر او وکیل د فیس حکم }

مسئله: - د ډاکتر فیس لوی ډاکتران عموماً څه دارونه ورکوی، بلکه صرف
 دمریض دمعانی اودده دپاره د علاج اونسخی تجویز کولو فیس اخلی،
 بارکیلان دقانونی مشورور کولو فیس اخلی، دشریعت له مخه پدی کی هیڅ
 بدیت نشته، په هر قسم خدمت بانندی څه اجرت ټاکل او اخستل درست
 دی، خو شرط دادی چه دحراموپه حدکی داخل نشی، ځکه چه مشوری
 اړمندیات ورکول اودی دپاره خپل دماغ او علم استعمالول هم یو خدمت
 دی، چه فیس ورباندی مقررول به هم روا وي. (۲)

{ ب: - دجرمانود روپو شرعی حیثت }

مسئله: - دروپو جرمانه امام ابوحنیفه رحمه الله تعالی امام محمد رحمه الله تعالی سوا

جلید فقهی مسائل، ج ۱ ص ۲۵۶

جلید فقهی مسائل، ج ۱ ص ۲۳۳

دامام ابو يوسف رحمه الله تعالى څخه ټول روا نه بولي ځکه چه دادشرعی
 مسبب نه هسي دمسلمان مال اخیستل دي، اذلايجوز أخذ مال مسلم. (۱) امام
 ابو يوسف رحمه الله تعالى دمالی جرمانی اجازه ورکړی ده،، وعن ابی یوسف
 رحمه الله تعالى يجوز التقرير للسلطان بأخذ المال. (۲) ځینی فرماني چه امام
 مالک رحمه الله تعالى رایه هم داده،، وبه قال مالک رحمه الله تعالى. (۳)
 ځینو مصنیفینو دامام ابو يوسف رحمه الله تعالى درآی وضاحت داسی کړ
 دي، چه داجرمانه به دیووخت لپاره وي، نه ټول عمر، اونه ئی بغیر دبادشاه
 څخه اخیستل شي، دابه بیاورسته په هفي کسانو بیرته تقسیوي، امساک
 من ماله عندمده لیتزجرثم یعیده الحاکم الیه، لان یاخذه الحاکم لنفسه
 اولیبت المال. (۴)

{ ج:- دورک شوي شی باندي دانعام ورکولو حکم }

مسئله:- که څه شئی ئی ورک شه اوده اوویل که چاراته ونښوده

یوه روی انعام به ورکړم، نوکه چا اوښوده هم دروپی اخیستو مستحق نه
 دی، ځکه چه دا اجازه صحیح شوی نه ده، اوکه یو خاص سره ته ئی اوری
 چه که تا اوخوده روپی به درکړم، نوکه هغه فی الحال په دغه ځای
 اوخوده نوهیڅ انعام ئی نه رسی، اوکه لاریانی اوخوده نوانعام به ورکوی
 که دبچی دلوبولو دپاره چه کوم نوکرمزدوروی، دهغه دغفلت نه که دبچی
 کالی وغیره ورک شو، نوتاوان اخیستل ئی جائز نه دی. (۵)

(۱) حاشیه شیخ احمد بن محمد صاوی مالکی علی هامش الشرح الصغير، ج ۴ ص ۵۰۵.

(۲) (بین الحقائق، ج ۳ ص ۳۰۸.)

(۳) (لغة السنة، ج ۳ ص ۵۹۲.)

(۴) (البحر الرائق، ج ۵ ص ۴۱.)

(۵) جنتی کالی، ج ۵ ص ۲۳۹.)

فصل: اجاری بزلدنه
 ۱۱۱
 لوم بخت دستاو دھارو مال

{ ۵: - دگرالی په سامان اومکان کی دزکوة ورکولو حکم }

مسئله: - دگرالی په سامان اومکان کی زکوة لسه، که تجارت دپاره خاص کړی شوی وی لوبيازکاة پکی واجب دی، دتجارت اواجاری تر مېنځه پدی شان سره فرق دی، چه تجارت کی یو طرف له بل طرف لره دغه شی په مکمل شان مال جوړولی شی، او بیادھنی قیمت وصولولی شی، اواجاره کی په رختی ډول دیو شی نه صرف دفایدی پورته کولو موقعه چاته ورکولوی شی، اود هغه عوضانه وصولولی شی، نوکه چاسره دیو نه زیات ماکانات (کورونه) وی، سائیکلونه او گاډی وی، دسپلائنگ کمپنی پشان لونی، جامی، لوبچر یا کتابونه وی، چه دھنی دمطالعی فیس وصولولی شی، پدی تلو شیا، تر کی به زکات واجب نوي، خکه چه زکاة دتجارت په مالونو کی وی، نه دا چه صرف په اجاره وی، که یوکس ډبل نه دتجارت په نیت مکان یا غلام وا خستر، بیانی ورباندي کرایه اولگول، نواوس به هغه دتجارت مال نه پاتی کیږی او که دتانی پیتلوڅه دیچکی نی واخستل، هغه نی خان سره په کرایه دلگولو دپاره کیښودل، په دغه سامانو نوکی به زکوة نه واجیږی، البته ددېه کیدونکی گته که نصاب دزکاة ته اورسی نوزکوة به پکی لازم کیږی. (۱) -

{ ۵: - تنخواه کی دزکوة حسا بولو حکم }

مسئله: دکورنو کر، خدمتکار دانی، وغیره لره هم زکوة ورکولی شی، لیکن په تنخواه کی به نی ورته نه حسابوی. او په دی کی به دزکوة نیت کوي. (۲)

{ ۶: - دلال ته داجرت ورکول حکم }

مسئله: - دلال ته اجرت ورکول اگرچه پکی اختلاف شته، لکن بنا بر ضرورت یې په جواز فتوی کړی شوی ده، البته پدی شرط چه په ښکاره طریقہ

۱ لاری لاضی خان بحوال جدید فقھی، مسائل ص ۱۱۶

۲ جسی کالی، ج ۳ ص ۲۴۲

اجرت متعین کړی شي، مثلاً روپۍ کی لس پیسۍ اوداسی نور. (۱)
 { ز: - دمزدور د اجرت په اداء کی خاصه توجه }

مسئله: - دمزدور په اجرت اداء کی سرعت پکار ده، د حضرت ابوهریره رضی الله تعالی عنه نه روایت دي چه انحضرت صلی الله علیه وسلم او فرمائیل چه مزدور ته خپله مزدوری دخولی وچیدونه مخکی ورکړی. (۲). والله تعالی اعلم بالصواب

﴿ شپږم فصل: د سود پيژندنه ﴾

﴿ اول بحث: د سود توضیح ﴾

محترموا! ربا په لغت کی زیتوالی ترقی کول ته وائی، اود شرعی په اصطلاح کی ربا هر هغه زیتوالی ته ویل کیږی چه پرته د مالی عوض څخه په لاس راوړل کیږی، پس د مبارک و آیاتونو او احادیثو څخه دا په ډاگه کیږی چه سودیولوی او عظیم جرم دی، چی دهغی خوړونکی ته دردناک عذاب چی د الله تعالی اور رسول کریم صلی الله علیه وسلم سره جنگ او سخته دښمنی، دایمان منافی او ضد عمل، د دیرش ځله زنا کول بلکه دخپلی مور سره زنا کولو برابر، د قیامت په ورځ لیونتوب، اور سوائی، او جهنم ته ننوتل دی، دالوی جرم نه یواځی د سود په خوړونکی بلکه د سود په ورکونکی، د سود په شاهد، اود سود په لیکونکی هم لعنت ویلی شویدی نو اصلاً سود د ټولنی دافردو ترمنځ بی اتفاقی، بددلی، تصادم او ټکر روالی، او هم ددوه قومونو او ملتونو ترمنځ دروا بطو خرابوالی، او خفگان پیدا کوی، د فکر او غورځای دی چی مؤمن خپل ایمان ته متوجی شي، د دنیا او مال محبت پریردی، او خود غرضی، بخل، سنگدلی، زرپرستی او چل ول معاملی څخه تیر شي، بلکه دخپلو ورونو سره مرسته او کومک وکړی؛ پس عموماً سود (ربا) په څلور عمده برخو ویشل شوی

^۱ ردالمحتار، ج ۵ ص ۵۳

^۲ رواه البيهقي في سننه حسن كما في اعلا السنن، ج ۱۶ ص ۱۵۱

دوهم فصل: دسود پيژندنه ۱۱۳
 دوهم بحث: دجاهليت سود تشریح
 دي چي دجاهليت ربا، اضافي ربا، تجارتي ربا، اوبالنگي ربا چه تفصيل ئي
 ان شاء الله تعالى وروسته راخي .

﴿ دوهم بحث: دجاهليت سود تشریح ﴾

محترموا دجاهليت ربا هغه سود څخه عبارت ده چي داسلام څخه مخکي په
 عربو کي ئي رواج درلوده، څرنگه چي داسود بالکل واضح او څرگند وه، نو
 قرآن کریم دهغي تشریح ونکړه، او صرف دهغي دحرمت په هکله ئي خبر
 داري ورکړ، او کله چي آيت شريف نازل شونوپورته ددي څخه چي څوک
 دهغي تشریح اوتفصيل وغواړي، تولومسلمانانوهغه پريښودله، او چاته هيڅ
 شک اوشبه پکي پيدا نه شوه، دي ربا ته کتابونه کي ربالقرآن هم ويلي
 شوي ده، ددي څلور صورتونه دي-

الف: په جاهليت کي سود داوه چي يو چا به په بل باندې شئي خرڅولو، خو چي
 کله به هغه وخت پوره شواو قيمت به ئي اداء نکړي شو، نو دهغي وروسته
 به يي ورته مهلت ورکول کيده، خوا اضافي قيمت به ئي ورباندې ايښودلو.

ب: - ځيني خلقوبه قرض اخستو، اودا به ئي ويل: کچيري تاسي مونږ ته
 دومره مهلت راکړي، زه به دومره اندازه گته اواضافه روپي به درکړم.

ج: او کله به داسي کيدل چي دقرض ورکولو په وخت کي به دوخت او مقدار
 دگتي معلوميده چي دا اصل مال څخه به دومره زيات ورکول لازم وي.

د: - داسي هم کيدل چي دقرض په مقابل کي به ئي مياشت په مياشت
 ورڅخه گته اخستله، او چي کله به وخت پوره شونوبيا به ئي اصل مال هم
 ورڅخه اخستلو، او که دا اصل مال ورکول به ځنډ شول، نو بيا به ئي دسود
 ليصدي پري زياتولي، نو په صراحت سره قرآن کریم کي ده دغو څلورو

صورتونو ممانعت راغلو او حرمت يي نازل شو. (۱)

﴿ دریم بحث: د ربوا الفضل تشریح ﴾

محترموا ربوا الفضل: هغه سودخه عبارت ده چی زیاتولی او کموالی په یوجنس کی وی چی ددی صورت دادی چی دیوجنس دوه شیان په مقدار سره تبادلہ شی، چی بعینه ددغه جنس یونفرزیات مقدار اخلی اوبل ته نمی کم ورکوی، لکه مثلاً غنم په غنمو بدل کړی، خو یو نفر ورخه زیات مقدار اخلی، اوبل ته کم مقدار ورکړی، یاجوار په جوارو بدل کړی، خو په زیات یا کم سره بی تبادلہ کوی، په احادیثو کی ددی اضافی ربا حرمت واردشویدی. (۱)

﴿ خلورم بحث: د تجارتی سود تشریح ﴾

محترموا! تجارتی ربا: هغه سودته ویل کیږی چه خلق د تجارتی معاملی لپاره قرض واخلی، او په هغی باندی بیاقرض ورکونکی ته زیاته گتته اوبرخه ورکوی، لکه داپدی زمانی کی زیات رواج هم دی، ددی صورت دادی چه مثلاً یوسری دبل کس نه زر روپی په سلو کی دادرپو روپیو په گتته ورکولوبا ندی واخلی، اوبیایي په کار و اچوی، اوس پدی صورت کی لاندینی احتمالات شته: الف:— که مثلاً تاته په یوه کال کی پنخه سوه روپی گتته لاس ته درغله، نوته گتته من شوی چه دیرش روپی قرض (پور) غوښتونکی ته ورکړی، نوری ټولی روپی ستاشوی.

ب:— که مثلاً تاته په کال کی ټوله گتته شپيته روپی لاس ته درغله، له هغوی نه به ته دیرش پورواله ته ورکړی، اودیرش به ستا وی.

ج:— که مثلاً تاته په پنخو کالونو کی یوسل او پنخوس روپی گتته راوتله، نوته به ټوله گتته پور والاته ورکوی، اوتاته به هیخ هم نه درپاتی کیږی.

۱۱۵
 فصل: دسود پیز لده
 خله رم بحث: دتجارتي سود تشریح

د: - که مثلاً تاته په پنځو کاله کی دوه سوه روپي گټه اووتله، لډینه به یوسل او پنځوس پوری والاته ورکړی، او پنځوس روپي به تاته پاتی شی.

ه: - که مثلاً تاته په ټول یوه کال کی ټوله گټه دیرش روپي لاس ته درغله، بیا به هغه هم ته ټولی سود والاته ورکوی، او تاته به ورته هیڅ هم پاتی نه شی.

و: - که مثلاً تاته په یوه کال کی لس روپي گټه در اووتله، نو ته به سل روپي نوری له جیب نه اودالس روپي به هم دسود خاوندته ورکوی، نو له خان نه به تاوانی شی.

ز: - که مثلاً تاته یوه کاله پوری تجارت وکړ خو دیوی پیسی گټه دی هم نه وکړه، نو زیاردی هم خویشی ولاړل، او دیرش روپي به هم له خپل جیب نه بائلی.

ح: - که مثلاً که تاترلسو کالو پوری تجارت وکړ، بیا هم څه گټه لاس ته نه درغله، نو ته به دری سوه روپي سود واله ته خپل خان نه ورکوی.

ط: - که مثلاً تاییو کال سوداگری وکړه خو ورکی سل روپي دی تاوان وکړی، نو داتاوان به هم کشوی، او دیرش روپي به علاحده هم ورکوی.

ی: - که مثلاً تالس کاله دسوداگری کاروبار وکړو، پدی کی دی سل روپي تاوان هم وکړ، نو تاوان هم ستا پری غاړه دی، او دری سوه روپي دسود به هم ورکوی، قیمتی وخت دی هم ضائع کړ. لدی لس صورتونونه یوا ځی لومړی اودویم صورت داسی دی چه ورکی ددواړو خواؤ گټه ده، په پاتی گردو صورتونو کی ستا تاوان دی، کله لږشی گټه دپروخت تیردل، کله هیڅ هم نه، کله بیا چه له تاوان، کله له دی امله چی سوداگری گټه نه وکړه، کله لدی وجی گټه خوئی وکړه خو په سود کی ولاړه، خودسود خور گټه پدی ټولو صورتونو کی شته، دهغه داهیڅ هم کم نه شوه، اوس تاسی دانصاف په سترگو ورته وگوری! چی داهم کمه معقوله معامله ده، چه ورکی دیوه اړخ هیڅ تاوان

هم نوی، او د ابل کله لږه گټه، کله ډیر تاوان وی، او د ایولوری
گورڅپړی، دامعامله کوم شریعت او کوم عقل زغملاي شی؟ (۱)

﴿ پنځم بحث: د زمکې د سود تشریح ﴾

{ الف: - زمکې د گرهني سود حکم }

محترموا مخابره چی د زمکې د گرهني یوه معامله ده چه آنحضرت صلی الله علیه وسلم مخابره د سود یو صورت بللی او نارو کړیده، اولکه څرنګه چی د سود خور پر خلاف دخدای جل جلاله اود هغه در رسول کریم صلی الله علیه وسلم له طرفه د جنگ اعلان شویدی همدادول ئی دمخابره کوونکی پر خلاف د جنگ اعلان وکړو فرمایي: "من لم یتک المخابره فلیؤذن بحرب من الله ورسوله" رواه ابوداود حکم. دادی صورت داچی د زمکې کوم کبنت گربه یوه معلومه اندازه غله د زمکې خاوند ته ورکوی، لکه فرض ئی کړه چی ستایو څه زمکه ده اوت هغه زمکه زیدته مثلا پدی معاهده کبنت لپاره ورکړی، چه زید به دغلی یوه معلومه اندازه مثلا پنځه منه مجانا هر فصل باندي تاته درکوی، دهغی حاصلات لږوی او که ډیروی او که بالکل هیڅ نه وی، یا مثلا داسی قرارداد وشي چی څومره حاصلات چی دویالو پر څنډو باندي وي، هغه به تاته درکوی، اونور به د کبنت کاروي، دامعاملی ته مخابره ویل کیږی داصورت حرام اوسوددی اوداصورت له تجارتي سود سره مشابه دی. (۲)

{ ب: - د گروي سود کولو حکم }

مسئله: - دبیرته ورکولو په شرط خرڅول شرعاً جائز ندي، یعنی چی یوسړی چاته قرض ورکړی، او دهغه په بدل کی تری کور، مکان، او یا دکان ترلاسه کړی، پدی شرط چه کله ستا قرض اداء کړودغه مکان وغیر به درته واپس

۱ سود مسئله، ص ۱۱۶

۲ سود مسئله، ص ۱۱۶

پنجم فصل: دسود پيژندنه ۱۱۷ پنجم بحث: دامگي دسود دسود
 درگرم، اوبيا به هم ستاخپل ملک وی، فقهاوو په نزد ديهه بيهه بالوفاه
 رهن معاد، بيع امانت، اوبيع اطاعت ويل کيژي، پس چه دا شرط دهرعت
 داصولو اودبيعي دتفاضو خلاف دی، نوڅکه به دغه معامله ناروا وی، البته
 عملاً د دی شکل دگروي دی، مگردغه معاملي ته دگروي ويلوصفا مطلب
 دادې چې ددي خريدارته چې حيثيت نې په حقيقت کې دگروي دمال
 دامانتگر دي، چې فقه په اصطلاح کې مرتهن ورته ويل کيژي، ددي څخه
 داستفاده کولو هيڅ حق نلري، څکه چې دگروي مال څخه فائده اخيستل هم
 رواندي، مگردغه معاملي ته دگروي ويلوصفا مطلب دادې چې ددي
 خريدار ته چې حيثيت نې په حقيقت کې دگروي دمال دامانتگر دي، چې
 فقه په اصطلاح کې مرتهن ورته ويل کيژي، ددي څخه داستفاده کولو هيڅ
 حق نلري، که څه توان يی ورته رسولي وی دهغي ضامن دی، البيع الذي
 تعارفه اهل زمننا اختيلاً للربا وسموه بيع الوفاء وهورهن في الحقيقة
 لايملكه ولاينتفع به الا باذن مالكة، وهوضامن لما اكل من ثمرة واتلف من
 شجرة. (۱) نوددغه مکان وغيره نه دفائدي اخستو هيڅ حق نلري، لکه نن
 سبا په بناړو کي ځيني خلق داسي کوي، پدی کې شک نشته چې ځيني
 حنفي فقهاوو دمالک په اجازه دگروي له ماله دفائده اخستلو اجازه ورکړي
 ده، مگردا صحيح ندي ولي اسلام کې پرقرض (پور) هرډول نفع اخيستل
 حرامه کړي ده، اويو صحيح حديث شريف ده (کل قرض جرنفعا فهورباً)
 اودسود حقيقت خولا پرېږده دسود شک هم زغمل کيدلای نه شی، څکه
 دگروي له سامانه فائده اخيستل جائزه نه ده، خاتم الفقهاء علامه شامي
 پردي تبصره کړی ده او ليکی! والغالب من احوال الناس انهم انما يريدون
 عند الرفع الانتفاع ولولا له لما اعطاه الدراهم وهذا بمنزلة الشرط لانه

المعروف كالمشروط وهو ما يعين المنع. (۱) بله خوابدی زمانه کی داد قرض ورکونکی له طرفه یو شرط جوړشویدی، (ای المعروف كالمشروط). یعنی کوم شی چه دعرف اورواج صورت اختیارکړی، نو هغه شرط بللی شي، ځکه متاخرینو فقهاؤ داینخي حرامه بللی ده. (۲)

﴿ شپيرم بحث: دبانکي سود تشریح ﴾

{ الف: - بانکي سود معامله }

مسئله: بانکي سود BanKing invest اوس وخت کی بنکونه دخلقو څخه

روپی اخلی، اودهغی په مقابل کی دیومعین وخت ترتیدوروسته څو فیصدی سود ورکوی، اوهم خلقوته قرض ورکوی اودمعین وخت ترتیدوروسته څو فیصده سود ورڅخه اخلی، دبانک زیاته معامله په همدی سود ورکولو اوسود اخستلو باندی ولاړه ده، ځکه چی په کومه فیصدی سود باندی قرض اخلی، او په زیات فیصدی سود باندی قرض ورکوی، دمثال په ډول خلقوته لس فیصدی سود ورکوی، او خلقو څخه بیاینځه لس فیصده سود اخلی، چی داینځه فیصده دبانک گټه اوفائده ده دا معامله کوم شریعت ممنوع کړیده (۳)

{ ب: - بینک کی د روپیو جمع کولو حکم }

مسئله: - په بینک کی روپی جمع کول سودی اداری سره امداد کول دی، چه هغه ورسره مضبوطی کیږی، نوبی ضرورته به بینک کی رقم جمع کول او اینودل مکروه دی، لکه فقهی په کتابونو کی ددی ډیر نظیرونه او مثلونه موجود دی، چناچه فقهاؤ په فتنه گرو خلقو دوسلی خرڅول، او په داسی سړی امر د (لغریزن) غلام خرڅولو ته مکروه

۱ شامی، ج ۵ ص ۱۱۵-۳۱۰

۲ خلاصة الفتاوی، ج ۲ ص ۱۸۶.

۳ اسلامی اقتصاد ص ۲۲۴

شہرم فصل: دسود پیز لدا نه

رئیلی دی چه پدی مهلك مرض لوطت مبتلاوي. (۱)

{ ج: - دیوواقعی ضرورت په بنا بینک کی درویو اینسودلو حکم {
مسئله: - که په بینک کی دیوواقعی ضرورت په بنا باندی کینولی شی مثلا
پدی عرض چه درویو صحیح حافظت اوشی، خوک ئی رانه لاندی او غبن
نه کړی، څه خاص ټیکس راباندی اونه لگی، یابل څه قانونی ضرورت
ورته پین شوی وی، دگناه په کار کی دامداد کولونیت ئی هم پکی نوی،
اولدینه بغیر بل دحفظت ځای نه لری، نوپه بینک کی دجمع کولو څه باک
نه معلومپړی لکه چه علامه سرخسی رحمه الله تعالی لیکلی. پدی کی هیڅ
باک نشته چه مسلمان ذمی ته داستوگنی دپاره کورور کړی، که هغه پکینی
شراب اوڅکی، او صلیب عبادت پکی کوی، یاپکی خنزیران ورتنباسی، نو
مسلمان ته به ئی هیڅ گناه نه وي. (۲)

{ د: - نوټونه (روپیو) دسود حکم {

مسئله: - نوټونه اصطلاحی روپی دی نه خالص سند او وثیقه لهدا پا نوټونو
کی زیاتوالی اوربوا حرمه دی لکه فلوس نافقه وکی. (۳)

{ ه: - دبینکی سود روپیو دلگولو ځایونه {

مسئله: - دبینک دسود دلگولو ځایونه دادی چه دبینک دسود په باره کی
دا باور لرل په کاردی چه درویو دسود نه پنخپل ځان لگولی شی، او نه په
کی څه خیرات ورکولی شی، پنخپل ځان دخرڅ کول یو صورت داهم دی
چه بل خیزپړی واخلی، او په هغی خپل ضرورت پوره کړی، یاپه داسی یو کار
کی ئی اولگوی چه دهغی ذمه واری په حقیقت کی په ده راځی، دلته خیرات

۱ ردالمختار، ج ۵ ص ۳۸۶

۲ المسوط، ج ۱۶ ص ۳۰۹

۳ الفقها الحنفی فی ثوبه الجدید، ج ۲ ص ۲۳۶

او صدقي نه مراد هر قسم صدقه ده مثلاً واجب صدقه وی لکه سرپایه، زکوه، قربانی او کفاره وغیره شوه، او یانقلی صدقي او بخشش هم وی، چه خوګ نئ د خپل اړخ نه د صدقي په ډول د بیکړی په څه کارکی اولګوری، د دینه علاوه په نوروداسی صورتونو کی نئ لګولیشی مثلاً دیو ضرورت مند ذاتی ضرورت ورسره پوره کړی، د شریکی فائدی په کارکی اولګولیشی، مثلاً یوه کوهی، یا تالاو پری جوړ کړی شی، البته په جوماتونو او مدراسو کی خودداسی رقم نه شی لګولی، لیکن دبیت الخلاء په جوړولو کی ددی د لګولو علم او اجازت ورکړی دی، داشان په نورو جزئیاتو کی هم لګولی شی چه ذکر به نئ کیږی: لکه د حکومت په ناروا ټیکسونو کی ورکړی شی، او سودی قرضی پری هم خلاصولیشی. (۱)

{ و: - ضرورت مند لره د سود اخستل حکم }

مسئله: - سود اخستل او ورکول دواړه گناه لری، نو بڼکاره خبرده چه په اصولی ډول به سودی قرضه اخستل روا نوي، البته په داسی صورت کی ځنی فقهاو داخستلو اجازت ورکړی، چه بغیر د سودی قرض اخستلو نه بل هیڅ صورت کی د کارروانیدلو، او د ژوند تیروول نئ ناممکن بڼکاری، بنیادی ضرورتونه ورته نه حاصلیږی، مثلاً د خوراک ځکاګ، اغوستن، او استوګنی هیڅ بندوبست نئ نشی کیدی، البته که دعیش وعشرت په غرض، یا په اعلی پایه د ژوند تیروولو په عرض داسی کوی، نو داهیچری رواندی، لکه علامه ابن نجیم مصری رحمه الله تعالی علیه لیکلی دی چه ضرورت مند لره په نفع ورکولو سره قرض اخستل روا دی. (۲)

^۱ جدید فقهی مسأله (۲۷۰)

^۲ الاشباه و' (۱۱۵)

فجرم فصل: دسود پڙند له ۱۲۱ اوم بحث: دسودد علتنو تشریح

{ ز: - دارالحرب کی دسود کولو حکم }

مسئله: - په دارالحرب کی دسود کولو په ارتباط د فقهاء کرامو نظر د ادی: چه په دې کی خود هیخ چا اختلاف نشته چه د آمان غوښتونکی په حیثیت سره خوږک دارالحرب نه دارالاسلام ته په عارضی ډول راشی هغو څخه دسود اخستل درست ندی، البته چه یو مسلمان په عرضی آمان حاصلولو سره دارالحرب ته ورشی نو هغه ددغه حربیانو څخه دسود اخستل شی اگر چه دغه حربیان مسلمانان هم وي، داد امام ابی حنیفه او امام محمد رحمهما الله تعالی رانی ده، البته دائمه ثلاثه او امام ابی یوسف او جمهورو فقهاورانی داده: - چه پدی صورت کی هم دسود اخستل حرام دی. (۱)

{ اوم بحث: دسودد علتنو تشریح }

{ الف: - دسود یوی جامعی قاعدی توضیح }

مسئله: - کله چه د اثابته شوه چه علت دسود حرمت دا حنا فوپه نزد قدر اوجنس دی، نو قاعده داده چه کوم ځای کی د ادواړه شیان وموندلی شی هلته به زیاتی اونسیدادواړه حرامه وي، او په زیاتی سره یا په نسیا سره به ئی خرڅول حرام وی، او کچیری په دوی کی یو علت وموندلی شو، مثلا صرف قدر او موندلی شی لکه غنم دوو ر بشو په عوض خرڅول، چه غنم او وربشی دواړه کیلی دی، یا صرف جنس او موندلی شولکه غلام لره د غلام په عوض خرڅول، یا هروی جامی (کپری) د هروی جامی په عوض خرڅول، چه غلام او که نه کیلی دی اونه وزنی، نو په دی دواړو صورتونو کی کمی زیاتی به جائزوی، او په نسیا خرڅول به ئی حرام وی، او که دواړه علتونو اونه موندلی شول نو دواړه خبری یعنی زیاتی اونسیدادواړه به جائزوی، لکه دروې او غلی لین دین چه په دوی کی نه جنس یو دی اونه قدر یو دی. (۲)

السیر الکبری، ج ۲ - ۱۲۹۳ (قره ۲۹۱۹) بدائع الصنائع، ج ۷ - ۱۳۲

ملخصا منابه، ج ۳ - ۸۱

{ ب: - د سود په معامله کې د صفت اعتبار نشته }

مسئله: - درېوایه مالونو کې د عمده اوناکاره څه امتیاز نشته بلکه دواړه برابر دي پس جیدلره درې په عوض باندې په کمی اوزیاتی سره خرڅول جائز دي لکه مثلاً عمده کجوری اوناکاره کجوری په عوض سره په کمی اوزیاتی خرڅول رواندي ځکه چه حدیث کې حرمت مطلق ذکر دی. (۱)

{ ج: - د سود په معامله کې د عدد متقاربو حکم }

مسئله: - دیوی هګی د دوو هګو په عوض، اویوی خرما په دوو خرماګانو، اویو غوز په دوه غوزانو په عوض خرڅول جائز دی، ځکه چه دانه کیلی دي اونه وزنی، لیکن صرف زیاتی جائز دی، پس پاتی شو تاخیر اونسیان دا جائزه دی، ځکه چه بدلین یو جنس دی، اوزمونږ احنافو په نزد تنها د جنس اتحاد حرامونکی د نسیادی وبس. (۲)

{ د: - خرماګانو د معاملي دیو صورت بیان }

مسئله: د پخته اوتروتازه کجور و بیعه داوپخته اوتروتازه کجور و سره متماثلاً خرڅول، خو په اتفاق باندې صحیح ده، لیکن دامام اعظم صاحب په نزد د پخته کجور و تازه کجور و په عوض د کیل په اعتبار سره سر په سر خرڅول هم جائز نه دی. علامه عینی او محقق ابن الهمام میلان د صاحبینو قول ته دی. (۳)

{ ه: - د قمار اولاتري شرعی حکم }

مسئله: - قمار اولاتري ناروا دي، د قمار اطلاق داسي هره معامله باندې کیږي چی د نفع اوتوان په مابین کې وي، مثلاً د لاتري تکت دي - که یو سړی د اېه پنځه افغانی رانیسي هغه د گټي هیله هم لري اود تاون خطر هم لري، کیدلای شي چې ده ته دیولک افغانیو انعام راووزي، او عینی ممکن دي

۱ هدايه، ج ۳ ص ۸۰

۲ هدايه، ج ۳ ص ۸۳

۳ هدايه، ج ۳ ص ۸۵

دېرېم فصل: د سود پېژندنه ۱۲۳ اوم بحث: د سود د علم لوستلېرېح

چې دا پنځه روپۍ هم بېرته رانه شي، يامثالاً د دوو وخلقوبه ما بين کې د خفستا، منلاه، مقابله وي، چې که ته زماڅخه مخ ته شوي زه به تا ته پنځه افغاني درکوم او که زه درڅخه مخ ته شوم ته به پنځه افغاني ماته راکوي، دلته معامله دگتۍ اوتوان په ما بين کې ده، ځکه دقماردي، امام ابوبکر جصاص رازي رحمه الله تعالى ليکي: لاخلاف بين اهل العلم في تحريم القماروان المخاطرة من القمارقال ابن عباس رضي الله تعالى ان المحاطرة قمار. (۱) پس لاهري هم دغسي دجواري کاروباردي چه نن په بين الاقوامي پيمانه باندي جاري دي، ددي پاره ټکټ اخستل څوک مقصودنه بولي بلکه ددي فال وتلوپه اراده ئي اخلي، چه کيدي شي پدي نمبر باندي هغه شي يارقم ملاوشي، دکوم په اميدئي چه اخلي. لهادا دا اخستل اوخرڅول تجارت نه دي، بلکه جواري وقمارده، چه ټکټ اخستل ئي هم گناه دي، او ټکټ خرڅول هم گناه ده، چه دي دائم اوعدوان کوونکي يواځي نه بلکه دپته بلنه هم ورکوي، او دجاهليت په زمانه کې دجواري کاروبار دپيرزيات وو، خلق ددي دومره عاشقان ووچه ډيرکرتنه به ئي خپل بال بچ اوخپلي بنځي هم پري داو کولي دبرخوويشلو، اودا اخستلو خرڅولو مختلفي معاملي ئي په جواري ولاړي وي، اسلام په يوځل ددي ټولونه منع اوکړه، علامه شاه ولي الله محدث دهلوي رحمه الله تعالى په ډيره ښه طريقه ددي مختلفو معاملو دمنعي وجه اود جواري په اقتصادي اوتمدني نقصاناتورپا اچول ده هلته ئي مطالعه کړي. (۲)

{ و:- دچټ فنډاچولوحکم }

مسئله:- قسط **CHITFUND** چټ فنډاچول داچي څوکسان راجمع

۱ (احکام القرآن، ج ۱ ص ۳۸۸).

۲ حجة الله البالغة، ج ۲ ص ۹۸.

شی هره هفته یا هره میاشت پکی دشیر خو کسان رقم جمع کوی، دغه جمع شوی رقم ټول په یوه ټاکلی نیته یو یوکس دخسني قرغه اندازی اچولوپه ذریعه وارپه وار تراخلي، دچل هرچا ته ورخی د صورت مباح دی دادی (حرمت) نارووالی هیخ څه وجه پکی نشته، کله کله داسی هم کیری چه دی کی څوک شریک دوخت نه وړاندی دخپل قسط (رقم حاصل کړی)، پدی شان دغه کس دنوروشریکانو (ملکرو) قراضدار شوچه قرض ورته خپل څه موده مهلت اوډیل ورکوی، اوپه دغه قرض تری نفع هم اخلی، پدی شان دایواخی روانه بلکه دانسانی همدردی او اسلامی اخلاقو تقاضاهم ده، خواوس اوس پدی کی داسی یو صورت هم روان دی چه څوک دخپل خپل وخت نه وړاندی خپل قسط وصول غواړی، نو دخپلی برخی رقم نه کم واخلي دغه پاتی رقم نور شریکان خپل مینخ کی اوویشی، داصورت قطعاً حرام اوناروادی په سودکی داخل دی، ځکه چه قرض ورکونکو دخپل قرض په بدله کی نفع حاصل کړه. (۱)

{ ز:- دسود خواړونکی سره دشرکت حکم }

مسئله:- دحرام خواړونکی سره شرکت جواز نلری، له حضرت عبدالله بن عباس رضی الله عنهما روایت دی فرمائی: چه له کوم یهودی عیسائی او مجوسی سره داشراکت کار وبارمه کوه خلقو ورنه وړبتل ولی؟ ده مبارک وفرمائیل چی دا خلق درباوسود معاملی کوی، اوربااوسود حلال نه دی. (۲)

والله تعالی اعلم بالصواب.

۱ جدید فقہی مسائل، ج ۱ ص ۲۴۳

۲ کنز بر مزعبدالرازق فی الجامع، ج ۲ ص ۲۴۳

محترموا به خاتمه کی به ان شاء الله تعالی داسلامی اقتصاد به ارتباط خلوبنیت (۴۰) احادیث یعنی نبوی صلی الله علیه وسلم لارنبوونی نقل کروچه له یوی خواپه هغه حدیث شریف عمل وشى چه فرمائی: چه خوګ خمامت ته خلوبنیت احادیث اوبنائی، اودنفعی درسولوپه خاطر خلوبنیت احادیث یاد کړی، نودقیامت په ورځ به الله پاک جل جلاله هغه دعالمانوپه ډله کی پورته کړی، اوزه به دقیامت په ورځ دهغه شفاعت کونکی اوگواه یم، اوبله خوا زمونږدغه رساله ورباندی متبرکه شی.

عن ابن مسعودرضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم طلب کسب الحلال فریضة بعد الفریضة. (۱)

زباره: حضرت عبدالله بن مسعودرضی الله تعالی عنه فرمائیلى چه آنحضرت صلی الله علیه وسلم ارشاد اوفرمائیل: دحلال کسب تلاش کول فرض دی وروسته دیوفرض څخه یعنی حلال رزق طلب، اودی لپاره کسب او عمل دنبی کریم صلی الله علیه وسلم په نظرکی دومره اهم کاردی چه ده مبارک صلی الله علیه وسلم کسب حلال کول دنوروفرائضو لکه مونځ، روزه وغیره نه وروسته یو فریضة مقرره کړېده.

(۲) عن ابی رافع رضی الله عنه قال قیل یارسول الله ای الکسب اطیب؟ قال عمل الرجل بیده وکل بیع مبرور. (۲)

زباره: حضرت ابورافع رضی الله عنه نه روایت دی فرمائی چه آنحضرت صلی الله علیه وسلم څخه پوښتنه وشوه چه ای دالله تعالی رسوله کوم کسب زیات پاکیزه دی؟ ونی فرمائیل چه دسپری دخپلو لاسونه کار، اوهرنیکی واله

تجارت یعنی سری چہ پنچپولاسو نوباندی کارکوی اوخپلہ احتیاجی
چاتہ نہ ظاہروی داپاکیزہ کسب دہ، اوددوکی نہ خالی تجارت ہم پاکیزہ دہ.
(۳) عن ابی سعید رضی اللہ عنہ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال التاجر
الصدوق الامین مع النبین والصدیقین والشهداء. (۱)

ژبارہ: حضرت ابو سعید رضی اللہ تعالیٰ عنہ نہ روایت دی چی آنحضرت صلی اللہ علیہ
وسلم فرمائیل: رہنتونی امانت دار تاجر دانباؤ، صادقینو اوشهداؤ سرہ وی
یعنی داخوشخبری دہغہ رہنتونی آمین تاجر لپارہ دہ چہ قیامت کی دانباؤ
علیہم السلام، صدیقینو اوشهداء کرامو سرہ بہ یوخای وی، نو پکارده چہ انسان
ددغہ مرتبی حصول لپارہ رہنتونوالی دیانت داری اختیار کری.

(۴) عن ابی ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ان رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ
وسلم قال ان اللہ یحب سمس البیع سمس الشراء سمس القضاء. (۲)

ژبارہ: حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نہ روایت دی چی آنحضرت صلی اللہ
علیہ وسلم او فرمائیل: چہ بی شکہ اللہ تعالیٰ خرید او فروش کی فیصلہ
کولو کی آسانی کول خوبنوی. یعنی تجارت کی نرمی آسانی، کم قمتی،
او غریب تہ قرض ورکول وغیرہ آدابولحاظ دکامیابی اود اللہ تعالیٰ
دمحبوبیت ذریعہ دہ.

(۵) عن ابی ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ
وسلم الرباسبعون حوبا ایسرہا ان ینکح الرجل امہ. (۳)

ژبارہ: حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نہ روایت دی چی آنحضرت صلی اللہ
علیہ وسلم او فرمائیل: دسوداویا گناہ دی، لہ ہغہ وپہ گنہ داسی دہ لکہ یو خوک
چی لہ خپلی مور سرہ زناکوی، یعنی سود ڈیر قبیح کسب او کار دی.

۱ ترمذی، ج ۱ ص ۱۲۵

۲ ترمذی، ج ۱ ص ۱۵۸

۳ ابن ماجہ ص ۱۶۲

(۶) عن ابی هریر رضی الله تعالی عنه عن النبی صلی الله علیه وسلم قال اجتنبوا السبع الموبقات قال یارسول الله وماهن؟ قال الشرك بالله والسحر وقتل النفس التي حرم الله الا بالحق واكل الربا واكل مال الیتیم والتولی یوم الزحف وقذف المحصنات الغافلات المؤمنات. (۱)

ژباړه: حضرت ابوهریر رضی الله تعالی عنه نه روایت دی چه آنحضرت صلی الله علیه وسلم او فرمائیل: تاسی د اوو شیانو څخه ځان وژغوری چی هلاکوونکی دی اصحاب کرامو عرض وکړو یارسول الله هغه اوو شیان کوم دی؟ حضرت صلی الله علیه وسلم او فرمائیل: اول د الله تعالی سره یوڅوک شریک نیول. دوهم جادو کول. دریم داسی څوک په ناحقه وژل چی دهغه وژل الله تعالی حرام کړی وی. څلورم سودخوړل. پنځم دیتیم مال خوړل. شپږم دجنگ جگری ډگریته شاگرځول او تبتیدل. اوم اوپر پاک لمنو ناخبرو مؤمنو بنځو باندي تهمت لگول، یعنی سود ډیر مذموم او مهلک شی دی چه عظیمو مهلکو گناهونو سره یوځای ذکر شویده.

(۷) عن عبدالله بن مسعود رضی الله تعالی عنه قال لعن رسول الله اكل الربا وموكله وشاهده وكاتبه. (۲)

ژباړه: حضرت عبدالله بن مسعود رضی الله تعالی عنه څخه روایت دی چه آنحضرت صلی الله تعالی علیه وسلم پرسودخوړونکی، سود خوړونکی، سود پرشاهدان، و اولیکونکی باندي لعنت فرمایلی دی یعنی سود یوه بدترینه گناه ده چه په څلورو کسانو باندي ورکی لعنت وئیلی شویدی.

(۸) عن ابی هریر رضی الله تعالی عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم لياتين على الناس زمان لا يبقى منهم احد الا اكل الربوا فمن لم ياكله اصابه من غباره. (۳)

^۱ رواه البخاری، ج ۱ ص ۳۸۸

^۲ رواه الترمذی، ج ۱ ص ۱۴۵

^۳ رواه ابوداود، ج ۲ ص ۱۱۷

ژباړه: حضرت ابوهرير رضي الله تعالى عنه نه روايت دي چي رسول الله صلى الله عليه وسلم وفرمائيل: يوه زمانه راځي چه هيڅوك به خولدي پاتي نشي سود به خوري، او كه ئي ونه خوري هم خوگړد به ئي ورته ورسپري يعنى دحديث شريف له وړاندويني سره سم دسود درواج پدي زمانه دومره ډير شو كه تجارتي معاملي وي، او كه عرفي معاملي خلق پكي گرفتار دي په حرامو طريقو سره (العياذ بالله تعالى)

(۹) عن ابن مسعود رضي الله تعالى عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان الربا وان كثر فان عاقبته تصير الى قل. رواه ابن ماجه والحاكم وقال صحيح الاسناد.

ژباړه: حضرت ابن مسعود رضي الله تعالى عنه نه روايت دي چي رسول الله صلى الله عليه وسلم وفرمائيل: چه سود مال اكر چه ډير زيات شي خو آخر انجام ئي لږتوب دي يعنى په سود مال كي بي بركتي، او ذلت وي.

(۱۰) عن عبادة بن الصامت رضي الله تعالى عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الذهب بالذهب مثلا بمثل والفضة بالفضة مثلا بمثل والتمر بالتمر مثلا بمثل والملح بالملح مثلا بمثل والشعير بالشعير مثلا بمثل فمن زاد او زداد فقد اربى ببيعو الذهب بالفضة كيف شئتم يدايد وبيعوا البر بالتمر كيف شئتم يدايد والشعير بالتمر كيف شئتم يدايد. (۱)

ژباړه: د حضرت عباده بن صامت رضي الله تعالى عنه نه روايت دي چه رسول الله صلى الله عليه وسلم او فرمائيل: د سرو زرو ادلون بدلون له سرو زرو سره برابر و برابر، د سپينو زرو له سپينو سره برابر و برابر، د كجوري له كجوري سره برابر و برابر، او د اوربشوله اوربشوسره برابر و برابر، كوم چا چي زيات وركړل، يائي واخيست، نو د سودكارو بار ئي و كړ. سره زړه سپينو زرو خريد او فروش كوي څنگه موچه خوبه وي، خو لاس په لاس، يعنى

اورم فصل: داسلامی القصاد ۱۲۹ به ارتباط شله هست (۴۰) احادیث

به نقد معامله سره او غنم په کجورو سره خريد او فروش کوي څنگه موچه خوښه وي خو لاس په لاس، او اوربشي په کجورو سره څرنگه موچه خوښه وي خو لاس په لاس، په دی حدیث شریف کی د اشیاء و فروش اصول ذکر دی، دا حنافو په نزد کوم شی کی چه جنس او قدر موجود وی نو زیادت اونسیه دواړه حرام دی، او که یو علت موجود وی، لکه صرف جنس وی او قدر موجود نوی، نو زیادت جائز دي، اونسیه جائزندی.

(۱۱) عن ابی هريرة رضی الله تعالی عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم آتیت لیلة اسری بی علی قوم بطونهم کلبیوت فیها الحیات تری من خارج بطونهم فقلت من هؤلاء یا جبرئیل؟ قال هؤلاء اكلة الربوا. (۱)

ژباړه: د حضرت ابو هريرة رضی الله تعالی عنه نه روایت دی چه رسول الله صلی الله علیه وسلم او فرمائیل: چه دمعراج په شپه زه په داسی قوم باندي راغلم چی نسونه ئی دلویو لویو کورونو غوندي پرسیدلی وو، په هغوی کی ماران وه چه دبهر څخه لیدلی شول، ماله جبرئیل علیه السلام نه پوښتنه وکړه داخل شوک دی؟ هغوی او فرمائیل چه دغه خلق سود خورونکی دی. یعنی دغه د سود خور بد حال، او رسوا کوونکی عذاب دی، الله تعالی دی آمان ترینه را کړی آمین.

(۱۲) عن ابی امامه رضی الله تعالی عنه ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال من شفع لاحد شفاعة فاهدی له هدیة علیها فقبلها فقد اتی بابا عظیما من ابواب الربا. (۲)

ژباړه: د حضرت ابو امامه رضی الله تعالی عنه نه روایت دی چه رسول الله صلی الله علیه وسلم او فرمائیل: چه کوم شخص د بل چالپاره کوم قسم

^۱ ابن ماجه، ص ۱۶۴.

^۲ رواه ابو داود به حواله مشکوة ص ۳۲۶.

سفارش او کړې، بيا هغه سفارش کوونکي ته د هديه په نوم څه شي ورکړې، او سفارش کوونکي هغه قبوله کړې، نو هغه د سود يوه لويه دروازه خلاصه کړه. يعنې سفارش په عوض کې د هديه قبلولو څخه پدې حديث شريف کې ممانعت راغلي دي، اولويه گناه ورته ويلى شوي ده.

(۱۳) عن جابر رضي الله تعالى عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم هدايا الامراء من السحت وعن ثوبان رضي الله تعالى عنه لعن رسول الله صلى الله عليه وسلم الراشي والمرتشي والرائش الذي يمشي بينهما. (۱)

ژباړه: د حضرت جابر رضي الله تعالى عنه نه روايت دي چه رسول الله صلى الله عليه وسلم او فرمايل: چه سرکاري حکامو (مشرانو) لپاره ورکولې شوي هديه او تحفه دارشوت دي. او حضرت ثوبان رضي الله تعالى عنه روايت دي چه رشوت اخستونکي، ورکونکي، او مابين کې جوړونکي ټولوباندي رسول الله صلى الله عليه وسلم لعنت وئيلي دي. يعنې رشوت يو کبيره گناه، حق تلفي، او اخلاقي جرم دي.

(۱۴) عن ابي هريرة رضي الله تعالى عنه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال ان الله حرم الخمر وروثمنها و حرم الميتة وروثمنها و حرم الخنزير وروثمنها. (۲)

ژباړه: د حضرت ابو هريره رضي الله تعالى عنه نه روايت دي چه رسول الله صلى الله عليه وسلم او فرمايل: بلا شبه الله تعالى شراب حرام کړي، او ددې قيمت يې هم حرام کړي، او مرداره ئې حرامه کړيده، او قيمت ئې هم حرام کړيدي، او خنزير ئې حرام کړي دي، او ددې قيمت ئې هم حرام کړيدي. يعنې دغه دريو شېانو استعمال او تجارت د شريعت له نگاه څخه حرام، او مضر دي.

^۱ احکام القرآن للجصاص، ج ۲ ص ۲۳۳

^۲ رواه، ابوداود مسلم، ج ۲ ص ۲۳

اروم فصل: داسلامي اقتصاد ۱۳۱ به ارتباط شلو بهت (۲۰) احاديث
 (۱۵) عن عبدالله بن مسعود رضى الله تعالى عنه قال قال رسول الله صلى
 الله عليه وسلم ان اشد الناس عذابا يوم القيامة المصورون. (۱)

زبارة: د عبدالله بن مسعود رضى الله تعالى عنه نه روايت دى چي رسول الله صلى
 الله عليه وسلم او فرمائيل: بلا شبه هغه خلق به د قيامت په ورځ كې اشد ترين
 عذاب كې وي، چه هغه تصوير جوړونكي دى. يعنى تصوير كشي، فوټو گرافي
 كسب او ددى تجارت يو عظيم جرم، او گناه دى.

(۱۶) عن ابى طلحة رضى الله تعالى عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
 لا تدخل الملائكة بيتا فيه كلب وتساوير. (۲)

زبارة: د حضرت ابو طلحه رضى الله تعالى عنه نه روايت چه رسول الله صلى
 الله عليه وسلم او فرمائيل: چي فرشتي هغه كورته نه داخليږي چه هغه
 كوركي سپي او تصاوير (عكسونه) وي. يعنى دغه كور د الله تعالى خصوصي
 رحمت نه محروم وي، چه هلته سپي، او ذى روحه تصاوير وي.

(۱۷) عن عمر بن الخطاب رضى الله تعالى عنه قال سمعت رسول الله صلى الله
 عليه وسلم يقول لو انكم تتوكلون على الله حق توكله لرزقكم كما يرزق
 الطير تغدو خماسا تروح بطانا. (۳)

زبارة: د حضرت عمر فاروق اعظم رضى الله تعالى عنه نه روايت دى فرمائي چه
 ما د نبى كريم صلى الله عليه وسلم نه اور بدلې دى چي فرمائيل ئي كچېرى
 ناسي داسي توكل چه وكړي لكه څرنګه توكل كېږي، تاسي ته به داسي
 روزي دركولېشي لكه مار غانوته وركولي شي چي صبائي وژي خالي خېټي
 څي، او بېگاه (ماشام) ته ډاګي خېټي واپس شي. يعنى د حرامو څخه اجتناب،

صحیح مسلم، ج ۲ ص ۲۱

صحیح المسلم، ج ۲ ص ۲۰۳

رواه الترمذی وابن ماجه بحواله مشكوة، ج ۳ ص ۱۴۵۸، طبع بيروت

تقوی اختیارول، اوپه الله تعالی توکل کول سره به الله تعالی
دغیبونه دروزی وسپله جوړه کړي.

(۱۸) عن ابی ذررضی الله تعالی عنه عن النبی صلی الله علیه وسلم قال ثلاث لا یظفر الله
الیهم یوم القیامة ولا یزکیهم ولهم عذاب الیم قلت من هم یا رسول الله الله
یحابو او یحسروا. قال المنان والمسبل ازاره والمنفق سلعتة بالحلف الکذاب
ژباړه: دحضرت ابوذررضی الله تعالی عنه نه روایت دی چی آنحضرت صلی
الله علیه وسلم او فرمائل: دری کسان داسی دی چی قیامت په ورځ به الله
تعالی دوی ته نه گوري، راونه به ئی گناهونه پاک کړی، اودوی لره به
دردناک عذاب وی. صحابی فرمائی چه ماوئیل ای دالله تعالی رسوله
داخوک دی؟ یقینا داخل خپل کوشش کی ناکام شول، او هلاک شول
آنحضرت صلی الله علیه وسلم او فرمائل: احسان کولو کی احسان نبودونکی،
او خپل ابزار (لنگ) زورند کونکی، اوپه درغه قسمونو باندي خپل سامان
خرخونکی. یعنی پدی حدیث شریف کی دهغه شخص انجام هم ذکر دی
چه کوم په دروغ باندي دخپل تجارت کاروبار په مخ بیائی.

(۱۹) عن صخر الغامدی رضی الله تعالی عنه قال قال رسول الله صلی الله
علیه وسلم اللهم بارک لامتی فی بکورها قال وکان اذا بعث سرية اوجیثا
بعثهم اول النهار وکان صخر رجلا تاجرا

وکان اذا بعث تجاره بعثهم اول النهار فائری وکثر ماله. (۱)

ژباړه: دحضرت صخر الغامدی رضی الله تعالی عنه نه روایت دی چه رسول
الله صلی الله علیه وسلم او فرمائل: ای الله برکت ورکړه امت ختمه
(کار کونکی) په صبا ئی وختی وتونکولره، او رسول کریم صلی الله

^۱ نسائی، ج ۲ ص ۲۱۱

^۲ رواه الترمذی، ج ۱ ص ۲۳۰

اروم فصل: داسلامی اقتصاد ۱۳۳ به ارتباط غلو بہت (۴۰) احادیث

وسلم دا عادت شریف وه چی کله به نی لوی پاوروکی لهنکرده سه استوله، نوپه اول دورخی کی به نی استوله، او حضرت صخر الغامدی رضی الله تعالی عنه تاجر سړی وه، چه کله به نی خپل تجار استول نو صبائی وختی به نی استول، بیا هغه مالدار کېد و، او خپلو مالوکی زباتوالی کیدو. یعنی تجارت

لپاره بهترین بابرکت وخت صبائی وختی تجارت کاروبار پسی وتل دی.
(۲۰) عن ابی هریر رضی الله تعالی عنه ان رسول الله صلی علیه وسلم قال

اذا ریتم من بیع او ابتاع فی المسجد فقولوا لا اربح الله. (۱)

ژباړه: د حضرت ابو هریر رضی الله تعالی عنه روایت دی چی آنحضرت صلی الله علیه وسلم او فرمائیل: چی کله تاسی څوک مسجد کی وگوری چه تجارت خرید و فروخت کوی، نو ورته او وایی چه الله تعالی دگتته نفعه درنکړی. یعنی په حدیث شریف کی په مسجد کی د تجارت کولو مذمت ذکر دی، البته معتکف لپاره مسجد کی صرف تجارت معاملی گنجائش شته، لیکن مبیعه حاضرول ورته ممنوع دی
(۲۱) عن ابی هریر رضی الله تعالی عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم

لا تباحثوا (۲)

ژباړه: د حضرت ابی هریر رضی الله تعالی عنه نه روایت دی چه آنحضرت صلی الله علیه وسلم او فرمائیل: دلالی مه کوی. یعنی چه یو سړی قیمت کی زباتوالی کوی، خواخستل نی مقصود نوی، او په تجارت کی خو دو که ورکول منع دی، نو داهم یو قسم دو که ده، فلهدا دغسی دلالی هم حرام دی.

(۲۲) عن ابن عمر رضی الله تعالی عنه عن النبی صلی الله علیه وسلم انه قال لا یبیع احدکم علی بیع اخیه حتی یتباع او ینذر. (۳)

رواه، الترمذی، ج ۱ ص ۱۵۸

رواه البخاری، ج ۲ ص ۲۸۷

رواه، البخاری، ج ۲ ص ۲۸۹

ژباړه: د حضرت عبدالله بن عمر رضی الله تعالی عنهما له روایت دی چه آنحضرت صلی الله علیه وسلم نه مروی دی هغه مبارک وفرمائیل: چی تاسو کی کوم شخص هم دخپل ورور په معامله بانندی تر هغه وخته پوری معامله مه کوی، چه نی واخلی او بانی پرېږدی. یعنی په تجارت کی هر قسم دوکه فریب ممنوع دی، لکه ورته ووايي چه هغه خپار شرط ختم کړو نوزه به یی سمدستی درڅخه واخلم، او یا ورته او وائی چه زه نی په زیات قیمت درنه اخلم، او یا اخستونکی ته او وائی چه داشان شی زه په کم قیمت درکوم، اودده څخه یی مه اخله او ادسی نور صورتونه.

(۲۳) عن ابی هریره رضی الله تعالی عنه ان رسول الله صلی الله علیه وسلم مر علی صبره من طعام فادخل یده فیها (فناالت) اصابعه بللا فقال باصاحب الطعام ما هذا قال اصباته السماء بارسول الله قال افلا جعلته فوق الطعام حتی یراه الناس ثم قال من غش فلیس منا. (۱)

ژباړه: د حضرت ابی هریره رضی الله تعالی عنه نه روایت دی چه رسول الله صلی الله علیه وسلم د غنمو په یوه ډیری بانندی تېریدلو په هغه کی نی خپل لاس دننه کړو، نو آنحضرت صلی الله علیه وسلم گوتی مبارکی لنډی شوی، پس رسول کریم صلی الله علیه وسلم غنمو واله ته او وئیل داڅه دی؟ هغه او وئیل ای دالله تعالی پاکه رسوله! باران لنډه کړیدی، نورسول الله صلی الله علیه وسلم او فرمائیل: نوبیائی ولی د غنمو د پاسه طرف بانندی نه گړخوی، ترڅو چه خلق نی وگوری، پس آنحضرت صلی الله علیه وسلم وفرمائیل: چه څوک دوکه کوی هغه زمونږ څخه ندی، یعنی دعیب دارشی تجارت کول، جعلی شی د اصلی شی په نامه خرڅول، اوبنه اوبدشی گډول، اود هوکه کولو پحقله ممانعت اوسخت وعید پدی مبارک حدیث شریف کی ذکر دی.

(۲۴) عن عبدالله بن فضلة رضى الله تعالى عنه قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول لا يحتكر الا خاطئى. (۱)

ژباړه: حضرت عبدالله بن فضله رضى الله تعالى عنه فرمائي: چه ماد آنحضرت صلى الله عليه وسلم نه اوريدلى دى چه فرمائيل به ئى چى ذخيره اندوزى نه كوي مگر گناه كار. يعنى خواراكي شېانو كى دتجارو ذخيره اندوزى حرامه ده، او دگناهونو ذريغه ده، دضرورت په وخت كى، چه خلق ورته محتاج وي.

(۲۵) عن ابي هريرة رضى الله تعالى عنه عن النبي صلى الله عليه وسلم قال باتى على الناس زمان لا يبالي المرء ما اخذ منه امن الحلال امن الحرام. (۲)

ژباړه: دحضرت ابي هريره رضى الله تعالى عنه نه روايت دى چى آنحضرت صلى الله عليه وسلم نه مروى دى چى او فرمائيل: چه خلقو باندى به داسى زمانه راشى چه كوم سړى كسب كوي، دا پرواه به نه كوي چه دا حلال مال دى، او كه حرام مال دى. يعنى دغه پيشگوئى مباركه پدى زمانى باندى صادق ده، له داسلامان بايد فكر مندشى چه حرامو څخه ځان محفوظ كړى.

(۲۶) عن انس رضى الله تعالى عنه قال قلت يا رسول الله اجعلنى مستجاب الدعوة قال بانس اطلب كسبك تستجاب دعوتك فان الرجل ليرفع الى فيه القمه من حرام فلا تستجاب له دعوته اربعين يوم. (۳)

ژباړه: دحضرت انس رضى الله تعالى عنه نه روايت دى فرمائي چه ما او ويل اى دالله پاك رسوله! ما مستجاب الدعوة (چه دعائى قبلېږى) وگرځوه، آنحضرت صلى الله عليه وسلم او فرمائيل: اى انس! خپل كسب لره پاكېزه كړه، نو ستا دعاگانى به قبلېږى، كله چه سړى خپلى خولى ته دحرامو لقمه (په) پوسى، نو څلوېښت ورځو پورى دده دعاگانى نه قبلېږى. يعنى ددينه

رواه ابوداود، ج ۲ ص ۱۳۲

رواه البخارى، ج ۱ ص ۲۷۶

عمدة القارى صحيح البخارى، ج ۱۱ ص ۱۷۴

معلومه شوه چه حرام مال په وجه د انسان دعاګالی نه قبلېږي، سره لدینه چه مونږ زیات محتاج یو، فلهدا د حرامو څخه پر هېز لازمي پکار دی.

(۲۷) عن انس رضی الله تعالی عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اذا اقرض احدکم قرضاً فاهدی الیه او حمله علی الدابة فلا یرکبه ولا یقبلها الا ان یکون جری بینه و بینه قبل ذلک. (۱)

ژباړه: د حضرت انس رضی الله تعالی عنه روایت دی چه آنحضرت صلی الله علیه وسلم او فرمائیل: چی تاسی کی کوم یو کوم شخص ته قرض ورکړی، نو که مقروض کوم شی لره هدیه ورکړه، یائی پخپله سواری سپرولو، نو قرض ورکونکی دپه هغه سواری مه کېږي، اونه دهغه هدیه قبولوي، البته که مخکی ددوی په مابین کی دامعامله جاری وه، نوبیا څه باک نشته چه هدیه قبوله کړي. یعنی داهم درشوت یوه نوعه ده، اورشوت شریعت اسلامیه کی یو عظیم جرم دی، لهدا په هر مسلمان فرض اولازمی ده، چه حتی الامکان دا کوشش وکړي، چه بغیر درشوت نه خپل کارونه انجام، او اخلاص کړي.

(۲۸) عن قیس بن ابی عرزه رضی الله تعالی عنه قال خرج علينا رسول الله صلی الله علیه وسلم نحن نسمة السماسرة فقال يا معشر التجار ان الشيطان والاثم يحضران البيع فثوبوا ببعکم بالصدقة. (۲)

ژباړه: د حضرت قیس بن ابی عرزه رضی الله تعالی عنه نه روایت دی چی آنحضرت صلی الله علیه وسلم مونږ ته راغلو، او مونږ دلال مقرر کولو، پس آنحضرت صلی الله علیه وسلم او فرمائیل: ای تاجرانو! بیشکه شیطان او دگناه (خیال) خرید و فروش وقت کی حاضرېږي، نو خپل تجارت صدقی سره خلط ملط کړي. یعنی انسان باندي تجارت سره سره باند د غرباء، مساکینو، اوفی سبیل

^۱ روه ابن ماجه بحواله معارف الحدیث، ج ۷ ص ۱۱۱

^۲ رواه السنن الکبری، ج ۵ ص ۲۶۶

۱۳۷ به ارتباط نگاه بست (۳۰) احادیث
 ازوم فصل: اسلامی اقتصاد
 الله مخلوق خدمت، اواعالت وکری ، چه یوه خوالی تجارت بابرکت شی، اوبله خوالی دمهلک مرض دحب مال خخه محفوظ شی.

(۲۹) عن انس رضی الله تعالی عنه قال قال غلالسعر علی عهدالنبی صلی الله علیه وسلم فقالوا یا رسول الله سعرنا فقال النبی صلی الله علیه وسلم ان الله هو المسعر القابض الباسط الرازق وانی لارجوان القی ربی ولیس احد منکم یطلبنی بمظلمة بدم ولا مال (۱)

ژباړه: دحضرت انس رضی الله تعالی نه روایت دی چی آنحضرت صلی الله علیه وسلم په دور مبارک کی دشبانو قیمتونه لوړ شول، نو خلعو آنحضرت صلی الله علیه وسلم ته او وئیل ای دا الله تعالی رسوله! مونږ ته قیمت مقرر کړه ، آنحضرت صلی الله علیه وسلم او فرمائیل: چه بی شکه الله تعالی رزق تنگولو وواله، رزق پراخه کولو وواله دي، او ما دا امیدده چه مارب چه کومه فیصله خما په زړه کی القاء کوي، نو مالپاره به داسی نه کېږی چه ما خخه دکومی وینی (قتل) بدله طلب کړي، اونه دمال بدله طلب وکړی. یعنی بعضی علماء دحدیث په ظاهر باندی حمل کړی او بعضی علماء فرمایي: چه امام او حاکم رخت لپاره لازمی ده چه دهرشی قیمت مقرر کړی، چه خلق دظلم زبانی اود تکلیف نه محفوظ شی.

(۳۰) ان ابهریره رضی الله تعالی عنه قال سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم یقول الحلف منفعه للسلعة ممحقة للبركة. (۲)

ژباړه: حضرت ابوهریره رضی الله تعالی عنه فرمائی: چه آنحضرت صلی الله علیه وسلم خخه می اوریدلی دی چی فرمائیل ئی چه قسمونه دسامان (خرخولو لپاره) نفعمند دی، لېکن برکت لره ختمولو وواله دی. یعنی په دروغه قسمونه

رواه سنن الدارمی، ج ۲ ص ۳۲۴

رواه ابوداود، ص ۱۱۷

کول دومره منحوس دی، چه تجارت برکت ورسره لاهو کېږي.
 (۳۱) عن عائشة رضی الله تعالی عنها قالت لمانزلت آيات سورة البقره من
 اخرها خرج النبي صلى الله عليه وسلم فقال حرمت التجارة في الخمر. (۱)
 ژباړه: دحضرت عائشه صديقه رضی الله تعالی عنها نه روایت دی فرمائی:
 چي کله سورت بقره آيات نازل شو نو آنحضرت صلی الله علیه وسلم بهرته
 تشریف روارو، او فرمائیل ئی چي داشرابو تجارت حرام شویدی. یعنی پدی
 حدیث شریف کی داشرابو تجارت ممانعت مقصوددی، چه شرابو څکل په
 لهولعب گمراهو کی گرفتارهم ده، نو تجارت ئی ددی ذریعه جوړېږي.

(۳۲) عن ابن عمر رضی الله تعالی عنهما قال قال رسول الله صلی الله علیه
 وسلم کل مسکر خمر وکل مسکر حرام. (۲)

ژباړه: د عبدالله بن عمر رضی الله تعالی عنهما نه روایت دی چي آنحضرت
 صلی الله علیه وسلم او فرمائیل: هر نشه راوستونکی شی شراب دی،
 او هر نشه راوستونکی شی حرام دی. یعنی دی حدیث شریف نه دهم
 معلومېږي چي دبنگو، چرسو، او افیومیو خوارک حرام دی، ځکه داعقل
 خرابوی، او انسان دالله تعالی ذکر، او مانځه نه بند وي.

(۳۳) عن عائشة رضی الله تعالی عنها قالت: سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم
 يقول کل مسکر حرام وما اسکر منه الفرق فملا الکف منه حرام. (۳)

ژباړه: ام المومنین عائشه رضی الله تعالی عنها فرمائی: مادر رسول الله صلی الله علیه
 وسلم نه اوریدل چه فرمائیل ئی هر نشه وارشی حرام دی، او کوم شی چه
 دښپرو کیلو په اندازه استعمالولو سره نشه پیداو کوی، نو دپوه ورغوی په

^۱ رواه البخاری، ج ۱ ص ۲۹۷

^۲ رواه مسلم، ص ۱۶۷

^۳ رواه ابوداؤد، ج ۲ ص ۱۶۳

اوروم فصل: داسلامي القصاد ۱۳۹ به اوقات شلوغيت (۳۰) احاديث

اندازه استعمال هم حرام دى. يعنى په شرابو او جوارى كې به خه فائده شته، ليكن كله چه ددى تاوان ډير، او فائده يې كمه ده، الله رب العزة دا حرام او څرخول، نولسوار، سگريټ، چرس، اوافيم وغيره خودشرنه ډگ دى او فائده هم نلري، نوځان ترلري سائل په طريقه اولي سره پكاردى، او خپل ځان او اولاد او معاشره ددى قسم آفتونه لري سائل ضرورى دى.

(۳۴) عن ابن عمر رضى الله تعالى عنهما قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لعن الله الخمر وشاربها وساقياها وبائعها ومبتاعها وعاصرها ومعتصرها وحاملها والمحولة اليه. (۱)

ژباړه: د عبدالله بن عمر رضى الله تعالى عنهما نه روايت دى چه آنحضرت صلى الله عليه وسلم وفرمائيل: چي الله تعالى په شرابو ددهغي په څښونكي، اودهغي په څښوونكي، اودهغي په خرڅونكي، اودچا دپاره چه داخرڅولى شى، اودهغي په جوړونكي، اودهغي په نچوړونكي، اودهغي په وړونكي، اوچاله چي وړل كيږي، په هغه باندي لعنت فرمائيلې دى. يعنى په شرابو كې ددنيا ذلت سره مخامخ كيدل دى، لكه بغض، حسد، اودوشمني وغيره، اود آخرت رسوائى خودپيره زياته ده، نواجتناب ترينه ضرورى دي.

(۳۵) عن جابر رضى الله تعالى عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم

ان الله حرم بيع الخمر والميتة والخنزير والاصنام. (۲)

ژباړه: د جابر رضى الله تعالى عنه نه روايت دى چه آنحضرت صلى الله عليه وسلم اوفرمائيل: بيشكه الله تعالى شراب، مرداره، خنزير، اوبتان اخستل او څرخول ټول حرام كړيدى. يعنى چي كوم شى نه فائده اخستل الله تعالى

۱ رواه ابوداود، ج ۲ ص ۱۲۱

۲ رواه البخارى، ج ۱ ص ۲۹۸

نوي حلال کړي، دهغي خرڅول اودهغي پيسي خوړل جائزه دي، اوعلامه قرطبي رحمه الله تعالى فرمايلي دي: چي په دي کي دليل دي پدي خبره چه دگندگي، اودنورونجاساتو، دغه شان دهغه څه چه شرعاحلال نوي، نوخرڅول اخستل يي جائزندي.

(۳۶) عن ابي الدرداء رضي الله تعالى عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان الله انزل الداء وانزل له الدواء وجعل لكل داء دواء ولا تداوا بحرام. (۱)

ژباړه: دحضرت ابودرداء رضي الله تعالى عنه نه روايت دي چه آنحضرت صلى الله عليه وسلم او فرمايل: الله رب العزت بيماري هم پيدا کړيده، او هغه دهرې بيماري دپاره دوايي مقررې کړي ده، نوتاسوپه حراموباندي دوايي مه کوي. يعني بغيردحالت اضطراري نه چه بل شي موجودنوي، پس که دمرگي يقيني خطرې نوي، نوپه حراموباندي تداوي کول جائزندي.

(۳۷) عن جابر رضي الله تعالى عنه قال اتيت النبي صلى الله عليه وسلم وهو في المجلس فقال صل ركعتين وكان لي عليه دين فقضاني وزادني. (۲)

ژباړه: له حضرت جابري رضي الله تعالى عنه نه روايت دي فرمائي: زه نبي كريم صلى الله عليه وسلم ته راغلم، اودي په مجلس کي تشریف فرماوه، پس اوئي فرمايل: دوه رکعة مونځ وکړه، ماپه هغه باندي قرض وه پس ادائي کړومالره هغه، اوزيادتي ئي هم راکړو. يعني دقرض اداء په احسنه طريقه سره پکارده، البته کچيري زياتوالي شرط کړي، اوياعرف په دي زياتوالي باندي وي، بياجائز ندي ځکه معروف کالمشروط وي.

^۱ رواه ابوداد، ج ۲ ص ۳۸۵

^۲ رواه، البخاري ص ۲۳۹۴ فی الاستقراض

اروم فصل: اسلامی الفصاد
 ۱۴۱
 ۴۰۱
 ۳۸) عن ابی هريرة رضی اللہ تعالیٰ عنہ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال قال اللہ تعالیٰ ثلاثة انا خصمهم يوم القيامة رجل اعطى بي لم غدر ورجل باع حرا فاكل ثمنه ورجل استاجر اجيرا فاستوفى منه ولم يعطه اجره. (۱)

زبارة: حضرت ابی هريرة رضی اللہ تعالیٰ نہ روایت دی چه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم خنجه مروی دی اوبی فرمائل: چه اللہ پاک فرمائی: زه به دریو کسانو سره دقیامت په ورخ خصم په جنگ وم، یوهغه دی چه مابه نامه وعده وکړی بیا غداري وکړی، اوهغه سپری چه اصل (حُر) خرخ کړی بیانی پیسی اوخوری، او هغه سپری چه مزدوری دمزدور خنجه پوره واخلي اوهغه ته اجرت ورنکړی. یعنی دغه دري ډیرلوی جرمونه دی، پکاردی چه هر مسلمان ترینه خان وساتی.

۳۹) عن ابی سعید الخدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نهی عن استجار الا جیر، یعنی حتی یبین له اجره. (۲)

زبارة: حضرت ابی سعید الخدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ نه روایت دی چه رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم دمزدور داجاری نیولونه منع فرمائیلی ده، یعنی چه اجرت ورته معلوم نشی. یعنی داجاری دصحت لپاره دوه شرط دی یوداچه منافع معلوم وی، دوهم داچه اجرت معلوم وی.

رواه، البخاری، ص ۲۳۷

رواه، سنن البیهقی، ج ۶ ص ۱۲۰

(۴۰) عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من ابتاع طعاما فلا يبعه حتى يقبضه. (۱)

ژباړه: د حضرت عبدالله بن عباس رضي الله تعالى عنهما نه روايت دى فرماني چي آنحضرت صلى الله عليه وسلم او فرمائيل: چاچي طعام واخستو، پس مه د خرخوي ترخوپوري ئي چي قبض كړي نوي. يعنى په مثل د طعام منقولي شيان هم دى، خكه چي قريب دى چي د اهلاک شي، نوبيا به بيهه فسخه شي، نوداد دوکي صورت کيږي، او شريعت غراء کي د دوکي کولونه منعه راغلي ده. پای والله تعالى اعلم بالصواب.

دالله تعالى په مرسته او توفيق سره درجب المرجب مبارکي مياشتي په اته ويستم ۲۸_۱۴۲۷_هـ د چارشنبی په ورځ پای ته ورسیده. ربنا تقبل منا انک انت السميع العليم. الهی کل ما طلبته وکتبه ما اردت به الأوجهک ومرضاتک، فان اصبت فبتوفیقک اصبت فاقبله من هذا المسکين الباس الفقير بفضلك، وان اخطات فتجاوز عني بفضلك ورحمتک يا علم بذات الصدور ووفقنا للعمل الصالح والقول المصيب، وان يجعل لنا ذخيرة اللهم اغفر لي ولوالدي والاساذي ولسائر المسلمين امين. بجاه سيد المرسلين صلى الله عليه وسلم

بنده گل الرحمن نقشبندي مهاجر مدني عفي عنه الباري.

زبدة المسائل

تصنيفات: الدكتور العلامة ابو الحبيب گل الرحمن المهاجر المدني الحفاني الأريوي مذهبه العالي
 تفسير الأريوي المسمى زبدة التفاسير الجلد الأول، والثاني، والثالث، والأخير

- ١- تفسير العقائد شرح شرح العقائد ...
- ٢- معراج العقائد شرح شرح العقائد ...
- ٣- معراج الواعظين پشتو ...
- ٤- معراج الواعظين فارسي ...
- ٥- معراج الاسلام پشتو ...
- ٦- معراج الاسلام فارسي سياست و حکومت ...
- ٧- معراج الاصول شرح حسامي ...
- ٨- معراج المنطق ...
- ٩- معراج التصوف ...
- ١٠- معراج الحجاج والمعتمرين پشتو ...
- ١١- معراج الحجاج والمعتمرين فارسي ...
- ١٢- معراج الحجاج والمعتمرين أردو ...
- ١٣- معراج الصرف ...
- ١٤- معراج النحو ...
- ١٥- الرسالة الحفانية العالية ...
- ١٦- زبدة المسائل في توضيح مسائل البيوع پشتو ...
- ١٧- زبدة الصلوات على اشرف المخلوقات ...
- ١٨- تنوير المسلمين في حكم تلفيزون پشتو ...
- ١٩- تنوير المسلمين في حكم تلفيزون فارسي ...
- ٢٠- سيف القهار على المستهزئين الكفار پشتو ...
- ٢١- سيف القهار على المستهزئين الكفار فارسي ...
- ٢٢- دگستاخ رسول په وړاندي د مسلمانانو مسؤليت ...
- ٢٣- مرام نامه ...
- ٢٤- ملفوظات ...
- ٢٥- زبدة النحو شرح هداية النحو ...
- ٢٦- زاد المسافر پشتو ...
- ٢٧- آداب الزيارة المشاهد في المدينة المنورة

ضروري خبرتيا: کوسټونکي که ته هم نوي کتابونه کړي او تر اوسه نوي PDF شوي، نو سکن يې کړئ د ثواب په نيت او موږ ته يې را واستوه چي موږ يې تر ژر هاوو مسلمانانو ورسوو، او سکن کول دومره سخت کارنده. يا هم ليکوال ياست که مو ناول يا هم هر قسم کتابونه ليکلي وي، په خپرولو کي موږ مرسته در سره کوو، ان شاء الله چي تاسو اجازه را کړئ موږ به يې نشر کړو که په هره ژبه او هره برخه کي وي، تر څو موږ يې له نورو مسلمانانو سره شريک کړو او په ثواب کي سره شريک شو، او ما سره په دغه لاندې نمبر په ټليگرام کي رابطه کولای شئ: +93789212634

يادونه: ورورنو / خویندو که تر اوسه هم زموږ سره نه ياست يو ځای شوي نو په فيسبوک او ټليگرام کي مو په سرچ سره پيدا کولای شئ يواځي په پښتو يا هم انگليسي رحمانی کتابتون وليکئ پيدا به مو کړئ او په ټليگرام کي مو د لاندې بڼي او يوزر نيم يا سرچ سره پيدا کړئ او که په واټسپ کي له موږ سره يوځای کيري په هغه پورته نمبر رابطه وکړئ چي ليڼک در کرم او بل خپل ملگري مو هم در سره راولئ، زموږ د کتابتون کورنۍ تاسو ته سترگي په لاره ده نو ژر له دغي خوږي کورنۍ سره يوځای شئ!

Join



 @RahmaniLibrary1

 @PaktekawalAfghan

زموڼر چاپ شوي کتابونه



مکتبہ مکنی
کامی کچه بکھ ضلع هنگو
۰۳۳۲۱۸۷۵۶۵

